विक्रम संवत् 2080 ■ वैशाख/ज्येष्ठ मास(03) ■ 01 मई 2023 ■ मूल्य : 23 रु.

चरैवेति

चरैवेति... चरैवेति... चरैवेति...

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2021-23, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 10 एवं 15 तारीख

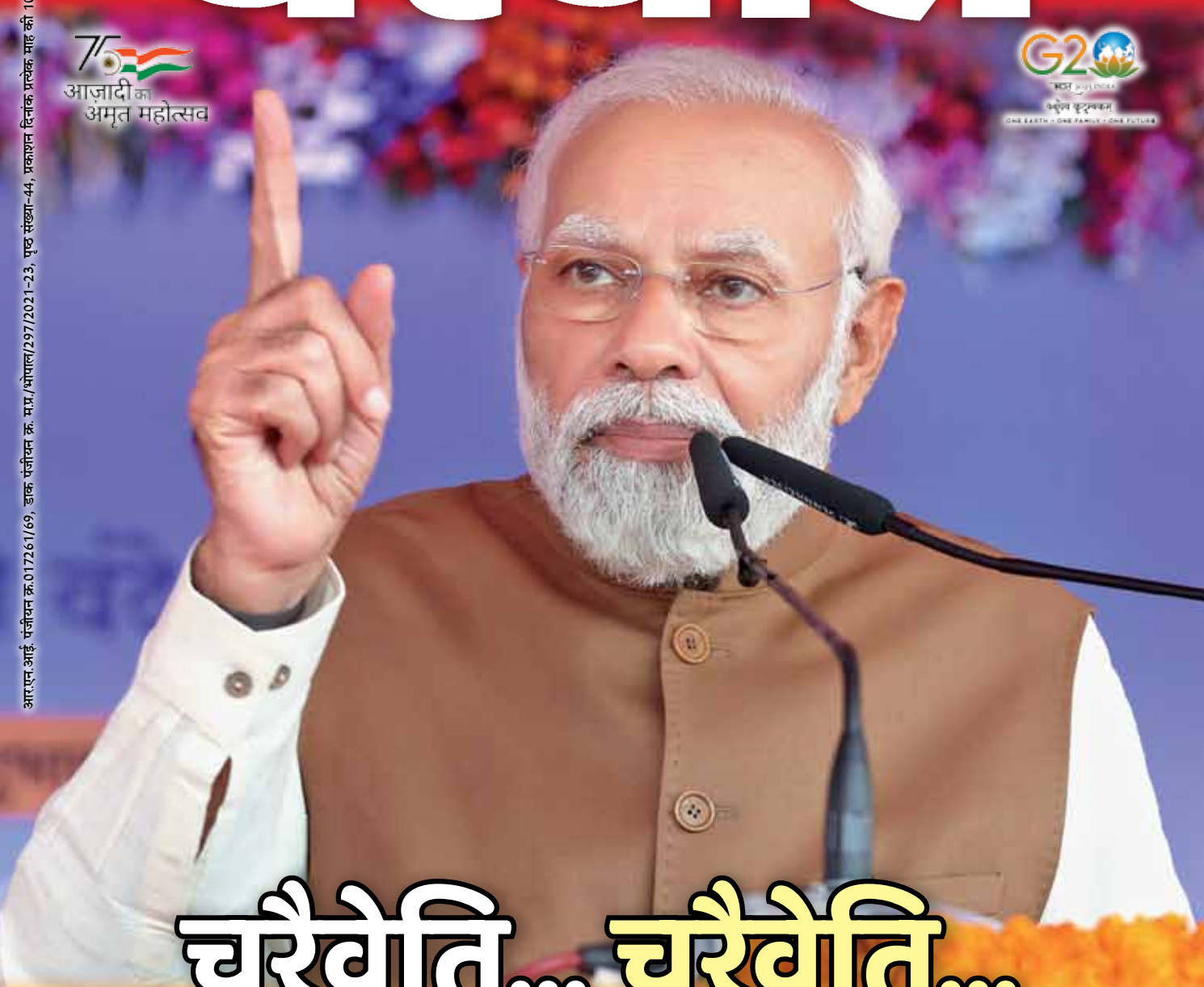

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने राष्ट्रपति भवन में नागरिक अलंकरण समारोह में भाग लिया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने ग्लोबल बुद्धिस्ट समिट 2023 में भाग लिया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने डॉ. बी. आर. अंबेडकर जी की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने भारत रत्न बाबा साहेब भीम राव अम्बेडकर जी की जयंती पर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की।

भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने भाजपा के 44वें स्थापना दिवस पर डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी व पं. दीनदयाल जी की प्रतिमाओं पर पुष्पांजली अर्पित की।

गृहमंत्री श्री अमित शाह जी ने बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर, भगवान बिरसा मुंडा और संथाल क्रांति के नायकों, सिद्धो, कान्हो, चांद और भैरव की प्रतिमाओं पर पुष्पांजलि अर्पित की।

गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने सालंगपुर धाम में हनुमान जी की 54 फीट ऊंची प्रतिमा का अनावरण किया।

भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने मेगा वॉल राइटिंग का शुभारंभ किया।

अनुक्रमणिका

संपादकीय ▶ संजय गोविन्द खोचे 04

- विश्व गुरू की ओर बढ़ते कदम

कवर स्टोरी : ▶ मन की बात 05

- चरैवेति... चरैवेति... चरैवेति...

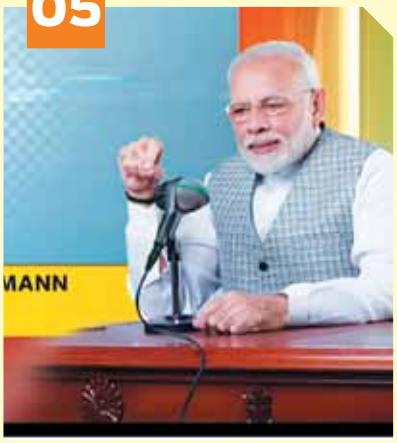

- **'मन की बात' 100 वां संस्करण :** 11
'मन की बात' जन-जन की बात शिवराज सिंह चौहान...
- **'मन की बात' 100 वां संस्करण :** 13
मन की बात कार्यक्रम से समाज में सकारात्मक बदलाव आया- विष्णुदत्त शर्मा...
- **'मन की बात' 100 करोड़ श्रोता :** 14
'मन की बात' 100 करोड़ से ज्यादा श्रोताओं तक...
- **'मन की बात' :** 15
मन को मन से जोड़ती आवाज है 'मन की बात'.
- **अनंत अवसरों की संभावनाएं :** 17
भारत में नई सोच, नई अप्रोच...
- **मोदी है तो मुमकिन है :** 20
राष्ट्रीय रोजगार मेला हमारे कमिटमेंट का प्रमाण...
प्रधानमंत्री जी जो कहते हैं वो करके दिखाते हैं : विष्णुदत्त शर्मा...
- **जीवन में खुशहाली :** 24
लाड़ली बहना योजना कर्मकांड नहीं सामाजिक क्रांति का शंखनाद - मुख्यमंत्री...
- **रोजगार मेला :** 26
22,400 से ज्यादा शिक्षकों को मिली नियुक्ति...
- **फर्क साफ है :** 28
रीवा की धरती शूरवीरों की है, देश के लिए मर-मिटने वालों की है...
- **महिला सशक्तिकरण :** 31
महिलाओं को सशक्त बनाना प्राथमिकता...
- **बूथ सशक्तिकरण अभियान :** 33
सांसद, विधायकों की भूमिका महत्वपूर्ण...
- **नये आयाम :** 35
विकास, सुशासन के नये आयाम शिवराज सिंह चौहान
- **जयंती :** 37
मेवाड़ के अपराजित योद्धा महाराणा प्रताप...
- **जयंती :** 38
सच्चे राष्ट्रवाद की ज्योति प्रज्जवलित की महान वीर सावरकर ने...
- **जयंती :** 39
लोकमाता महारानी अहिल्याबाई...
- **जयंती :** 40
वीर योद्धा छत्रसाल...
- **विचार प्रवाह :** 41
संस्कृति राष्ट्र की आत्मा है

मुख्य व्रत-त्यौहार

1. मोहिनी एकादशी व्रत 3. प्रदोष व्रत 4. नरसिंह चतुर्दशी 5. स्नानदान व्रत पूर्णिमा, वैशाखी, बुद्ध पूर्णिमा 8. गणेश चतुर्थी व्रत 15. अचला / अपरा एकादशी व्रत 17. प्रदोष व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत 19. वट सावित्री अमावस्या व्रत, स्नानदान श्राद्ध अमावस्या 21. चन्द्रदर्शन 22. रम्भा तीज व्रत 23. अं. विनायकी चतुर्थी व्रत 29. महेश नवमी 30. गंगा दशहरा 31. निर्लजा एकादशी व्रत

मुख्य जयंती-दिवस

1. महाराष्ट्र, गुजरात स्थापना दिवस 5. गुरू गोरखनाथ प्रगटन दिवस, महर्षि भृगु एवं टेकचंद म. जयंती 7. मीना समाज दिवस 15. अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस 17. विश्व दूरसंचार दिवस 22. राजा राममोहन राय जयंती 30. महर्षि गालव अवतरण दिवस 31. विश्व धूम्रपान निरोधक दिवस

वर्ष-55, अंक : 03, भोपाल, मई 2023

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

श्रेष्ठ आदर्शों की ऐसी अखण्ड संस्कार परंपरा से ही समाज जीवित व एकात्म रहकर अपनी प्रगति करता है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय

अध्यक्ष
अजय प्रताप सिंह

उपाध्यक्ष
प्रशांत हर्णे

सचिव, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
संजय गोविंद खोचे*

कोषाध्यक्ष
कैलाश सोनी

प्रभारी वैचारिकी
डॉ. दीपक विजयवर्गीय

सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया
मोबा. नं. 09425303801

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये

*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

विश्व गुरू की ओर बढ़ते कदम

'मन की बात' का इतना ज्यादा सफल होने का कारण साफ है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का निर्णायक और शक्तिशाली नेतृत्व का श्रोताओं के साथ सीधा और मन से मन का जुड़ाव। भारत की जनता प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को अपना मार्गदर्शक, सहानुभूति पूर्ण और संवेदनशील नेता मानती है।

30 अप्रैल 2023, दिन रविवार समय प्रातः 11 बजे, ऐतिहासिक क्षण व दिन रहा। इस दिन भारत के प्रधानमंत्री और विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता श्री नरेन्द्र मोदी जी ने ''मन की बात'' के प्रसारण के अनवरत 100 एपिसोड पूरे किये। यह एक ऐसा शतक है, जिसने भारत के जन मानस की सोच में लगातार 03 अक्टूबर 2014 से सकारात्मक विचारों का परिवर्तन किया है।

जब से 'मन की बात' का प्रसारण शुरू हुआ है, तब से शनैः शनैः भारतीय समाज में परिवर्तन का दौर आ रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के द्वारा मन की बात का प्रस्तुतिकरण ऐसा आभास देता है जैसे कि यह करोड़ों भारतीयों की भावनाओं का प्रकटीकरण है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की शैली और अपनापन जन-मानस को अभिभूत कर देता है। ऐसा लगता है जैसे कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी घर के बड़े बुजुर्गों की तरह हर परिवार का मार्गदर्शन कर रहे हैं और सारे के सारे देशवासियों की उन्हें चिन्ता है।

इन्ही सब बातों को लेकर जनता के बीच में मन की बात एक पर्व की तरह से बन गया है। जिसका इन्तजार सारे देशवासियों को रहता है। 'मन की बात' से पूरे देश के कोने-कोने से लोग जुड़े। हर आयु और समाज का हर वर्ग 'मन की बात' को धीरे-धीरे अपनी बात, अपनेपन की बात और अपने दिल से निकली बात मानने लगा है। 'मन की बात' को वृहद रूप में देखें तो इसने भारत में सकारात्मक सामाजिक क्रांति का अनूठा उदाहरण विश्व के सामने पेश किया है। मन की बात के द्वारा बड़े-बड़े सामाजिक संदेश समाज के अन्तिम वर्ग तक आसानी से पहुँच गये। उसी का परिणाम हुआ कि स्वच्छ भारत आंदोलन, खादी का उन्नयन, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ का सफल होना, पर्यावरण संरक्षण, आजादी का अमृत महोत्सव, कोरोना के खिलाफ लड़ाई, ऐसी न जाने कितनी सारी उपलब्धियों का श्रेय भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की मन की बात को जाता है। मन की बात आज सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं रहा, यह जन आंदोलन है। जिसके प्रणेता माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की 'मन की बात' ने लोकप्रियता के नए आयाम स्थापित किये हैं। इसनें नेपथ्य में चले गये रेडियो को नया जीवन दिया है। इसी बात को ध्यान में रख कर आईआईएम रोहतक के द्वारा बड़ा ही दिलचस्प और सार्थक सर्वे हुआ। यह सर्वे साफ-साफ दर्शाता है कि 'मन की बात' का प्रभाव भारतीय जन मानस में बहुत ही ज्यादा गहरा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के 'मन की बात' कार्यक्रम से भारत की लगभग 96 प्रतिशत जनता परिचित है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मन की बात को लगभग 100 करोड़ लोग कम से कम एक बार सुन चुके हैं। गर्व व गौरव का विषय है कि 23 करोड़ लोग नियमित रूप से 'मन की बात' सुनते हैं। इतना ही नहीं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के 'मन की बात' के कार्यक्रम को 41 करोड़ से ज्यादा लोग कुछ अन्तराल के बाद इसे सुनते हैं। इस रिपोर्ट का उद्देश्य बिल्कुल साफ है। यह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मन की बात के कार्यक्रम की अपार लोकप्रियता के कारण को जानने का प्रयास था।

'मन की बात' का इतना ज्यादा सफल होने का कारण साफ है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का निर्णायक और शक्तिशाली नेतृत्व का श्रोताओं के साथ सीधा और मन से मन का जुड़ाव। भारत की जनता प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को अपना मार्गदर्शक, सहानुभूति पूर्ण और संवेदनशील नेता मानती है। मन की बात के द्वारा आज भारत के नागरिक सरकार के कामकाज के प्रति ज्यादा जागरूक और संवेदनशील हो गये हैं। 73 प्रतिशत से ज्यादा लोग भारत में सकारात्मक आशा से भरे हुए हैं और यह महसूस करते हैं कि भारत तीव्र गति से विकास कर रहा है, पूरा विश्वास है की प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत **चरैवेति-चरैवेति-चरैवैति** के मूल मंत्र का पालन करते हुए विश्व गुरू बनने की ओर बढ़ चला है। म. प्र. में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी के नेतृत्व एवं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मार्गदर्शन में विकास के नए-नए कार्य किये जा रहे हैं। म. प्र. को भोपाल व दिल्ली के बीच नई वन्दे भारत एक्सप्रेस रेल की सौगात भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने दी। यह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत के युवाओं के सामर्थ्य, कौशल और आत्मविश्वास का प्रतीक है।

म. प्र. को मिली यह वन्दे भारत एक्सप्रेस निश्चित ही रोजगार और पर्यटन के नए अवसर और राहें उपलब्ध करायेगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में रेल्वे में विकास के नए रिकार्ड बनाए हैं। मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने के बाद भाजपा की सरकार का लगातार यह प्रयास रहा है कि भारतीय रेल दुनिया की सबसे अच्छे रेल नेटवर्क में शामिल हो।

म. प्र. भी विकास के मामले में केन्द्र के साथ कदम से कदम मिला कर मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी के नेतृत्व में तेजी से चल रहा है। उद्योग हो या खेती म. प्र. का सामर्थ्य और विश्वास भारत के सामर्थ्य और विश्वास को और ज्यादा बढ़ा रहा है। वो दिन गये जब म. प्र. को बीमारू राज्यों की श्रेणी में रखा जाता था। आज म. प्र. का प्रदर्शन विकास के मामले में प्रशंसा के योग्य है। आज म. प्र. गरीबों के घर बनाने में बहुत आगे है। हर घर जल पहुँचाने के मामले में भी म.प्र. अग्रणी राज्यों में है। फसलों के उत्पादन में भी म.प्र. के किसान नए नए रिकार्ड बना रहे हैं। इसके अलावा भी सरकारी सेवा में युवाओं को भरपूर रोजगार के अवसर दिये जा रहे हैं। आने वाले वर्षों में डबल इंजन की यह सरकार और आने वाले डबल इंजन की भाजपा सरकार देश और प्रदेश को विकास के मार्ग पर और तेजी से ले जायेंगे। ▪

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

चरैवेति... चरैवेति... चरैवेति...

*** 'मन की बात' स्व से समिष्टि की यात्रा है। * 'मन की बात' अहम् से वयम् की यात्रा है।**

*** यह तो मैं नहीं तू ही इसकी संस्कार साधना है।**

3 अक्टूबर, 2014, विजय दशमी का वो पर्व था और हम सबने मिलकर विजय दशमी के दिन "मन की बात' की यात्रा शुरू की थी। विजय दशमी यानी बुराई पर अच्छाई की जीत का पर्व।

'मन की बात' भी देशवासियों की अच्छाइयों का, सकारात्मकता का, एक अनोखा पर्व बन गया है। एक ऐसा पर्व जो हर महीने आता है, जिसका इंतजार हम सभी को होता है। हम इसमें positivity को celebrate करते हैं। हम इसमें people's participation को भी celebrate करते हैं। कई बार यकीन नहीं होता कि 'मन की बात' को इतने महीने और इतने साल गुजर गए।

'मन की बात' का सौवां एपिसोड है। आप सबकी हजारों चिट्ठियाँ, लाखों सन्देश मिले हैं और मैंने कोशिश की है कि ज्यादा से ज्यादा चिट्ठियों को पढ़ पाऊँ, देख पाऊँ, संदेशों को जरा समझने की कोशिश करूँ। आपके पत्र पढ़ते हुए कई बार मैं भावुक हुआ, भावनाओं से भर गया, भावनाओं में बह गया और खुद को फिर संभाल भी लिया। आपने मुझे 'मन की बात' के सौवें एपिसोड पर बधाई दी है लेकिन मैं सच्चे दिल से कहता हूँ, दरअसल बधाई के पात्र तो आप सभी 'मन की बात' के श्रोता हैं, हमारे देशवासी हैं। 'मन की बात', कोटि-कोटि भारतीयों के 'मन की बात' है, उनकी भावनाओं का प्रकटीकरण है।

3 अक्टूबर, 2014, विजय दशमी का वो पर्व था और हम सबने मिलकर विजय दशमी के दिन 'मन की बात' की यात्रा शुरू की थी। विजय दशमी यानी बुराई पर अच्छाई की जीत का पर्व। 'मन की बात' भी देशवासियों की अच्छाइयों का, सकारात्मकता का, एक अनोखा पर्व बन गया है। एक ऐसा पर्व जो हर महीने आता है, जिसका इंतजार हम सभी को होता है। हम इसमें positivity को celebrate करते हैं। हम इसमें people's participation को भी celebrate करते हैं। कई बार यकीन नहीं होता कि 'मन की बात' को इतने महीने और इतने साल गुजर गए। हर एपिसोड अपने आप में खास रहा। हर बार, नए उदाहरणों की नवीनता, हर बार देशवासियों की नई सफलताओं का विस्तार। 'मन की बात' में पूरे देश के कोने-कोने से लोग जुड़े, हर आयु-वर्ग के लोग जुड़े। बेटी-बचाओ बेटी-पढ़ाओ की बात हो, स्वच्छ भारत आन्दोलन हो, खादी के प्रति प्रेम हो या प्रकृति की बात, आजादी का अमृत महोत्सव हो या फिर अमृत सरोवर की बात, 'मन की बात' जिस विषय से जुड़ा, वो, जन-आंदोलन बन गया, और आप लोगों ने बना दिया। जब मैंने, तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा के साथ साझा 'मन की बात' की थी, तो इसकी चर्चा पूरे विश्व में हुई थी।

'मन की बात' मेरे लिए तो दूसरों के गुणों की पूजा करने की तरह ही रहा है। मेरे एक मार्गदर्शक थे - श्री लक्ष्मणराव जी ईनामदार। हम उनको वकील साहब कहा करते थे। वो हमेशा कहते थे कि हमें दूसरों के गुणों की पूजा करनी चाहिए। सामने कोई भी हो, आपके साथ का हो, आपका विरोधी हो, हमें उसके अच्छे गुणों को जानने का, उनसे सीखने का, प्रयास करना चाहिए। उनकी इस बात ने मुझे हमेशा प्रेरणा दी है। 'मन की बात' दूसरों के गुणों से सीखने का बहुत बड़ा माध्यम बन गयी है।

इस कार्यक्रम ने मुझे कभी भी आपसे दूर नहीं होने दिया। मुझे याद है, जब मैं गुजरात का मुख्यमंत्री था, तो वहां सामान्य जन से मिलना-जुलना स्वाभाविक रूप से हो ही जाता था। मुख्यमंत्री का कामकाज और कार्यकाल ऐसा ही होता है, मिलने जुलने के अवसर बहुत मिलते ही रहते हैं। लेकिन 2014 में दिल्ली आने के बाद मैंने पाया कि यहाँ का जीवन तो बहुत ही अलग है। काम का स्वरूप अलग, दायित्व अलग, स्थितियाँ-परिस्थितियों के बंधन, सुरक्षा का तामझाम, समय की सीमा। शुरुआती दिनों में, कुछ अलग महसूस करता था, खाली-खाली सा महसूस करता था। पचासों साल पहले मैंने अपना घर इसलिए नहीं छोड़ा था कि एक दिन अपने ही देश के लोगों से संपर्क ही मुश्किल हो जायेगा। जो देशवासी मेरा सब कुछ है, मैं उनसे ही कट करके जी नहीं सकता था। 'मन की बात' ने मुझे इस चुनौती का समाधान दिया, सामान्य

मानवी से जुड़ने का रास्ता दिया। पदभार और प्रोटोकॉल, व्यवस्था तक ही सीमित रहा और जनभाव, कोटि-कोटि जनों के साथ, मेरे भाव, विश्व का अटूट अंग बन गया। हर महीने में देश के लोगों के हजारों संदेशों को पढ़ता हूँ, हर महीने में देशवासियों के एक से एक अद्भुत स्वरूप के दर्शन करता हूँ। मैं देशवासियों के तप-त्याग की पराकाष्ठा को देखता हूँ, महसूस करता हूँ। मुझे लगता ही नहीं है, कि मैं, आपसे थोड़ा भी दूर हूँ। मेरे लिए 'मन की बात' ये एक कार्यक्रम नहीं है, मेरे लिए एक आस्था, पूजा, व्रत है। जैसे लोग, ईश्वर की पूजा करने जाते हैं, तो, प्रसाद की थाल लाते हैं। मेरे लिए 'मन की बात' ईश्वर रूपी जनता जनार्दन के चरणों में प्रसाद की थाल की तरह है। 'मन की बात' मेरे मन की आध्यात्मिक यात्रा बन गया है।

'मन की बात' स्व से समिष्टि की यात्रा है।
'मन की बात' अहम् से वयम् की यात्रा है।
यह तो मैं नहीं तू ही इसकी संस्कार साधना है।

आप कल्पना करिए, मेरा कोई देशवासी 40-40 साल से निर्जन पहाड़ी और बंजर जमीन पर पेड़ लगा रहा है, कितने ही लोग 30-30 साल से जल-संरक्षण के लिए बावड़ियां और तालाब बना रहे हैं, उसकी साफ-सफाई कर रहे हैं। कोई 25-30 साल से निर्धन बच्चों को पढ़ा रहा है, कोई गरीबों की इलाज में मदद कर रहा है। कितनी ही बार 'मन की बात' में इनका जिक्र करते हुए मैं भावुक हो गया हूँ। आकाशवाणी के साथियों को कितनी ही बार इसे फिर से रिकॉर्ड करना पड़ा है। आज, पिछला कितना ही कुछ, आँखों के सामने आए जा रहा है। देशवासियों के इन प्रयासों ने मुझे लगातार खुद को खपाने की प्रेरणा दी है।

'मन की बात' में जिन लोगों का हम जिक्र करते हैं वे सब हमारे Heroes हैं जिन्होंने इस कार्यक्रम को जीवंत बनाया है। आज जब हम 100वें एपिसोड के पड़ाव पर पहुंचे हैं, तो मेरी ये भी इच्छा है कि हम एक बार फिर इन सारे Heroes के पास जाकर उनकी यात्रा के बारे में जानें। आज हम कुछ साथियों से बात भी करने की कोशिश करेंगे। मेरे साथ जुड़ रहे हैं हरियाणा के भाई सुनील जगलान जी। सुनील जगलान जी का मेरे मन पर इतना प्रभाव इसलिए पड़ा क्योंकि हरियाणा में Gender Ratio पर काफी चर्चा होती थी और मैंने भी 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' का अभियान हरियाणा से ही शुरू किया था। और इसी बीच जब सुनील जी के 'Selfie With Daughter' Campaign पर मेरी नजर पड़ी, तो मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने भी उनसे सीखा और इसे 'मन की बात' में शामिल किया। इसमें मुद्दा Selfie नहीं थी, technology नहीं थी, इसमें Daughter को, बेटी को प्रमुखता दी गयी थी। जीवन में बेटी का स्थान कितना बड़ा होता है, इस अभियान से यह भी प्रकट हुआ। ऐसे ही अनेकों प्रयासों का परिणाम है कि आज हरियाणा में Gender Ratio में सुधार आया है। आईये आज सुनील जी से ही कुछ गप मार लेते हैं।

प्रधानमंत्री जी– नमस्कार सुनील जी,

सुनील– नमस्कार सर, मेरी खुशी बहुत बढ़ गई है सर आपकी आवाज सुन कर।

प्रधानमंत्री जी– सुनील जी 'Selfie with Daughter' हर किसी को याद है...अब जब इसकी फिर चर्चा हो रही है तो आपको कैसा लग रहा है।

सुनील – प्रधानमंत्री जी, ये असल में आपने जो हमारे प्रदेश हरियाणा से पानीपत की चौथी लड़ाई बेटियों के चेहरे पर मुस्कुराहट लाने के लिए शुरू की थी जिसे आपके नेतृत्व में पूरे देश ने जीतने की कोशिश की है तो वाकई ये मेरे लिए और हर बेटी के पिता और बेटियों को चाहने वालों के लिए बहुत बड़ी बात है।

प्रधानमंत्री जी– सुनील जी अब आपकी बिटिया कैसी है, आज कल क्या कर रही है?

सुनील– जी मेरी बेटियां नंदनी और याचिका है एक 7th Class में पढ़ रही है एक 4th Class में पढ़ रही है और आपकी बड़ी प्रशंसक है उन्होंने आपके लिए थैंक्यू प्राइम मिनिस्टर करके अपनी क्लासमेट्स जो हैं लैटर भी लिखवाए थे असल में।

प्रधानमंत्री जी– वाह वाह ! अच्छा बिटिया को आप मेरा और मन की बात के श्रोताओं का खूब सारा आशीर्वाद दीजिये।

सुनील– बहुत- बहुत शुक्रिया जी, आपकी वजह से देश की बेटियों के चेहरे पर लगातार मुस्कान बढ़ रही है।

प्रधानमंत्री जी– बहुत- बहुत धन्यवाद सुनील जी।

सुनील– जी शुक्रिया।

मुझे इस बात का बहुत संतोष है कि 'मन की बात' में हमने देश की नारी शक्ति की सैकड़ों प्रेरणादायी गाथाओं का जिक्र किया है। चाहे हमारी सेना हो या फिर खेल जगत हो, मैंने जब भी महिलाओं की उपलब्धियों पर बात की है, उसकी खूब प्रशंसा हुई है। जैसे हमने छत्तीसगढ़ के देउर गाँव की महिलाओं की चर्चा की थी। ये महिलाएं स्वयं सहायता समूहों के जरिए गाँव के चौराहों, सड़कों और मंदिरों के सफाई के लिए अभियान चलाती हैं। ऐसे ही, तमिलनाडु की वो आदिवासी महिलाएं, जिन्होंने हजारों Eco-Friendly Terracotta Cups (टेराकोटा कप्स) निर्यात किए, उनसे भी देश ने खूब प्रेरणा ली। तमिलनाडु में ही 20 हजार महिलाओं ने

साथ आकर वेल्लोर में नाग नदी को पुनर्जीवित किया था। ऐसे कितने ही अभियानों को हमारी नारी-शक्ति ने नेतृत्व दिया है और 'मन की बात' उनके प्रयासों को सामने लाने का मंच बना है।

अब हमारे साथ Phone line पर एक और सज्जन मौजूद हैं। इनका नाम है, मंजूर अहमद। 'मन की बात' में, जम्मू-कश्मीर की Pencil Slates (पेन्सिल स्लेट्स) के बारे में बताते हुए मंजूर अहमद जी का जिक्र हुआ था।

प्रधानमंत्री जी– मंजूर जी, कैसे हैं आप?

मंजूर जी– थैंक्यू सर...बड़े अच्छे से हैं सर।

प्रधानमंत्री जी– मन की बात के इस 100 वें एपिसोड में आपसे बात करके मुझे बहुत अच्छा लग रहा है।

मंजूर जी – थैंक्यू सर।

प्रधानमंत्री जी– अच्छा ये पेंसिल- स्लेट्स वाला काम कैसा चल रहा है?

मंजूर जी– बहुत अच्छे से चल रहा है सर बहुत अच्छे से, जब से सर आपने हमारी बात, 'मन की बात' में कही सर तब से बहुत काम बढ़ गया सर और दूसरों को भी रोजगार यहाँ बहुत बढ़ा है इस काम में।

प्रधानमंत्री जी– कितने लोगों को अब रोजगार मिलता होगा?

मंजूर जी– अभी मेरे पास 200 प्लस है...

प्रधानमंत्री जी– अरे वाह! मुझे बहुत खुशी हुई।

मंजूर जी – जी सर..जी सर...अभी एक दो महीनें में इसको expand कर रहा हूँ और 200 लोगों को रोजगार बढ़ जाएगा सर।

प्रधानमंत्री जी– वाह वाह! देखिये मंजूर जी...

मंजूर जी– जी सर...

प्रधानमंत्री जी– मुझे बराबर याद है और उस दिन आपने मुझे कहा था कि ये एक ऐसा काम है जिसकी न कोई पहचान है, न स्वयं की पहचान है, और आपको बड़ी पीड़ा भी थी और इस वजह से आपको बड़ी मुश्किलें होती थी वो भी आप कह रहे थे, लेकिन अब तो पहचान भी बन गई और 200 से ज्यादा लोगों को रोजगार दे रहे हैं।

मंजूर जी– जी सर... जी सर.

प्रधानमंत्री जी– और नए expansion करके और 200 लोगों को रोजगार दे रहे हैं, ये तो बहुत खुशी की खबर दी आपने।

मंजूर जी– Even सर, यहाँ पर जो farmer हैं सर उनका भी बहुत बड़ा इसमें फायदा मिला सर तब से। 2000 का tree बेचते थे अभी वही tree 5000 तक पहुँच गया सर। इतनी demand बढ़ गई है इसमें तब से..और इसमें अपनी पहचान भी बन गई है इसमें बहुत से order हैं अपने पास सर, अभी मैं आगे एक-दो महीनें में और expand करके और दो-ढाई सौ दो-चार गांव में जितने भी लड़के-लड़कियां हैं इसमें adjust हो सकते हैं उनका भी रोजी-रोटी चल सकता है सर।

प्रधानमंत्री जी– देखिये मंजूर जी, Vocal for Local की ताकत कितनी जबरदस्त है आपने धरती पर उतार कर दिखा दिया है।

मंजूर जी– जी सर।

प्रधानमंत्री जी– मेरी तरफ से आपको और गांव के सभी किसानों को और आपके साथ काम कर रहे सभी साथियों को भी मेरी तरफ से बहुत-बहुत शुभकामनाएं, धन्यवाद भैया।

मंजूर जी– धन्यवाद सर।

हमारे देश में ऐसे कितने ही प्रतिभाशाली लोग हैं, जो अपनी मेहनत के बलबूते ही सफलता के शिखर तक पहुंचे हैं। मुझे याद है, विशाखापट्नम के वेंकट मुरली प्रसाद जी ने एक आत्मनिर्भर भारत Chart Share किया था। उन्होंने बताया था कि वो कैसे ज्यादा से ज्यादा भारतीय products ही इस्तेमाल करेंगे। जब बेतिया के प्रमोद जी ने LED बल्ब बनाने की छोटी यूनिट लगाई या गढ़मुक्तेश्वर के संतोष जी ने LED बनाने का काम किया, 'मन की बात' ही उनके उत्पादों को सबके सामने लाने का माध्यम बना। हमने Make in India के अनेक उदाहरणों से लेकर Space Start-ups तक की चर्चा 'मन की बात' में की है।

कुछ एपिसोड पहले मैंने मणिपुर की बहन विजयशांति देवी जी का भी जिक्र किया था। विजयशांति जी कमल के रेशों से कपड़े बनाती हैं। 'मन की बात' में उनके इस अनोखे eco-friendly idea की बात हुई तो उनका काम और popular हो गया। आज विजयशांति जी फोन पर हमारे साथ हैं।

प्रधानमंत्री जी – नमस्ते विजयशांति जी! How are you?

विजयशांति जी – Sir, I am fine.

प्रधानमंत्री जी – and how's your work going on?

विजयशांति जी – sir, still working along with my 30 women

प्रधानमंत्री जी – in such a short period you have reached 30 persons team!

विजयशांति जी – Yes sir, this year also more expand with 100 women in my area

प्रधानमंत्री जी – so your target is 100 women

विजयशांति जी – yaa! 100 women

प्रधानमंत्री जी – and now people are

familiar with this lotus stem fiber

विजयशांति जी – yes sir, everyone's know from 'Mann Ki Baat' Programme all over India.

प्रधानमंत्री जी – so now it's very popular

विजयशांति जी – yes sir, from Prime Minister 'Mann ki Baat' programme everyone knows about lotus fibre

प्रधानमंत्री जी – so now you got the market also?

विजयशांति जी – yes, I have got a market from USA also they want to buy in bulk, in lots quantities, but I want to give from this year to send the US also

प्रधानमंत्री जी – So, now you are exporter?

विजयशांति जी – yes sir, from this year I export our product made in India Lotus fibre

प्रधानमंत्री जी – so, when I say Vocal for Local and now Local for Global

विजयशांति जी – yes sir, I want to reach my product all over the globe of all world

प्रधानमंत्री जी – so congratulation and wish you best luck

विजयशांति जी – Thank you sir

प्रधानमंत्री जी – Thank you, Thank you Vijaya Shanti

विजयशांति जी – Thank You sir

'मन की बात' की एक और विशेषता रही है। 'मन की बात' के जरिए कितने ही जन-आन्दोलन ने जन्म भी लिया है और गति भी पकड़ी है। जैसे हमारे खिलौने, हमारी Toy Industry को फिर से स्थापित करने का mission 'मन की बात' से ही तो शुरू हुआ था। भारतीय नस्ल के श्वान हमारे देशी डॉग्स उसको लेकर जागरूकता बढ़ाने की शुरुआत भी तो 'मन की बात' से ही की थी। हमने एक और मुहिम शुरू की थी कि हम गरीब छोटे दुकानदारों से मोलभाव नहीं करेंगे, झगड़ा नहीं करेंगे। जब 'हर घर तिरंगा' मुहिम शुरू हुई, तब भी 'मन की बात' ने देशवासियों को इस संकल्प से जोड़ने में खूब भूमिका निभाई। ऐसे हर उदाहरण, समाज में बदलाव का कारण बने हैं। समाज को प्रेरित करने का ऐसे ही बीड़ा प्रदीप सांगवान जी ने भी उठा रखा है। 'मन की बात' में हमने प्रदीप सांगवान जी के 'हीलिंग हिमालयाज' अभियान की चर्चा की थी। वो फोन लाइन पर हमारे साथ हैं।

मोदी जी – प्रदीप जी नमस्कार!

प्रदीप जी – सर जय हिन्द।

मोदी जी – जय हिन्द, जय हिन्द, भईया ! कैसे हैं आप?

प्रदीप जी – सर बहुत बढ़िया। आपकी आवाज सुनकर और भी अच्छा।

मोदी जी – आपने हिमालय को Heal करने की सोची।

प्रदीप जी – हाँ जी सर।

मोदी जी – अभियान भी चलाया। आज कल आपका Campaign कैसा चल रहा है?

प्रदीप जी – सर बहुत अच्छा चल रहा है। 2020 से ऐसा मानिये कि जितना काम हम पांच साल में करते थे अब वो एक साल में हो जाता है।

मोदी जी – अरे वाह!

प्रदीप जी – हाँ जी, हाँ जी, सर। शुरुआत बहुत nervous हुई थी बहुत डर था इस बात को लेके कि जिंदगी भर ये कर पाएँगे कि नहीं कर पाएँगे पर थोड़ा support मिला और 2020 तक हम बहुत struggle भी कर रहे थे honestly. लोग बहुत कम जुड़ रहे थे बहुत सारे ऐसे लोग थे जो कि support नहीं कर पा रहे थे। हमारी मुहिम को इतना तवज्जो भी नहीं दे रहे थे। But 2020 के बाद जब 'मन की बात' में जिक्र हुआ उसके बाद बहुत सारी चीजें बदल गई। मतलब पहले हम, साल में 6-7 cleaning drive कर पाते थे, 10 cleaning

drive कर पाते थे। आज की date में हम daily basis पे पाँच टन कचरा इक्ट्ठा करते हैं। अलग-अलग location से।

मोदी जी – अरे वाह !

प्रदीप जी – 'मन की बात' में जिक्र होने के बाद आप सर believe करें मेरी बात को कि मैं almost give-up करने की stage पर था एक टाइम पे और उसके बाद फिर बहुत सारा बदलाव आया मेरे जीवन में और चीजें इतनी speed-up हो गई कि जो चीजें हमने सोची नहीं थी। So I'm really thankful कि पता नहीं कैसे हमारे जैसे लोगों को आप ढूंढ लेते हैं। कौन इतनी दूर-दराज area में काम करता है हिमालय के क्षेत्र में जा के बैठ के हम काम कर रहे हैं। इस altitude पे हम काम कर रहे हैं। वहाँ पे आपने ढूंढा हमें। हमारे काम को दुनिया के सामने ले के आये। तो मेरे लिए बहुत emotional moment था तब भी और आज भी कि मैं जो हमारे देश के जो प्रथम सेवक हैं उनसे मैं बातचीत कर पा रहा हूँ। मेरे लिए इससे

बड़े सौभाग्य की बात नहीं हो सकती।

मोदी जी – प्रदीप जी! आप तो हिमालय की चोटियों पर सच्चे अर्थ में साधना कर रहे हैं और मुझे पक्का विश्वास है अब आपका नाम सुनते ही लोगों को याद आ जाता है कि आप कैसे पहाड़ों की स्वच्छता अभियान में जुड़े हैं।

प्रदीप जी – हाँ जी सर।

मोदी जी – और जैसा आपने बताया कि अब तो बहुत बड़ी team बनती जा रही है और आप इतनी बड़ी मात्रा में daily काम कर रहे हैं।

प्रदीप जी – हाँ जी सर।

मोदी जी – और मुझे पूरा विश्वास है कि आपके इन प्रयासों से, उसकी चर्चा से, अब तो कितने ही पर्वतारोही स्वच्छता से जुड़े photo post करने लगे हैं।

प्रदीप जी – हाँ जी सर ! बहुत।

मोदी जी – ये अच्छी बात है, आप जैसे साथियों के प्रयास के कारण waste is also a wealth ये लोगों के दिमाग में अब स्थिर हो रहा है, और पर्यावरण की भी रक्षा अब हो रही

है और हिमालय का जो हमारा गर्व है उसको संभालना, संवारना और सामान्य मानवी भी जुड़ रहा है। प्रदीप जी बहुत अच्छा लगा मुझे। बहुत-बहुत धन्यवाद भईया।

प्रदीप जी – Thank you Sir Thank you so much जय हिन्द।

आज देश में Tourism बहुत तेजी से Grow कर रहा है। हमारे ये प्राकृतिक संसाधन हों, नदियाँ, पहाड़, तालाब या फिर हमारे तीर्थ स्थल हों, उन्हें साफ रखना बहुत जरूरी है। ये Tourism Industry की बहुत मदद करेगा। पर्यटन में स्वच्छता के साथ-साथ हमने Incredible India movement की भी कई बार चर्चा की है। इस movement से लोगों को पहली बार ऐसे कितनी ही जगहों के बारे में पता चला, जो उनके आस-पास ही थे। मैं हमेशा ही कहता हूँ कि हमें विदेशों में Tourism पर जाने से पहले हमारे देश के कम से कम 15 Tourist destination पर जरुर जाना चाहिए और यह Destination जिस राज्य में आप रहते हैं, वहां के नहीं होने चाहिए, आपके राज्य से बाहर किसी अन्य राज्य के होने चाहिए। ऐसे ही हमने स्वच्छ सियाचिन, single use plastic और e-waste जैसे गंभीर विषयों पर भी लगातार बात की है। आज पूरी दुनिया पर्यावरण के जिस issue को लेकर इतना परेशान है, उसके समाधान में 'मन की बात' का ये प्रयास बहुत अहम है।

'मन की बात' को लेकर मुझे इस बार एक और खास संदेश UNESCO की DG औद्रे ऑजुले (Audrey Azoulay) का आया है। उन्होंने सभी देशवासियों को सौ एपिसोड्स (100th Episodes) की इस शानदार journey के लिये शुभकामनायें दी हैं। साथ ही, उन्होंने कुछ सवाल भी पूछे हैं। आइये, पहले UNESCO की DG के मन की बात सुनते हैं।

DG UNESCO: Namaste Excellency, Dear Prime Minister on behalf of UNESCO I thank you for this opportunity to be part of the 100th episode of the 'Mann Ki Baat' Radio broadcast. UNESCO and India have a long common history. We have very strong partnerships together in all areas of our mandate - education, science, culture and information and I would like to take this opportunity today to talk about the importance of education. UNESCO is working with its member states to ensure that everyone in the world has access to quality education by 2030. With the largest population in the world, could you please explain Indian way to achieving this objective. UNESCO also works to support culture and protect heritage and India is chairing the G-20 this year. World leaders would be coming to Delhi for this event. Excellency, how does India want to put culture and education at the top of the international agenda? I once again thank you for this opportunity and convey my very best wishes through you to the people of India....see you soon. Thank you very much.

PM Modi: Thank you, Excellency. I am happy to interact with you in the 100 'Mann ki Baat' programme. I am also happy that you have raised the important issues of education and culture.

UNESCO की DG ने Education और Cultural Preservation, यानी शिक्षा और संस्कृति संरक्षण को लेकर भारत के प्रयासों के बारे में जानना चाहा है। ये दोनों ही विषय 'मन की बात' के पसंदीदा विषय रहे हैं।

बात शिक्षा की हो या संस्कृति की, उसके संरक्षण की बात हो या संवर्धन की, भारत की यह

चरैवेति चरैवेति चरैवेति।
चलते रहो-चलते रहो-चलते रहो।

आज हम इसी चरैवेति चरैवेति की भावना के साथ "मन की बात' का 100वाँ एपिसोड पूरा कर रहे हैं। भारत के सामाजिक ताने-बाने को मजबूती देने में "मन की बात', किसी भी माला के धागे की तरह है, जो हर मनके को जोड़े रखता है। हर एपिसोड में देशवासियों के सेवा और सामर्थ्य ने दूसरों को प्रेरणा दी है।

प्राचीन परंपरा रही है। इस दिशा में आज देश जो काम कर रहा है, वो वाकई बहुत सराहनीय है। National Education Policy हो या क्षेत्रीय भाषा में पढ़ाई का विकल्प हो, Education में Technology Integration हो, आपको ऐसे अनेक प्रयास देखने को मिलेंगे। वर्षों पहले गुजरात में बेहतर शिक्षा देने और Dropout Rates को कम करने के लिए 'गुणोत्सव और शाला प्रवेशोत्सव' जैसे कार्यक्रम जनभागीदारी की एक अदभुत मिसाल बन गए थे। 'मन की बात' में हमने ऐसे कितने ही लोगों के प्रयासों को Highlight किया है, जो निःस्वार्थ भाव से शिक्षा के लिए काम कर रहे हैं।

आपको याद होगा, एक बार हमने ओडिशा में ठेले पर चाय बेचने वाले स्वर्गीय डी. प्रकाश राव जी के बारे में चर्चा की थी, जो गरीब बच्चों को पढ़ाने के मिशन में लगे हुए थे। झारखण्ड के गांवों में Digital Library चलाने वाले संजय कश्यप जी हों, Covid के दौरान E-learning के जरिये कई बच्चों की मदद करने वाली हेमलता N.K. जी हों, ऐसे अनेक शिक्षकों के उदाहरण हमने 'मन की बात' में लिये हैं। हमने Cultural Preservation के प्रयासों को भी 'मन की बात' में लगातार जगह दी है।

लक्षदीप का Kummel Brothers Challengers Club हो, या कर्नाटका के 'क्वेमश्री' जी 'कला चेतना' जैसे मंच हो, देश के कोने-कोने से लोगों ने मुझे चिट्ठी लिखकर ऐसे उदाहरण भेजे हैं। हमने उन तीन Competitions को लेकर भी बात की थी, जो देशभक्ति पर 'गीत' 'लोरी' और 'रंगोली' से जुड़े थे।

आपको ध्यान होगा, एक बार हमने देश भर के Story Tellers और Story Telling के माध्यम से शिक्षा की भारतीय विधाओं पर चर्चा की थी। मेरा अटूट विश्वास है कि सामूहिक प्रयास से बड़े से बड़ा बदलाव लाया जा सकता है। इस साल हम जहाँ आजादी के अमृतकाल में आगे बढ़ रहे हैं, वहीं G-20 की अध्यक्षता भी कर रहे हैं। यह भी एक वजह है कि Education के साथ-साथ Diverse Global Cultures को समृद्ध करने के लिये हमारा संकल्प और मजबूत हुआ है।

हमारे उपनिषदों का एक मंत्र सदियों से हमारे मानस को प्रेरणा देता आया है।

चरैवेति चरैवेति चरैवेति।

चलते रहो-चलते रहो-चलते रहो।

आज हम इसी **चरैवेति चरैवेति** की भावना के साथ 'मन की बात' का 100वाँ एपिसोड पूरा कर रहे हैं। भारत के सामाजिक ताने-बाने को मजबूती देने में 'मन की बात', किसी भी माला के धागे की तरह है, जो हर मनके को जोड़े रखता है। हर एपिसोड में देशवासियों के सेवा और सामर्थ्य ने दूसरों को प्रेरणा दी है। इस कार्यक्रम में हर देशवासी दूसरे देशवासी की प्रेरणा बनता है।

एक तरह से 'मन की बात' का हर एपिसोड अगले एपिसोड के लिए जमीन तैयार करता है। 'मन की बात' हमेशा सद्भावना, सेवा-भावना और कर्तव्य-भावना से ही आगे बढ़ा है। आजादी के अमृतकाल में यही Positivity देश को आगे ले जाएगी, नई ऊंचाई पर ले जाएगी और मुझे खुशी है कि 'मन की बात' से जो शुरुआत हुई, वो आज देश की नई परंपरा भी बन रही है। एक ऐसी परंपरा जिसमें हमें सबका प्रयास की भावना के दर्शन होते हैं।

आकाशवाणी के साथियों को भी धन्यवाद दूंगा जो बहुत धैर्य के साथ इस पूरे कार्यक्रम को रिकॉर्ड करते हैं।

वो translators, जो बहुत ही कम समय में, बहुत तेजी के साथ 'मन की बात' का विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद करते हैं, मैं उनका भी आभारी हूँ। मैं दूरदर्शन के और MyGov के साथियों को भी धन्यवाद देता हूँ। देशभर के TV Channels, Electronic media के लोग, जो 'मन की बात' को बिना commercial break के दिखाते हैं, उन सभी का मैं आभार व्यक्त करता हूँ और आखिरी में, मैं उनका भी आभार व्यक्त करूँगा, जो 'मन की बात' की कमान संभाले हुए हैं -भारत के लोग, भारत में आस्था रखने वाले लोग। ये सब कुछ आपकी प्रेरणा और ताकत से ही संभव हो पाया है।

वैसे तो मेरे मन में इतना कुछ कहने को है कि समय और शब्द दोनों कम पड़ रहे हैं। लेकिन मुझे विश्वास है कि आप सब मेरे भावों को समझेंगे, मेरी भावनाओं को समझेंगे। आपके परिवार के ही एक सदस्य के रूप में 'मन की बात' के सहारे आपके बीच में रहा हूँ, आपके बीच में रहूँगा। ▪

'मन की बात' जन-जन की बात

शिवराज सिंह चौहान

स्वच्छता आंदोलन, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, जल-संरक्षण जैसे समाज-सुधार के साधनों और वोकल फॉर लोकल जैसी गतिविधियों को मन की बात से प्रोत्साहन मिला है। लोग अपनी भावनाओं का प्रकटीकरण भी प्रधानमंत्री श्री मोदी के सामने इस माध्यम से कर पाते हैं। देश में मन की बात ने सामाजिक क्रांति का शंखनाद किया है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की मन की बात देश के जन-जन की बात है। यह एक सामाजिक आंदोलन और जनक्रांति बन गई है। प्रधानमंत्री की 'मन की बात' से बेहतर कार्य करने वाले अलग-अलग लोगों को समाज के सामने लाने का मौका मिला है।

स्वच्छता आंदोलन, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, जल-संरक्षण जैसे समाज-सुधार के साधनों और वोकल फॉर लोकल जैसी गतिविधियों को मन की बात से प्रोत्साहन मिला है। लोग अपनी भावनाओं का प्रकटीकरण भी प्रधानमंत्री श्री मोदी के सामने इस माध्यम से कर पाते हैं। देश में मन की बात ने सामाजिक क्रांति का शंखनाद किया है।

बहन-बेटियां आँसू बहाने के लिए पैदा नहीं हुई हैं। बहन-बेटियाँ मजबूर न रहें, मजबूत बनें, इसके लिए राज्य सरकार अनेक कार्यक्रम और योजनाएँ संचालित कर रही है। बहनें संकल्प लें कि वे गरीब नहीं रहेंगी। राज्य सरकार द्वारा शहरों में भी महिला स्व-सहायता समूह गठित करने का अभियान शुरू किया जा रहा है। इसमें बहनों का बैंक लिंकेज सुनिश्चित किया जाएगा और अपने काम-धंधे आरंभ करने के लिए 2 प्रतिशत ब्याज पर ऋण उपलब्ध कराया जाएगा। संकल्प है कि प्रत्येक महिला महीने में कम से कम 10 हजार रूपए कमाए और आत्म-सम्मान एवं आत्म-विश्वास के साथ जीवन जिये।

ईश्वर ने बेटा-बेटी को समान बनाया, परंतु ऐतिहासिक क्रम में महिलाओं के साथ दूसरे दर्जे का व्यवहार करना समाज की रीति ही बन गई। लोग बेटे को बुढ़ापे का सहारा और कुल का दीपक मानने लगे जबकि वास्तविकता यह है कि बेटी ही अंतिम समय तक माता-पिता का साथ देती है और किसी भी स्थिति में बेटों से कम नहीं है।

विज्ञान के क्षेत्र में हुई प्रगति का भी बेटी के जन्म को रोकने के लिए उपयोग किया गया। पुरूष प्रधान समाज में बेटियों और बहनों की स्थिति निरंतर बदतर होती चली गई। पीड़ा और वेदना से भरे इस परिदृश्य को बदलने के लिए ही राज्य सरकार ने लाड़ली लक्ष्मी योजना, बेटियों की पढ़ाई के लिए विभिन्न योजनाएँ, मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना सहित अनेकों योजनाएँ क्रियान्वित की। महिला सशक्तिकरण के लिए शासकीय सेवा, पंचायत और नगरीय चुनावों में आरक्षण और महिलाओं के नाम अचल संपत्ति के पंजीयन में विशेष छूट जैसी

गरीब और निम्न मध्यम परिवार की महिलाओं की जिंदगी बदलने के लिए सरकार संकल्पित है। उन्हें आत्म-निर्भर बनाने में लाड़ली बहना योजना प्रभावी सिद्ध होगी। योजना में रोजमर्रा की जरूरतों की पूर्ति के लिए प्रतिमाह 1000 रूपए बहनों के खाते में डाले जायेंगे।

राखी के बंधन को निभाने की भावना से साल में एक बार नहीं हर महीने बहनों को कुछ न कुछ देने के लिए ही लाड़ली बहना योजना में प्रतिमाह राशि जारी करने की व्यवस्था की गई है।

व्यवस्था की गई। महिलाओं ने भी उन्हें सौंपी गई हर जिम्मेदारी को बखूबी निभाया है। प्रदेश में 45 लाख बेटियाँ लाड़ली लक्ष्मी योजना से जुड़ी हैं।

10 जून महिलाओं के लिए क्रांति का दिन होगा- खाते में आएगी लाड़ली बहना योजना की राशि

गरीब और निम्न मध्यम परिवार की महिलाओं की जिंदगी बदलने के लिए सरकार संकल्पित है। उन्हें आत्म-निर्भर बनाने में लाड़ली बहना योजना प्रभावी सिद्ध होगी। योजना में रोजमर्रा की जरूरतों की पूर्ति के लिए प्रतिमाह 1000 रूपए बहनों के खाते में डाले जायेंगे। राखी के बंधन को निभाने की भावना से साल में एक बार नहीं हर महीने बहनों को कुछ न कुछ देने के लिए ही लाड़ली बहना योजना में प्रतिमाह राशि जारी करने की व्यवस्था की गई है।

प्रदेश में एक करोड़ 20 लाख से अधिक बहनों ने योजना में आवेदन किया है। सभी पात्र बहनों से अपील है कि वे योजना में आवेदन अवश्य करें। मई माह में आवेदनों की जाँच के बाद 10 जून को बहनों के खाते में राशि जारी की जाएगी। यह दिन महिलाओं के लिए क्रांति का दिन होगा। ▪

''मन की बात'' ने नई दिशा दी - हितानंद शर्मा

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 'मन की बात' कार्यक्रम के माध्यम से उन लोगों को समाज में नई पहचान दी है, जिनके अच्छे कार्य समाज से छुपे रहते थे, जो लोग अखबार में नही छपा करते थे, उन्हें लोगों के दिलों में छापने का कार्य मन की बात के माध्यम से प्रधानमंत्री जी ने किया है। प्रधानमंत्री जी के इस कार्यक्रम ने समाज के एक-एक व्यक्ति को छूने का काम किया है। कार्यक्रम का 100 वा एपिसोड पूर्ण हुआ है। मन की बात कार्यक्रम के हर एक एपिसोड से आम जन को कुछ ना कुछ नया सीखने को मिलेगा। ▪

96 प्रतिशत आबादी सुनती है मन की बात - अजय जामवाल

प्रधानमंत्री जी के मन की बात का 100वां संस्करण इस देश के लिए ऐतिहासिक दिन है। इस कार्यक्रम के माध्यम से हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी केवल देश को ही नहीं संपूर्ण विश्व को अपने विचारों से प्रभावित करते हैं और इस जनप्रिय कार्यक्रम को देश की 96 प्रतिशत आबादी सुनती है। यह संस्करण लोगों को एक दूसरे से जुड़ने के साथ मिल-जुल कर रहने, समाज को जागृत करने और सेवा के रूप में है।

पूरी दुनिया में जहां-जहां भी लोगों ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मन की बात का 100वां संस्करण सुना, पूर्ण विश्वास है कि यह उनके लिए बहुत प्रेरणा दायक रहा होगा। ▪

'मन की बात' कार्यक्रम से समाज में सकारात्मक बदलाव आया- विष्णुदत्त शर्मा

मन की बात कार्यक्रम को लेकर आईआईएम रोहतक द्वारा किए गए सर्वे में बताया गया है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मन की बात कार्यक्रम से समाज में एक सकारात्मक बदलाव आया है। सर्वे के अनुसार मन की बात से लगभग 96 प्रतिशत लोग परिचित हैं। इस कार्यक्रम को 100 करोड़ से ज्यादा लोग एक बार सुन चुके है। 23 करोड़ लोगों ने कार्यक्रम को नियमित रूप से देखा और सुना है। मन की बात नागरिकों के व्यवहार, विचार एवं मनो स्थिति को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

60 प्रतिशत लोगों ने राष्ट्र निर्माण के लिए कार्य करने में रुचि दिखाई है। 55 प्रतिशत लोग राष्ट्र के एक जिम्मेदार नागरिक बनने की पुष्टि करते हैं। 63 प्रतिशत लोग महसूस करते हैं कि सरकार के प्रति उनका दृष्टिकोण सकारात्मक हो गया है। 59 प्रतिशत लोगों को लगता है कि सरकार पर उनका भरोसा बढ़ा है। 58 प्रतिशत लोगों ने कहा कि उनके जीवन स्थिति में सुधार हुआ है।

वहीं 73 प्रतिशत लोग सरकार के कामकाज और देश की प्रगति के बारे में आशावादी महसूस करते हैं। सर्वे के अनुसार मन की बात कार्यक्रम में जनता को भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियां, आम नागरिकों के किस्से, सशस्त्र बलों की वीरता, युवा संबंधित मुद्दे और पर्यावरण व प्राकृतिक संसाधन संबंधी मुद्दे सबसे लोकप्रिय हुए है।

आम जनता का जनमानस का अभियान बन गया

मध्यप्रदेश के डिंडोरी की लहरी बाई एक दूरस्थ गांव में रहने वाली बहन जिसने कभी जीवन में कल्पना नहीं की उन्हें समाज में एक नई पहचान मिलेगी। लहरी बाई ने बीजों का संरक्षण करना, उनको अपने पास संरक्षित करके उनमें से नई प्रजातियां उत्पन्न करना, यह सामान्य घटना नहीं थी। बिना पढ़ी, लिखी महिला ऐसा असामान्य काम करती है तो उसे भी प्रधानमंत्री जी ने समाज के बीच लाने का काम किया और उन्हें पद्मश्री से सम्मानित भी किया। लहरी बाई जैसे अनेक लोगों को अवसर मिला है। प्रधानमंत्री जी ने समाज के बीच की ऐसी विशिष्ट शख्सियतों को ऊपर लाने का एक अभियान चलाया। यह अभियान आम जनता का जनमानस का अभियान बन गया है।

दुनिया के इतिहास में यह पहला अवसर है कि किसी राजनेता के प्रति जनता का अथाह विश्वास देखने को मिला। प्रधानमंत्री जी ने अपने मन की बात कार्यक्रम में किसी दल की बात नहीं की।

राजनीति से ऊपर उठकर सामाजिक विषयों पर चर्चा की जिससे समाज का नेतृत्व के प्रति विश्वास जागृत हुआ है।

प्रदेश के 64100 बूथ और 25000 स्थानों पर आमजन और कार्यकर्ताओं ने सुनी मन की बात कार्यक्रम

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के लोकप्रिय कार्यक्रम 'मन की बात' के 100 वां एपिसोड के अवसर को भारतीय जनता पार्टी द्वारा उत्सव के रूप में मनाया गया। प्रदेश के 64100 बूथों एवं 25000 चिन्हित स्थानों पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गये। इन कार्यक्रमों में पार्टी कार्यकर्ताओं, जनप्रतिनिधियों के साथ-साथ बुद्धिजीवी, खिलाड़ी, कलाकार, समाजसेवी, रचना धर्मी, स्वच्छता कर्मी एवं प्रमुख नागरिकों ने भाग लिया। ऐसे लोग भी इन कार्यक्रमों में उपस्थित रहे जिनसे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' के विभिन्न एपिसोड के दौरान बातचीत की है। प्रदेश के प्रत्येक जिले में अलग-अलग विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गये तथा शैक्षणिक संस्थाओं में भी कार्यक्रम हुए।

30 अप्रैल को देश में बना नया इतिहास

दुनिया के इतिहास में यह पहला अवसर है कि किसी राजनेता के प्रति जनता का अथाह विश्वास देखने को मिला। प्रधानमंत्री जी ने अपने मन की बात कार्यक्रम में किसी दल की बात नहीं की। राजनीति से ऊपर उठकर सामाजिक विषयों पर चर्चा की जिससे समाज का नेतृत्व के प्रति विश्वास जागृत हुआ है। ▪

'मन की बात' 100 करोड़ से ज्यादा श्रोताओं तक

अधिकांश श्रोता सरकारों के कामकाज के प्रति जागरूक हो गए हैं और 73 प्रतिशत लोग आशावादी हैं तथा यह महसूस करते हैं कि देश प्रगति कर रहा है। इस अध्ययन में शामिल होने वाले 58 प्रतिशत श्रोताओं ने कहा कि उनका जीवन स्तर बेहतर हुआ है, जबकि इतने ही लोगों (59 प्रतिशत) ने इस सरकार के प्रति भरोसा बढ़ने की सूचना दी है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' से लगभग छियानवे प्रतिशत जनता परिचित है। यह कार्यक्रम 100 करोड़ से ज्यादा लोगों तक पहुंच गया है जो जागरूक हैं और कम से कम एक बार इस कार्यक्रम को सुन चुके हैं।

23 करोड़ लोग नियमित रूप से इस कार्यक्रम को सुनते हैं जबकि 41 करोड़ अन्य लोग बीच-बीच में इस कार्यक्रम को सुनते रहते हैं जिनके इस कार्यक्रम के नियमित श्रोता बनने की पर्याप्त संभावना है। यह रिपोर्ट प्रधानमंत्री के इस रेडियो प्रसारण की लोकप्रियता के पीछे के कारणों की पड़ताल करती है और उन सबसे पसंदीदा विशेषताओं को सूचीबद्ध करती है जो लोगों को इस प्रसारण से जोड़ती हैं। एक शक्तिशाली और निर्णायक नेतृत्व द्वारा श्रोताओं के साथ एक भावनात्मक जुड़ाव बनाने के इरादे से बोलने को इस कार्यक्रम से जुड़ने के कारण के रूप में चिन्हित किया गया है। इस देश की जनता ने प्रधानमंत्री को एक ज्ञानी और सहानुभूतिपूर्ण एवं संवेदनशील दृष्टिकोण रखने वाले नेता होने का श्रेय दिया है। नागरिकों के साथ सीधे जुड़ाव और मार्गदर्शन को भी इस कार्यक्रम द्वारा स्थापित किए गए भरोसे के कारण के रूप में चिन्हित किया गया है।

अधिकांश श्रोता सरकारों के कामकाज के प्रति जागरूक हो गए हैं और 73 प्रतिशत लोग आशावादी हैं तथा यह महसूस करते हैं कि देश प्रगति कर रहा है।

इस अध्ययन में शामिल होने वाले 58 प्रतिशत श्रोताओं ने कहा कि उनका जीवन स्तर बेहतर हुआ है, जबकि इतने ही लोगों (59 प्रतिशत) ने इस सरकार के प्रति भरोसा बढ़ने की सूचना दी है। इस सरकार के प्रति आम जनभावना का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि 63 प्रतिशत लोगों ने माना है कि इस सरकार के प्रति उनका दृष्टिकोण सकारात्मक हुआ है और 60 प्रतिशत लोगों ने राष्ट्र निर्माण के लिए काम करने में रुचि दिखाई है।

कुल 44.7 प्रतिशत लोग इस कार्यक्रम को टीवी पर देखते हैं, जबकि 37.6 प्रतिशत लोग इसे मोबाइल पर देखते हैं। इस कार्यक्रम को सुनने की तुलना में देखना अधिक पसंद किया जाता है, क्योंकि 19 से 34 वर्ष के बीच के आयु वर्ग के 62 प्रतिशत प्रतिभागियों ने इसे टीवी पर देखना पसंद किया।

'मन की बात' के श्रोताओं में सबसे बड़ा हिस्सा हिन्दी श्रोताओं का है। कुल 65 प्रतिशत श्रोताओं ने हिन्दी को किसी भी अन्य भाषा की तुलना में अधिक पसंद किया है, जबकि 18 प्रतिशत श्रोताओं के साथ अंग्रेजी दूसरे स्थान पर है। 22 भारतीय भाषाओं और 29 बोलियों के अलावा, 'मन की बात' अंग्रेजी के साथ ही 11 विदेशी भाषाओं में प्रसारित किया जाता है, जिनमें फ्रेंच, चीनी, इंडोनेशियाई, तिब्बती, बर्मी, बलूची, अरबी, पश्तो, फारसी, दारी और स्वाहिली शामिल हैं। आकाशवाणी के 500 से अधिक प्रसारण केंद्रों द्वारा 'मन की बात' का प्रसारण किया जा रहा है।

मन की बात के बारे में

आकाशवाणी पर लोकप्रिय कार्यक्रम, प्रधानमंत्री के मन की बात 3 अक्टूबर, 2014 को शुरू किया गया था और हर महीने के आखिरी रविवार को सुबह 11 बजे पूरे आकाशवाणी और डीडी नेटवर्क पर प्रसारित किया जाता है। मन की बात का आकाशवाणी द्वारा अंग्रेजी के अलावा 22 भारतीय भाषाओं, 29 बोलियों और 11 विदेशी भाषाओं में अनुवाद किया गया है। इसमें हिंदी, संस्कृत, पंजाबी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मराठी, गुजराती, मलयालम, उड़िया, कोंकणी, नेपाली, कश्मीरी, डोगरी, मणिपुरी, मैथिली, बंगाली, असमिया, बोडो, संथाली, उर्दू, सिंधी शामिल हैं। बोलियों में छत्तीसगढ़ी, गोंडी, हल्बी, सरगुजिया, पहाड़ी, शीना, गोजरी, बाल्ती, लद्दाखी, कार्बी, खासी, जयंतिया, गारो, नगामीस, हमर, पैते, थडौ, कबुई, माओ, तांगखुल, न्याशी, आदि, मोनपा, आओ , अंगामी, कोकबोरोक, मिजो, लेप्चा, सिक्किमी (भूटिया) शामिल है। ▪

मन को मन से जोड़ती आवाज है 'मन की बात'

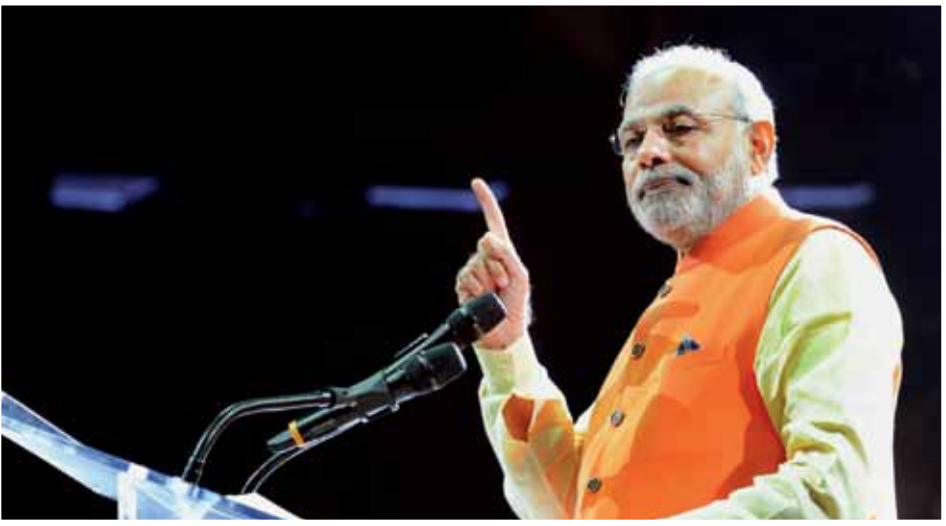

मन की बात के रूप में सतत् संवाद कर एक नवाचार के जरिए मोदी जी ने रेडियो के माध्यम से लोगों के घरों में ही नही, मनों में जगह बना ली है।

मोबाइल, सोशल मीडिया, इंस्ट्राग्राम, ट्विटर की दुनिया में दखल रखते हुये भी उससे पृथक जाकर रेडियो जैसे मृतप्राय हो रहे संचार माध्यम को न केवल जीवंत किया अपितु उसमें भी अभिनव प्रयोगों का समावेश कर नव कीर्तिमान रचे हैं।

हितानंद शर्मा

संवाद कौशल में निपुणता अर्थात कब, क्या, कैसे, किस बात को सीधे व्यक्ति के मन से जोड़कर रखा जाये, ऐसी असाधारण प्रतिभा के धनी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जब भी कोई विषय रखते हैं तो सीधे जन मानस के साथ संवाद-संबंध जुड़ जाता है। अद्भुत वक्तव्य कला के धनी होने के साथ-साथ व्यवहारिक पक्ष के आग्रही श्री मोदी जी जब किसी विषय का प्रतिपादन राष्ट्रीय अथवा अंतरराष्ट्रीय मंचों पर करते हैं तो सामान्य जन भी उसको स्वंय का विषय मानकर आत्मीयता के साथ स्वीकार कर लेता है।

जितनी आत्मीयता व अपनत्व के साथ वह बोलते हैं, जिस कार्यपद्धति व निष्ठा के लिये वह जाने जाते हैं और गत आठ वर्षों से नागरिकों के साथ विश्वास आधारित संवाद के जो सीधे संबंध बनाए हैं, वे सभी गुण जन संचारक के रूप में उन्हें स्थापित करते हैं। श्री मोदी जी के समावेशी व दूरदर्शी दृष्टिकोण को सम्पूर्ण भारतवर्ष में अभूतपूर्व स्वीकार्यता मिली है। यह प्रधानमंत्री जी का सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास रूपी मॉडल ही है जिससे वह दुनिया के जनप्रिय नेता बन गये हैं।

मन की बात के रूप में सतत् संवाद कर एक नवाचार के जरिए मोदी जी ने रेडियो के माध्यम से लोगों के घरों में ही नही, मनों में जगह बना ली है। मोबाइल, सोशल मीडिया, इंस्ट्राग्राम, ट्विटर की दुनिया में दखल रखते हुये भी उससे पृथक जाकर रेडियो जैसे मृतप्राय हो रहे संचार माध्यम को न केवल जीवंत किया अपितु उसमें भी अभिनव प्रयोगों का समावेश कर नव कीर्तिमान रचे हैं। अक्टूबर 2014 में आरंभ किये गये मन की बात कार्यक्रम को जब प्रत्येक माह के अंतिम रविवार के प्रातः 11 बजे का समय तय किया गया तो विरोधियों ने अनेक प्रकार से नकारात्मक बातें कहते हुये हास्य का विषय बताया। किंतु शनैः शनैः यह कार्यक्रम प्रधानमंत्री जी की मन की बात से सामान्य समाज की जन की बात बनता चला गया।

एक राजनीतिक दल के नेता के साथ-साथ सरकार के प्रतिनिधि होने के बाद भी मन की बात में किसी भी राजनैतिक विषय को स्पर्श किये बिना सतत् संवाद एक संगठन की सतत् साधना से गढ़े गये साधक की प्रतिमा को स्थापित करता है। स्वच्छता, शिक्षा, संस्कार और भारत के प्रत्येक भाग से जीवंत उदाहरणों का उल्लेख कर बड़ी बड़ी बातों को भी सहज सरल भाषा में जब वह समझाते हैं तो किसी भारतीय को अपने अभिभावक के रूप में, किसी युवा को अपने साथी के रूप में, तो किसी छात्र को अपने शिक्षक के रुप में सुनाई पड़ते हैं।

मन की बात जब हम सुनते हैं तो हमें श्री मोदी जी के दो व्यक्तित्व दिखाई देते हैं - एक ओर दृढ़, शक्तिशाली और उद्देश्यपूर्ण प्रधानमंत्री मोदी तो दूसरी ओर नम्र, दयालु और नेक पिता तुल्य अभिभावक। यदि हम आंख बंद करके 'मन की बात' सुनते हैं, तो हमारे मन में दृश्य उभरता है कि श्री मोदी जी गांव की चौपाल पर बैठे हैं, लोगों से बातचीत कर रहे हैं, उनकी बातें सुन रहे हैं, उनके साथ संवाद कर रहे हैं, जहां आवश्यकता है वहां ज्ञान भरी सलाह दे रहे हैं या किसी अनुकरणीय कार्य के लिए किसी की प्रशंसा कर रहे हैं। कुछ समय पहले ही उन्होंने दुर्घटना पीड़ितों के परिवारों के साथ अपनी बातचीत साझा की, जिन्होंने बहादुरी से अपने प्रियजनों के अंग दान करने के फैसले किए थे।

'मन की बात' के 8 वर्षों के अपने एपिसोड को सफल बनाने के क्रम में, न केवल महत्वपूर्ण विषयों के बारे में जनता में जागरूकता पैदा करने का प्रयास किया गया है, अपितु उन्हें सामाजिक और राष्ट्रीय हितों को लेकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया है।

कार्यक्रम में प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए गए सामाजिक संदेश कुछ ही घंटों में सोशल मीडिया के ट्रैंड बन जाते हैं और कुछ ही सप्ताहों में एक जन आंदोलन बन जाते हैं।

मोदी जी ने उस बातचीत का उपयोग अंगदान के नेक विचार को बढ़ावा देने के लिए किया।

पत्राचार की पुरानी परंपरा को बढ़ावा देते हुये पत्रों की बात को अपने संवाद में सम्मिलित करके न केवल पोस्टकार्ड और अन्तर्देशीय पत्रों को पुनः व्यवहार में लाना आरंभ हो गया है। जब किसी बालिका या किसी युवा के पत्र का उद्धरण देते हुये प्रधानमंत्री जी अपनी बात रखते हैं तो वह न केवल उस एक व्यक्ति का मनोबल बढ़ाते हैं अपितु उस पीढ़ी के प्रेरणास्त्रोत बन जाते हैं।

ऐसे अनेक उदाहरण बताये जा सकते हैं जिनमें जलवायु की विपरीत परिस्थितियों से निपटने से लेकर स्वास्थ्य और स्वच्छता से जुड़े सामान्य लोगों के अच्छे कार्यों के लिए उन्हें उदार मन से बधाई देना। मोदी जी की 'मन की बात' अनिवार्य रूप से वास्तविक जीवन की कहानियों और अनुभवों के बारे में है। ऐसी कहानियां, जो वास्तविक भारत का दर्शन कराती हैं और इसी वजह से 'मन की बात' का हर एपिसोड अत्यधिक लोकप्रिय होता है।

'मन की बात' का पहला एपिसोड 3 अक्टूबर, 2014 को प्रसारित किया गया था और इसने 30 अप्रैल, 2023 को 100 एपिसोड पूर्ण किये। यह कार्यक्रम अपनी विषय वस्तु, इसकी डिजाइन, बातचीत और आम लोगों तथा समग्र रूप से समाज के साथ संवाद करने के अभिनव तरीकों के मामले में अद्वितीय है। 262 रेडियो स्टेशनों और 375 से अधिक निजी और सामुदायिक रेडियो स्टेशनों के साथ विश्व के सबसे बड़े रेडियो नेटवर्क 'ऑल इंडिया रेडियो' के माध्यम से, भारतीय प्रधानमंत्री सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से विभिन्नता वाली विशाल जनसंख्या तक पहुंचते हैं, उन्हें न केवल सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक मुद्दों पर, बल्कि जलवायु परिवर्तन, अपशिष्ट प्रबंधन, ऊर्जा संकट जैसी चुनौतीपूर्ण समस्याओं पर भी प्रेरित व सक्रिय करते हैं, जिनका सम्पूर्ण विश्व समाज आज सामना कर रहा है।

भारतीय लोक प्रसारक, प्रसार भारती मन की बात का अनुवाद और प्रसारण 52 भाषाओं/बोलियों में करता है, जिसमें 11 विदेशी भाषाएं शामिल हैं, जिससे देश के सबसे दूर-दराज क्षेत्रों से लेकर विदेशों में रहने वाले भारतीयों तक इसकी पहुंच सुनिश्चित हो सके। मन की बात भारत का पहला वर्चुअल रूप से समृद्ध रेडियो कार्यक्रम है, जिसे टी.वी. चैनलों द्वारा एक साथ प्रसारित किया जाता है। दूरदर्शन नैटवर्क के 34 चैनल और 100 से अधिक निजी सैटेलाइट टी.वी. चैनल इस अभिनव कार्यक्रम को देश भर में प्रसारित करते हैं, जो संचार के इस पारंपरिक माध्यम के प्रति एक नई रुचि और जागरूकता पैदा करते हैं। इतने व्यापक प्रभाव के साथ, मन की बात को एक सामाजिक क्रांति के रूप में देखा जा सकता है। इस कार्यक्रम को जनभागीदारी से व जन लोकप्रियता से ठोस आधार प्राप्त होता है।

'मन की बात' के 8 वर्षों के अपने एपिसोड को सफल बनाने के क्रम में, न केवल महत्वपूर्ण विषयों के बारे में जनता में जागरूकता पैदा करने का प्रयास किया गया है, अपितु उन्हें सामाजिक और राष्ट्रीय हितों को लेकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया है। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए गए सामाजिक संदेश कुछ ही घंटों में सोशल मीडिया के ट्रैंड बन जाते हैं और कुछ ही सप्ताहों में एक जन आंदोलन बन जाते हैं।

स्वच्छ भारत अभियान हो या बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ आंदोलन, कोविड टीकाकरण हो या हर घर तिरंगा इसके कुछ उत्कृष्ट उदाहरण हैं। हाल ही में 'मन की बात' के 88वें एपिसोड में प्रधानमंत्री ने जल संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला और नागरिकों से अपने-अपने क्षेत्रों में अमृत सरोवर बनाने का आग्रह किया। 'मन की बात' कार्यक्रम के माध्यम से प्रधानमंत्री ने सफलता पूर्वक कल्याणकारी योजनाओं और नीतियों को हर स्तर पर लोगों तक पहुंचाने और इसके बारे में जागरूकता पैदा करने हेतु एक तंत्र स्थापित किया है। हम सभी के लिये वास्तव में यह गर्व और गौरव का विषय है कि विश्व के सबसे श्रेष्ठ व सबसे व्यस्ततम प्रधानमंत्री जी निर्बाध रूप से सतत् संवाद की एक अनुकरणीय परंपरा का पालन करते हुए मन की बात के द्वारा असंख्य मनों को मनों से जोड़ने की आवाज बन गये हैं। ▪

(लेखक- भाजपा मध्यप्रदेश के प्रदेश संगठन महामंत्री है)

श्री मोदी दिल में बसते हैं- मुख्यमंत्री

प्रधानमंत्री श्री मोदी देशवासियों के दिल में बसते हैं। उनकी मन की बात, देशवासी सुनते भी हैं और आत्मसात भी करते हैं।

प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में देश और प्रदेश बदल रहा है। विंध्य क्षेत्र में भी रोड कनेक्टिविटी और सिंचाई क्षेत्र के साथ ही सभी क्षेत्रों में विकास हुआ है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने किसानों की आय दोगुनी करने का वचन दिया था। प्रदेश में गेहूँ, धान और सरसों का उपार्जन बढ़ा है। प्रधानमंत्री जी की मंशानुरूप किसानों की आय दोगुना करने का काम मध्यप्रदेश की धरती पर पूरा हुआ है। जल जीवन मिशन में ग्रामवासियों को घर में नल से जल उपलब्ध कराने के लिए प्रदेश में व्यापक स्तर पर गतिविधियाँ जारी हैं। विंध्य क्षेत्र को रेल कनेक्टिविटी के साथ नये एयरपोर्ट की सौगात भी मिल रही है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने धरती को बचाने और पर्यावरण-संरक्षण के लिए अपनी भावनाएँ व्यक्त की हैं। प्रदेशवासी पर्यावरण-संरक्षण और धरती की सेहत में सुधार के लिए संकल्पित हों। ▪

वंदे भारत ट्रेन विकास का माध्यम

भारत में नई सोच, नई अप्रोच

मध्य प्रदेश के लिए रेल्वे बजट में 6,00 करोड़ की जगह 13,000 करोड़

मध्य प्रदेश में होंगे 80 वर्ल्ड क्लास स्टेशन

ये हमारे कौशल, हमारे सामर्थ्य, हमारे आत्मविश्वास का भी प्रतीक है। और भोपाल आने वाली ये ट्रेन तो पर्यटन को सबसे ज्यादा मदद करने वाली है।

इससे साँची स्तूप, भीमबेटका, भोजपुर और उदयगिरि गुफा जैसे पर्यटन स्थलों में आवाजाही और बढ़ने वाली है। पर्यटन बढ़ता है तो रोजगार के अनेक अवसर बढ़ने लग जाते हैं, लोगों की आय भी बढ़ती है। यानि ये वंदे भारत, लोगों की आय बढ़ाने का भी माध्यम बनेगी, क्षेत्र के विकास का माध्यम भी बनेगी।

एमपी को अपनी पहली वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन मिली है। वंदे भारत एक्सप्रेस से भोपाल और दिल्ली के बीच का सफर और तेज हो जाएगा। ये ट्रेन प्रोफेशनल्स के लिए, नौजवानों के लिए, कारोबारियों के लिए, नई-नई सुविधा लेकर के आएगी।

रेलवे के इतिहास में बहुत कम ऐसा हुआ होगा कि एक ही स्टेशन पर इतने कम अंतराल में किसी प्रधानमंत्री का दोबारा आना हुआ हो। लेकिन आधुनिक भारत में, नई व्यवस्थाएं बन रही हैं, नई परंपराएं बन रही हैं। यह कार्यक्रम, इसी का उत्तम उदाहरण है।

जो यात्री के रूप में हमारे स्कूल के बच्चे जा रहे थे, मैंने कुछ पल उनके बीच बिताया, उनसे संवाद भी किया। उनके भीतर इस ट्रेन को लेकर जो उत्सुकता थी, उमंग थी, वो देखने योग्य थी। यानि एक तरह से वंदे भारत ट्रेन, विकसित होते भारत की उमंग और तरंग का प्रतीक है।

ये हमारे कौशल, हमारे सामर्थ्य, हमारे आत्मविश्वास का भी प्रतीक है। और भोपाल आने वाली ये ट्रेन तो पर्यटन को सबसे ज्यादा मदद करने वाली है। इससे साँची स्तूप, भीमबेटका, भोजपुर और उदयगिरि गुफा जैसे पर्यटन स्थलों में आवाजाही और बढ़ने वाली है। पर्यटन बढ़ता है तो रोजगार के अनेक अवसर बढ़ने लग जाते हैं, लोगों की आय भी बढ़ती है। यानि ये वंदे भारत, लोगों की आय बढ़ाने का भी माध्यम बनेगी, क्षेत्र के विकास का माध्यम भी बनेगी।

21वीं सदी का भारत अब नई सोच, नई

21वीं सदी का भारत अब नई सोच, नई अप्रोच के साथ काम कर रहा है। पहले की सरकारें तुष्टिकरण में ही इतना व्यस्त रहीं कि देशवासियों के संतुष्टिकरण पर उनका ध्यान ही नहीं गया। वे वोट बैंक के पुष्टिकरण में जुटे हुए थे। हम देशवासियों के संतुष्टिकरण में समर्पित हैं।

अप्रोच के साथ काम कर रहा है। पहले की सरकारें तुष्टिकरण में ही इतना व्यस्त रहीं कि देशवासियों के संतुष्टिकरण पर उनका ध्यान ही नहीं गया। वे वोट बैंक के पुष्टिकरण में जुटे हुए थे। हम देशवासियों के संतुष्टिकरण में समर्पित हैं। पहले की सरकारों में एक और बात पर बड़ा जोर रहा। वो देश के एक ही परिवार को, देश का प्रथम परिवार मानती रहीं। देश के गरीब परिवार, देश के मध्यम वर्गीय परिवार, उन्हें तो उन्होंने अपने हाल पर ही छोड़ दिया था। इन परिवारों की आशाएं, अपेक्षाएं, उन्हें पूछने वाला ही कोई नहीं था। इसका जीता- जागता उदाहरण रही है हमारी भारतीय रेल। भारतीय रेलवे दरअसल सामान्य भारतीय परिवार की सवारी है। माता-पिता, बच्चे, दादा-दादी, नाना-नानी, सबको इकट्ठे जाना हो तो दशकों से लोगों का सबसे बड़ा साधन रेल रही है। क्या सामान्य भारतीय परिवार की इस सवारी को समय के साथ आधुनिक नहीं किया जाना चाहिए था? क्या रेलवे को ऐसे ही बदहाल छोड़ देना सही था?

आजादी के बाद भारत को एक बना-बनाया बहुत बड़ा रेलवे नेटवर्क मिला था। तब की सरकारें चाहतीं तो बहुत तेजी से रेलवे को आधुनिक बना सकती थीं। लेकिन राजनीतिक स्वार्थ के लिए, लोकलुभावन वादों के लिए, रेलवे के विकास को ही बलि चढ़ा दिया गया। हालत तो ये थी आजादी के इतने दशकों बाद भी हमारे नॉर्थ ईस्ट के राज्य, ट्रेन से नहीं जुड़े थे। साल 2014 में जब आपने सेवा का अवसर दिया, तो मैंने तय किया कि अब ऐसा नहीं होगा, अब रेलवे का कायाकल्प होकर रहेगा। बीते 9 वर्षों में ये निरंतर प्रयास रहा है कि भारतीय रेल दुनिया का श्रेष्ठ रेल नेटवर्क कैसे बने? साल 2014 से पहले भारतीय रेल को लेकर क्या-क्या खबरें आती थीं, ये आप भली-भांति जानते हैं। इतने बड़े रेल नेटवर्क में जगह-जगह, हजारों मानव रहित फाटक थे। वहां से अक्सर दुर्घटनाओं की खबरें आती थीं। कभी-कभी स्कूल के बच्चों की मौत की खबरें दिल दहला देती थीं। आज ब्रॉडगेज नेटवर्क , मानव रहित फाटकों से मुक्त हो चुका है। पहले ट्रेनों के दुर्घटना ग्रस्त accident होने और जान-माल की हानि की घटनाएं भी आए दिन आती रहती थी। आज भारतीय रेल बहुत अधिक सुरक्षित हुई है। यात्री सुरक्षा को मजबूती देने के लिए रेलवे में मेड इन इंडिया कवच प्रणाली का विस्तार किया जा रहा है।

सुरक्षा सिर्फ हादसों से ही नहीं है, बल्कि अब सफर के दौरान भी अगर किसी यात्री को शिकायत होती है, तो त्वरित कार्रवाई की जाती है। इमरजेंसी की स्थिति में भी बहुत कम समय में सहायता उपलब्ध कराई जाती है। ऐसी व्यवस्था का सबसे अधिक लाभ हमारी बहनों-बेटियों को हुआ है। पहले साफ-सफाई की शिकायतें भी बहुत आती थीं। रेलवे स्टेशनों पर थोड़ी देर रुकना भी सजा जैसा लगता था। ऊपर से ट्रेनें कई-कई घंटे लेट चला करती थीं। आज साफ-सफाई भी बेहतर है और ट्रेनों के लेट होने की शिकायतें भी निरतंर कम हो रही हैं। पहले तो स्थिति ये थी, लोगों ने शिकायत करना ही बंद कर दिया था, कोई सुनने वाला ही नहीं था। आपको याद होगा, पहले टिकटों की कालाबाजारी तो शिकायतों में सामान्य बात थी। मीडिया में आए दिन, इससे जुड़े स्टिंग ऑपरेशन दिखाए जाते थे। लेकिन आज टेक्नॉलॉजी का उपयोग कर, हमने ऐसी अनेक समस्याओं का समाधान किया है।

आज भारतीय रेलवे, देश के छोटे शिल्पकारों और कारीगरों के उत्पादों को देश के हर कोने तक पहुंचाने का भी बड़ा माध्यम बन रही है। One Station One Product इस योजना के तहत, जिस क्षेत्र में वो स्टेशन है, वहां के प्रसिद्ध कपड़े, कलाकृतियां, पेंटिंग्स, हस्त शिल्प, बर्तन आदि यात्री स्टेशन पर ही खरीद सकते हैं। इसके भी देश में करीब-करीब 600 आउटलेट बनाए जा चुके हैं। बहुत ही कम समय में इनसे एक लाख से ज्यादा यात्री खरीददारी कर चुके हैं।

आज भारतीय रेल, देश के सामान्य परिवारों के लिए सुविधा का पर्याय बन रही है। आज देश में अनेकों रेलवे स्टेशनों का आधुनिकीकरण किया जा रहा है। आज देश के 6 हजार स्टेशनों पर wi-fi की सुविधा दी जा रही है। देश के 900 से ज्यादा प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर सीसीटीवी लगाने का काम पूरा हो चुका है। वंदे भारत एक्सप्रेस तो पूरे देश में, युवा पीढ़ी में सुपरहिट हो चुकी है। साल भर इन ट्रेनों की सीटें फुल जा रही हैं। देश के हर कोने से वंदे भारत चलाने की मांग की जा रही है। पहले सांसदों की चिट्ठियां आती थीं, तो चिट्ठी क्या आती थीं? सांसद लिखते थे फलानी ट्रेन इस स्टेशन पर रोकने की व्यवस्था हो, अभी दो स्टेशन पर रुकती है, तीन पर रोकने की व्यवस्था हो, यहां रोकी जाए, वहां रोकी जाए यही आता था। आज गर्व है, संतोष है जब सांसद चिट्ठी लिखते हैं और मांग करते हैं कि हमारे यहां भी वंदे भारत जल्दी से जल्दी चालू हो।

रेलवे यात्रियों की सुविधाएं बढ़ानें का ये अभियान लगातार बहुत तेज गति से चल रहा है। इस साल के बजट में भी रेलवे को रिकॉर्ड धनराशि दी गई है। एक समय था जब रेलवे के विकास की बात होते ही घाटे की बात की जाती थी। लेकिन अगर विकास की इच्छा शक्ति हो, नीयत साफ हो और निष्ठा पक्की हो तो नए रास्ते भी निकल ही आते हैं। बीते 9 वर्षों में रेलवे के बजट को लगातार बढ़ाया है। मध्य प्रदेश के लिए भी इस बार 13 हजार करोड़ रुपए से अधिक का रेलवे बजट आवंटित किया गया है। जबकि 2014 से पहले मध्य प्रदेश के लिए हर वर्ष औसतन 600 करोड़ रुपया, आप बताइये 600 करोड़ रुपये रेलवे बजट था। कहां 600 करोड़ कहां आज 13 हजार करोड़।

आज रेलवे में कैसे आधुनिकीकरण हो रहा है इसका एक उदाहरण- Electrification का काम भी है। आज आप आए दिन सुन रहे हैं कि देश के किसी ना किसी हिस्से में रेलवे नेटवर्क का शत-प्रतिशत बिजलीकरण हो चुका है। जिन 11 राज्यों में शत-प्रतिशत बिजलीकरण हो चुका है, उसमें मध्य प्रदेश भी शामिल है। 2014 से पहले हर साल average 600 किलोमीटर रेलवे रूट का Electrification होता था। अब हर साल औसतन 6000 किलोमीटर का Electrification हो रहा है। ये है हमारी सरकार के काम करने की रफ्तार।

मध्य प्रदेश आज पुराने दिनों को पीछे छोड़ चुका है। अब मध्य प्रदेश निरंतर विकास की नई गाथा लिख रहा है। खेती हो या फिर उद्योग, आज MP का सामर्थ्य, भारत के सामर्थ्य को विस्तार दे रहा है। विकास के जिन पैमानों पर कभी मध्य प्रदेश को बीमारू कहा जाता था, उनमें से अधिकतर में एमपी का प्रदर्शन प्रशंसनीय है। आज MP गरीबों के घर बनाने में अग्रणी राज्यों में है। हर घर जल पहुंचाने के लिए भी, मध्य प्रदेश अच्छा काम कर रहा है। गेहूं सहित अनेक फसलों के उत्पादन में भी हमारे मध्य प्रदेश के किसान नए रिकॉर्ड बना रहे हैं। उद्योगों के मामले में भी अब ये राज्य निरंतर नए कीर्तिमानों की तरफ बढ़ रहा है। इन सब प्रयासों से यहां युवाओं के लिए अनंत अवसरों की संभावनाएं भी बन रही हैं।

देश में विकास के लिए हो रहे इन प्रयासों के बीच, आप सभी देशवासियों को एक और बात की ओर भी ध्यान खींचवाना चाहता हूं। हमारे देश में कुछ लोग हैं जो 2014 के बाद से ही, ये ठानकर बैठे हैं और पब्लिकली बोले भी हैं और उन्होंने अपना संकल्प घोषित किया है, क्या किया है - उन्होंने अपना संकल्प घोषित किया है। हम मोदी की छवि को धूमिल करके रहेंगे। इसके लिए इन लोगों ने भांति-भांति के लोगों को सुपारी दे रखी है और खुद भी मोर्चा संभाले हुए हैं। इन लोगों का साथ देने के लिए कुछ लोग देश के भीतर हैं और कुछ देश के बाहर भी बैठकर अपना काम कर रहे हैं। ये लोग लगातार कोशिश करते रहे हैं कि किसी तरह मोदी की image को धूमिल कर दें। लेकिन आज भारत के गरीब, भारत का मध्यम वर्ग, भारत के आदिवासी, भारत के दलित-पिछड़े, हर भारतीय आज मोदी का सुरक्षा कवच बना हुआ है। और इसीलिए ये लोग बौखला गए हैं। ये लोग नए-नए पैंतरे अपना रहे हैं। 2014 में उन्होंने मोदी की इमेज, मोदी की छवि धूमिल करने का संकल्प लिया। अब इन लोगों ने संकल्प ले लिया है- मोदी तेरी कब्र खुदेगी। इनकी साजिशों के बीच, हर देशवासी को, देश के विकास पर ध्यान देना है, राष्ट्र निर्माण पर ध्यान देना है। विकसित भारत में मध्य प्रदेश की भूमिका को और बढ़ाना है। ये नई वंदे भारत एक्सप्रेस इसी संकल्प का ही एक हिस्सा है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने दी वंदे भारत ट्रेन की सौगात

शिवराज सिंह चौहान

मध्यप्रदेश के सौभाग्य का फिर से उदय हुआ है। जो कभी पिछली सरकारों में गंदे और बदबू मारते हुए रेलवे स्टेशन होते थे, उनको वर्ल्ड क्लास शानदार रेलवे स्टेशन में बदला गया है, यह मोदी विजन है। प्रधानमंत्री श्री मोदी पहली बार आए तो हबीबगंज रेलवे स्टेशन का नाम रानी कमलापति स्टेशन किया गया, और आज यह वर्ल्ड क्लास रेलवे स्टेशन बना है। इस बार प्रधानमंत्री श्री मोदी प्रदेश को वंदे भारत ट्रेन की सौगात दे रहे हैं। इससे भोपाल से दिल्ली कम समय में पहुँच सकेंगे।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने दिया स्वदेशी का मंत्र

पिछली सरकारों ने विदेशी तंत्र दिया था। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने देश को स्वदेशी का मंत्र दिया है। वंदे भारत रेल पूरी तरह से स्वदेशी है। भोपाल में लगे फौजी मेले में प्रदर्शित युद्ध पोत, टैंक और अन्य उपकरण भी स्वदेशी हैं। यह प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व और मोदी विजन का चमत्कार है। उनके नेतृत्व में पूरे देश के साथ मध्यप्रदेश भी बदल रहा है। वंदे भारत ट्रेन ही नहीं शानदार हाई-वे, साढ़े चार लाख किमी लम्बी सड़कें मध्यप्रदेश की धरती पर बनी हैं। सिंचाई क्षमताओं का विस्तार हुआ है, 98 लाख गरीबों को मकान, 82 लाख गैस कनेक्शन, 80 लाख किसानों को सम्मान निधि, एक करोड़ 15 लाख लोगों को राशन, 3 करोड़ से ज्यादा आयुष्मान कार्ड और 25 लाख लोगों का मुफ्त इलाज दर्शाता है कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में देश के साथ मध्यप्रदेश भी बदल रहा है। धीरे-धीरे नशे पर नियंत्रण भी मोदी विजन का ही एक मंत्र है। इस दिशा में मध्यप्रदेश में शराब की दुकानों के साथ चलने वाले अहाते बंद कर दिये गये हैं।

रानी कमलापति स्टेशन के आधुनिकीकरण ने 1200 स्टेशनों को वर्ल्ड क्लास बनाने का मार्ग प्रशस्त किया

अश्विनी वैष्णव

पिछले 9 वर्षों में प्रधानमंत्री श्री मोदी ने रेलवे में अभूतपूर्व परिवर्तन किए है। विशेष रूप से मध्यप्रदेश में रेलवे के क्षेत्र में प्रधानमंत्री श्री मोदी के विजन के परिणाम स्वरूप बहुत विकास हुआ है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने देश भर में वर्ल्ड क्लास रेलवे स्टेशन बनाने का संकल्प लिया था।

इस संकल्प की सिद्धि में रानी कमलापति रेलवे स्टेशन का महत्वपूर्ण स्थान है। इस स्टेशन के आधुनिकीकरण से जो अनुभव प्राप्त हुए उसके आधार पर प्रधानमंत्री श्री मोदी ने पूरे देश में 1200 स्टेशनों को वर्ल्ड क्लास स्टेशन बनाने का निर्णय लिया है। मध्यप्रदेश में छोटे-बड़े कुल 80 स्टेशनों को वर्ल्ड क्लास बनाने का काम जारी है। जनता को अधिक से अधिक सुविधाएँ मिलें, यह डबल इंजन की सरकार का लक्ष्य है। ▪

पूरे इकोसिस्टम में तेज गति से रोजगार सृजन

राष्ट्रीय रोजगार मेला हमारे कमिटमेंट का प्रमाण

■ चौथा रोजगार मेला ■ रोजगार व स्वरोजगार में बढ़ोत्तरी सुनिश्चित
■ 9 वर्षों में 50,000 नई मेडिकल सीटें मिली

विकसित भारत की संकल्प सिद्धि के लिए सरकार, युवाओं की प्रतिभा और ऊर्जा को सही अवसर देने के लिए प्रतिबद्ध है। केंद्र सरकार के साथ ही गुजरात से लेकर असम तक, उत्तर प्रदेश से लेकर महाराष्ट्र तक, NDA और भाजपा शासित राज्यों में सरकारी नौकरी देने की प्रक्रिया तेज गति से चल रही है। मध्य प्रदेश में 22 हजार से ज्यादा शिक्षकों को नियुक्ति पत्र सौंपे गए। राष्ट्रीय रोजगार मेला भी युवाओं के प्रति हमारे कमिटमेंट का प्रमाण है।

आज भारत, दुनिया की सबसे तेज रफ्तार से आगे बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था है। पूरी दुनिया कोविड के बाद मंदी से जूझ रही है, ज्यादातर देशों की अर्थव्यवस्था लगातार गिरती चली जा रही है। लेकिन इन सबके बीच भारत को दुनिया एक 'bright spot' के तौर पर देख रही है। आज का नया भारत, अब जिस नई नीति और रणनीति पर चल रहा है, उसने देश में नई संभावनाओं और नए अवसरों के द्वार खोल दिए हैं। एक समय था जब भारत टेक्नोलॉजी हो या इंफ्रास्ट्रक्चर, एक प्रकार से Reactive अप्रोच के साथ काम करता था, बस React करना। 2014 के बाद से भारत ने Pro-Active अप्रोच अपनाई है। इसका नतीजा ये हुआ है कि 21वीं सदी का ये तीसरा दशक, रोजगार और स्वरोजगार के वो अवसर पैदा कर रहा है, जिनकी पहले कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। आज युवाओं के सामने कई ऐसे सेक्टर्स खुल गए हैं, जो 10 साल पहले उपलब्ध तक नहीं थे। हमारे सामने स्टार्टअप्स का उदाहरण है। स्टार्टअप्स को लेकर आज भारत के युवाओं में जबरदस्त उत्साह है। एक रिपोर्ट के मुताबिक स्टार्टअप्स ने 40 लाख से ज्यादा direct और indirect jobs तैयार की हैं। इसी तरह ड्रोन इंडस्ट्री है। आज Agriculture हो या Defence सेक्टर, इंफ्रास्ट्रक्चर से जुड़े सर्वे हों या फिर स्वामित्व योजना, ड्रोन की

आज भारत, दुनिया की सबसे तेज रफ्तार से आगे बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था है। पूरी दुनिया कोविड के बाद मंदी से जूझ रही है, ज्यादातर देशों की अर्थव्यवस्था लगातार गिरती चली जा रही है।

लेकिन इन सबके बीच भारत को दुनिया एक 'bright spot' के तौर पर देख रही है। आज का नया भारत, अब जिस नई नीति और रणनीति पर चल रहा है, उसने देश में नई संभावनाओं और नए अवसरों के द्वार खोल दिए हैं।

मांग लगातार बढ़ती जा रही है। इसलिए बहुत सारे युवा Drone Manufacturing, Drone Flying से जुड़ रहे हैं।

बीते 8-9 वर्षों में कैसे देश के स्पोर्ट्स सेक्टर का कायाकल्प हो गया है। आज देशभर में नए स्टेडियम तैयार हो रहे हैं, नई एकेडमी तैयार हो रही है। इनमें कोच, टेक्नीशियन, सपोर्ट स्टाफ की जरूरत पड़ रही है। देश में स्पोर्ट्स का बजट दोगुना होने से भी युवाओं के लिए नए मौके बन रहे हैं।

आत्मनिर्भर भारत अभियान की सोच और अप्रोच सिर्फ स्वदेशी अपनाने और Vocal for Local से कहीं ज्यादा है। ये सीमित दायरे वाला मामला नहीं है। आत्मनिर्भर भारत अभियान, गांव से लेकर शहरों तक भारत में रोजगार के करोड़ों नए अवसर पैदा करने वाला अभियान है।

आज आधुनिक सैटेलाइट्स से लेकर Semi

High Speed Train तक भारत में ही तैयार हो रही है। बीते 8-9 वर्षों में देश में 30 हजार से ज्यादा नए और सुरक्षित LHB Coaches बनाए गए हैं। इनके निर्माण में जो हजारों टन स्टील लगा है, अलग-अलग Products लगे हैं, उन्होंने पूरी सप्लाई चेन में रोजगार के हजारों नए अवसर बनाए हैं।

दशकों तक, भारत के बच्चे विदेशों से import किए गए खिलौनों से ही खेलते रहे। ना तो उनकी क्वालिटी अच्छी थी, ना ही वो भारतीय बच्चों को ध्यान में रखकर बनाए जाते थे। लेकिन कभी किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया। हमने आयात होने वाले खिलौनों के लिए quality parameter तय किए और अपनी स्वदेशी इंडस्ट्री को बढ़ावा देना शुरू किया। 3-4 वर्ष में ही toy industry का कायाकल्प हो गया, और इससे रोजगार के अनेकों नए अवसर तैयार हुए।

हमारे देश में दशकों तक, ये अप्रोच भी हावी रही कि defence equipment सिर्फ आयात किए जा सकते हैं, बाहर से ही आ सकते हैं। हम देश के manufacturers पर ही उतना भरोसा नहीं करते थे। हमारी सरकार ने इस अप्रोच को भी बदल डाला। हमारी सेनाओं ने 300 से ज्यादा ऐसे साजो-सामान और हथियारों की लिस्ट तैयार की है, जो अब भारत में ही बनाए जाएंगे, भारतीय इंडस्ट्री से ही खरीदे जाएंगे। आज भारत 15 हजार करोड़ के defence equipment विदेशों में निर्यात करता है। इससे रोजगार के हजारों अवसर तैयार हुए हैं।

जब देश ने 2014 में सेवा का अवसर दिया, तब भारत में बिकने वाले ज्यादातर मोबाइल फोन आयात किए जाते थे। हमने local production बढ़ाने के लिए incentives दिए। अगर आज भी 2014 से पहले वाली स्थिति होती तो foreign exchange पर हमारे लाखों करोड़ रुपये खर्च हो गए होते। लेकिन अब, हम ना सिर्फ घरेलू जरूरतों को पूरा कर रहे हैं बल्कि मोबाइल फोन का निर्यात भी कर रहे हैं। दुनिया के देशों में पहुंचा रहे हैं। इससे भी रोजगार के हजारों नए अवसर बने हैं।

Employment Generation का एक और पक्ष है, और वो Infrastructure Projects में सरकार द्वारा किया गया Investment. हमारी सरकार Infrastructure Projects में तेज रफ्तार के लिए जानी जाती है। जब सरकार capital expenditure पर खर्च करती है, तो बड़े पैमाने पर इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे रोड, रेलवे, पोर्ट और नई इमारतें बहुत से प्रकार की चीजें तैयार हो जाती हैं। इंफ्रास्ट्रक्चर निर्माण में इंजीनियर, टेक्नीशियन, अकाउंटेंट, श्रमिक, हर प्रकार के, उसमें तरह-तरह के Capital equipment, स्टील, सीमेंट, ऐसी भांति-भांति चीजों की जरूरत पड़ती है। हमारी सरकार के दौरान, पिछले 8-9 वर्षों में Capital expenditure में 4 गुना बढ़ोत्तरी हुई है। इससे रोजगार के नए अवसर और लोगों की आय, दोनों में वृद्धि हुई है। 2014 से पहले 7 दशकों में 20 हजार किलोमीटर के आसपास रेल लाइनों का electrification हुआ था। पिछले 9 वर्षों में करीब-करीब 40 हजार किलोमीटर रेल लाइनों का electrification पूरा किया है। 2014 से पहले, एक महीने में सिर्फ 600 मीटर नई मेट्रो लाइन बनाई जाती थी, 600 मीटर। आज हम हर महीने लगभग 6 किलोमीटर की नई मेट्रो लाइन बना रहे हैं। तब हिसाब मीटर में होता था, आज हिसाब किलोमीटर में हो रहा है। 2014 में देश में 70 से भी कम जिलों में, 70 से भी कम, 70 से भी कम जिलों में गैस नेटवर्क का विस्तार हुआ था। आज ये संख्या बढ़कर 630 जिले तक पहुंच गई है। कहां 70 जिले और कहां 630 जिले। 2014 तक ग्रामीण इलाकों में सड़कों की लंबाई भी 4 लाख किलोमीटर से कम थी। आज ये आंकड़ा भी बढ़कर सवा 7 लाख किलोमीटर से ज्यादा हो चुका है। आप अंदाजा लगा सकते हैं कि जब गांव में सड़क पहुंचती है तो उसका क्या-क्या प्रभाव होता है। इससे पूरे इकोसिस्टम में तेज गति से रोजगार का सृजन होने लगता है।

ऐसे ही काम देश के एविएशन सेक्टर में हुआ है। 2014 तक देश में 74 एयरपोर्ट थे, आज इनकी संख्या 148 हो गई है। हम सभी जानते हैं कि एयरपोर्ट ऑपरेशंस में कितने ज्यादा स्टाफ की जरूरत पड़ती है। आप अनुमान लगा सकते हैं कि इतने नए एयरपोर्ट्स ने भी देश में हजारों नए अवसर तैयार किए हैं। और आपने देखा है कि हाल ही में एयर इंडिया ने रिकॉर्ड संख्या में हवाई जहाज खरीदने का ऑर्डर दिया है। कई और भारतीय कंपनियां भी इसी तैयारी में हैं। यानि, आने वाले दिनों में इस सेक्टर में कैटरिंग से लेकर inflight services तक, maintenance से लेकर on-ground handling तक बड़ी संख्या में नए अवसर तैयार होंगे। ऐसी ही प्रगति हमारे पोर्ट सेक्टर में भी हो रही है। समुद्री तट का जो विकास हो रहा है, हमारे पोर्ट्स जो develop हो रहे हैं, हमारे पोर्ट्स पर, पहले की तुलना में कार्गो हैंडलिंग दोगुनी हो चुकी है, और इसमें लगने वाला समय अब आधा रह गया है। इस बड़े बदलाव ने पोर्ट सेक्टर में भी बड़ी तादाद में नए अवसर तैयार किए हैं।

देश का हेल्थ सेक्टर भी Employment Generation का बेहतरीन उदाहरण बन रहा है। 2014 में भारत में 400 से भी कम मेडिकल कॉलेज थे, आज 660 मेडिकल कॉलेज हैं। 2014 में अंडर ग्रेजुएट मेडिकल सीटों की संख्या करीब 50 हजार थी, आज 1 लाख से ज्यादा सीट उपलब्ध हैं। आज पहले के मुकाबले दोगुनी संख्या में डॉक्टर परीक्षा पास करके तैयार हो रहे हैं। आयुष्मान भारत योजना की वजह से देश में अनेकों नए अस्पताल और क्लीनिक बने हैं। यानी इंफ्रास्ट्रक्चर का हर प्रोजेक्ट रोजगार और स्व-रोजगार उसमें बढ़ोत्तरी सुनिश्चित कर रहा है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए सरकार जो FPOs बना रही है, Self Help Groups को लाखों करोड़ की मदद दे रही है, स्टोरेज कैपेसिटी का विस्तार कर रही है, उससे गांव के युवाओं के लिए अपने गांव में ही रोजगार के अवसर बन रहे हैं। 2014 के बाद से देश में 3 लाख से ज्यादा नए कॉमन सर्विस सेंटर्स बने हैं। 2014 के बाद से देश के गांवों में 6 लाख किलोमीटर से ज्यादा ऑप्टिकल फाइबर बिछाया गया है। 2014 के बाद से देश में तीन करोड़ से ज्यादा घर गरीबों को बनाकर दिए गए हैं। इनमें से ढाई करोड़ से ज्यादा घर गांवों में ही बने हैं। बीते वर्षों में गांवों में 10 करोड़ से ज्यादा शौचालय, डेढ़ लाख से ज्यादा हेल्थ और वेलनेस सेंटर्स, हजारों नए पंचायत भवन। इन सभी निर्माण कार्यों ने गांव में लाखों युवाओं को काम दिया है, रोजगार दिया है। आज जिस तरह Agriculture sector में farm mechanization तेजी से बढ़ा है, उससे भी गांव में रोजगार के नए मौके बन रहे हैं।

आज भारत जिस तरह से अपने लघु उद्योगों की Hand Holding कर रहा है, अपने यहां entrepreneurship को बढ़ावा दे रहा है, इससे बड़ी संख्या में रोजगार का निर्माण सुनिश्चित हो जाता है। हाल ही में प्रधानमंत्री मुद्रा योजना ने 8 वर्ष पूरे किए हैं। इन 8 वर्षों में, मुद्रा योजना के तहत बिना बैंक गारंटी 23 लाख करोड़ रुपए का लोन दिया गया है। इसमें से 70 प्रतिशत लोन महिलाओं को मिला है। इस योजना ने 8 करोड़ नए entrepreneurs तैयार किए हैं, यानि ये वो लोग हैं जिन्होंने मुद्रा योजना की मदद से पहली बार अपना कोई कामकाज शुरू किया है। मुद्रा योजना की सफलता ने देश के करोड़ों

लोगों को स्वरोजगार के लिए हौसला दिया है, नई दिशा दिखाई है।

Grassroot level पर इकोनॉमी की ताकत बढ़ाने में माइक्रो फाइनेंस का कितना महत्व होता है, माइक्रो फाइनेंस कितनी बड़ी शक्ति बनकर के उभरता है, ये हमने इन 8-9 साल में देखा है। बड़े-बड़े भी अपने आपको महारथी मानने वाले, बड़े-बड़े अर्थशास्त्र के पंडित मानने वाले और बड़े-बड़े मालिक तुलाओं को फोन पर कर-कर के लोन देने वाले के आदत वाले लोग पहले कभी भी माइक्रो फाइनेंस की ताकत को नहीं समझ पाए। आज भी, आज भी ये लोग माइक्रो फाइनेंस का मजाक उड़ा रहे हैं। इनको देश के सामान्य मानवीय के सामर्थ्य का समझ ही नहीं है।

जिन लोगों को नियुक्ति पत्र मिला है, ये आपके लिए देश के विकास में योगदान देने का अवसर है। देश 2047 में जब आजादी के 100 साल मनाएगा, विकसित भारत बनने का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रहा है। आपकी जो उम्र है, ये आपके लिए सच्चे अर्थ में अमृतकाल है। आपके जीवन का ये 25 वर्ष देश एक दम से तेज गति से आगे बढ़ने वाला माहौल वाला है और उसमें आप योगदान देने जा रहे हैं। आप कल्पना कर सकते हैं कितने उत्तम कालखंड में, कितने उत्तम अवसर के साथ, देश को आगे बढ़ाने के लिए आज आपके कंधों पर आप नई जिम्मेदारी ले रहे हैं। आपका एक-एक कदम, आपके समय का एक-एक पल देश को तेज गति से विकसित बनाने में काम आने वाला है।

आप एक सरकारी कर्मचारी के तौर पर अपनी यात्रा भले ही शुरू कर रहे हैं। इस यात्रा में हमेशा उन बातों को याद रखना चाहिए और हमेशा अपने आप को एक सामान्य नागरिक के तौर पर आप पिछले 5 साल से, 10 साल से जब से समझने लगे हैं, क्या-क्या महसूस करते थे। सरकार का कौन सा व्यवहार आपको अखरता था। सरकार का कौन सा व्यवहार आपको अच्छा लगता था। आप भी ये जरूर मन में मानिये कि जो बुरे अनुभव आपको आए हैं, आपके रहते हुए किसी भी देश के नागरिक को बुरा अनुभव नहीं आने देंगे। जो आपको बीती होगी, आपके कारण किसी को नहीं बीतेगी, यही बहुत बड़ी सेवा है। अब ये आपकी जिम्मेदारी है कि सरकारी सेवा में आने के बाद, दूसरों की उन उम्मीदों को आप पूरा करें। अपने आपको योग्य बनाएं। आप में से हर कोई किसी ना किसी रूप में अपने कार्य से सामान्य मानवी के जीवन को प्रभावित भी कर सकता है, प्रेरित भी कर सकता है। उसको निराशा की गर्त में डूबते हुए बचा भी सकता है। इससे बड़ा मानवता का क्या काम हो सकता है? आपकी कोशिश होनी चाहिए कि आपके कार्य का सकारात्मक प्रभाव हो, आपके काम से सामान्य मानवी का जीवन बेहतर हो। व्यवस्थाओं पर उसका विश्वास बढ़ना चाहिए।

सरकारी नौकरी पाने के बाद भी सीखने की प्रक्रिया को रुकने ना दें। कुछ नया जानने, नया सीखने का स्वभाव, आपके कार्य और व्यक्तित्व दोनों में प्रभाव लाएगा। ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म iGoT Karmayog से जुड़कर आप अपने स्किल को अपग्रेड कर सकते हैं। मैं हमेशा कहता हूं, मैं मेरे भीतर के विद्यार्थी को कभी मरने नहीं देता हूं। मैं बड़ा विद्वान हूं, मुझे सब आता है, सब मैं सीख चुका हूं, ऐसा भ्रम लेकर के न मैं पैदा हुआ हूं न काम करता हूं। मैं हमेशा अपने आप को विद्यार्थी मानता हूं, हर किसी से सीखने का प्रयास करता हूं। आप भी अपने भीतर के विद्यार्थी को जिंदा रखना, कुछ ना कुछ नया सीखने की कोशिश करते रहना। वो जीवन के नए-नए द्वार खोल देगा। ▪

देश की प्रगति प्राथमिकता : नरेंद्र सिंह तोमर

हम सबके लिए यह कालखंड बहुत ही गर्व का है, जब देश के पास हमारे नेतृत्व के रूप में एक सशक्त नेता श्री नरेंद्र मोदी है। श्री मोदी ऐसे प्रधानमंत्री है, जो देश में विद्यमान छोटे और बड़े व्यक्ति के बारे में भी ध्यान रखते हैं।

हम सबके लिए यह कालखंड बहुत ही गर्व का है, जब देश के पास हमारे नेतृत्व के रूप में एक सशक्त नेता श्री नरेंद्र मोदी है। श्री मोदी ऐसे प्रधानमंत्री है, जो देश में विद्यमान छोटे और बड़े व्यक्ति के बारे में भी उनका रखते हैं। गांवों में बैठे गरीबों-किसानों के जीवन में बदलाव आए, यह उनकी प्राथमिकता है। देश की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, आध्यात्मिक प्रगति हो, यह प्रधानमंत्री श्री मोदी की प्राथमिकता पर है, जिसके लिए वे लगातार प्रयत्नशील रहते हैं।

एक समय था जब भारत दुनिया के राजनीतिक मंच पर पीछे की सीट पर रहता था, कोई बोलने का अवसर नहीं होता था, बोलने के लिए बाट जोहता रहता था, लेकिन पिछले 8-9 साल में श्री मोदी के व्यक्तित्व-कृतित्व, दृढ़ संकल्प, कार्यकुशलता, उनके द्वारा देश में किए जा रहे बदलाव व सुधार तथा उनकी कूटनीति के परिणामस्वरूप आज दुनिया में यह स्थिति निर्मित हुई है कि कोई भी देश या संगठन हो, उसका एजेंडा तब तक नहीं बनता, जब तक कि उस पर भारत अपनी सहमति नहीं दे देता। श्री मोदी जी को पार्टी ने ऐसा गढ़ा है कि जिन्हें सिर्फ नेता ही नहीं, बल्कि दुनिया के महान नेता के रूप में जाना जा रहा है। ▪

प्रधानमंत्री जी जो कहते हैं वो करके दिखाते हैं : विष्णुदत्त शर्मा

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने दस लाख युवाओं को रोजगार देने का संकल्प लिया है। भारत में पहली बार ऐसा नेतृत्व आया है, जिस पर हमें गर्व है। प्रधानमंत्री मोदी जी जो कहते हैं, वो करके भी दिखाते हैं। प्रधानमंत्री जी ने देश भर के 71000 युवाओं को नियुक्ति पत्र प्रदान किये हैं, जो इस संकल्प की पूर्ति की दिशा में एक बड़ा कदम है।

प्रधानमंत्री जी का फोकस युवाओं पर

देश के अंदर युवाओं को, नौजवानों को अवसर देने का काम प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने किया है और प्रधानमंत्री जी का फोकस इन युवाओं पर ही है। नए भारत में मध्यप्रदेश भी एक युवा प्रदेश है और मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में भाजपा की सरकार ने युवा नीति के माध्यम से युवाओं को अनेक अवसर देने का काम किया है।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी ने शिक्षा विभाग में 22400 नौजवानों को नियुक्ति पत्र प्रदान किए हैं।

प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत के प्रति जागा दुनिया का विश्वास

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत के प्रति पूरी दुनिया का विश्वास जागृत हुआ है। मोदी है, तो मुमकिन है यह केवल एक नारा मात्र नहीं है, बल्कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपने काम से इस नारे को साकार करने का काम किया है।

रोजगार मेले से युवाओं के जीवन को एक अच्छी दिशा मिलेगी। इस प्रकार के आयोजनों की आवश्यकता इसलिए महसूस होती है, क्योंकि देश में छल कपट की राजनीति करने वाले कुछ लोग हैं, जो समाज में भ्रम फैलाने का काम करते हैं। ऐसे भ्रम फैलाने वाले लोग आएं और देख लें कि देश में यह चौथा रोजगार मेला है, जिसमें प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में लगातार देश के नौजवानों को अवसर मिल रहे हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत के प्रति पूरी दुनिया का विश्वास जागृत हुआ है। मोदी है, तो मुमकिन है यह केवल एक नारा मात्र नहीं है, बल्कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपने काम से इस नारे को साकार करने का काम किया है।

प्रधानमंत्री जी ने युवाओं की क्षमता को पहचाना: ज्योतिरादित्य सिंधिया

देश के 70 हजार से अधिक युवा, जिंदगी के एक नए मोड़ से आगे बढ़ने को तैयार हैं। देश में दो बड़ी शक्तियां हैं। एक है हमारा जनतंत्र और दूसरी है हमारी जनसंख्या। इन दोनों की ही ताकत के बल पर भारत एक बार फिर विश्वगुरु के पद पर प्रतिष्ठित होगा।

देश की 130 करोड़ आबादी में 70 प्रतिशत से अधिक लोग 35 वर्ष से कम आयु के युवा हैं।

देश के युवाओं की यह संख्या समूचे यूरोप की जनसंख्या से डेढ़ गुना है और विश्व की महाशक्तिअमेरिका की कुल आबादी से तीन गुना है। विश्व में आज अगर किसी के हाथों में परिवर्तन की ताकत है, तो वो युवा हैं। नई सोच, नई संभावना और नए अविष्कारों की शक्ति अगर किसी के हाथ में हैं, तो वो हमारे युवा ही हैं। हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने युवाओं की इस क्षमता को पहचाना और इसी के आधार पर आत्मनिर्भर भारत का संकल्प लिया, जो अब साकार हो रहा है। ▪

लाड़ली बहना योजना कर्मकांड नहीं सामाजिक क्रांति का शंखनाद - मुख्यमंत्री श्री चौहान

■ शिक्षक भर्ती में बहनों को 50% आरक्षण ■ पुलिस भर्ती में बहनों को 30% आरक्षण

लाड़ली बहना योजना से अब हमारी गरीब, निम्न मध्यमवर्गीय बहनों के खाते में प्रतिमाह 1000 रूपए की राशि दी जाएगी।

यह राशि आर्थिक तंगी से जूझ रही महिलाओं के लिए लाभकारी सिद्ध होगी। बच्चों के पोषण स्तर में सुधार होगा और सास-बहू के संबंधों में भी मधुरता आएगी।

लाड़ली बहना योजना कर्मकांड नहीं मध्यप्रदेश में सामाजिक क्रांति का शंखनाद है। पहले लाड़ली लक्ष्मी योजना शुरू हुई थी। अब बहनों के लिए लाड़ली बहना योजना शुरू की गई है। बहनें समृद्ध होंगी तो परिवार समृद्ध होगा। मध्यम और गरीब वर्ग की बहनों की आर्थिक समस्याएँ दूर होंगी। इस योजना से उनके जीवन में खुशहाली आएगी। जब महिलाओं के पास राशि रहेगी तो घर की हालत बदल जाएगी। मध्यप्रदेश में महिलाओं को उनका हक दिलाया जा रहा है। उनके मान-सम्मान का ध्यान रखा जा रहा है। बुजुर्ग महिलाओं की पेंशन 600 से बढ़ाकर 1000 रूपये की जायेगी।

महिलाएँ स्वाभिमान से जिये, प्रदेश की धरती पर अत्याचार नहीं होने देंगे। महिलाओं को शक्तिशाली बनाने के लिए हर ग्राम में लाड़ली बहना सेना बनाई जाएगी। इसमें बहनें शामिल होंगी, जो महिलाओं की सुरक्षा का कार्य करेंगी।

आवासहीनों को रहने के लिए भूमि दी जाएगी। जल, जंगल, जमीन पर जनजातीय वर्ग का भी हक है। उन्हें पेसा नियम में अधिकार दिए गए हैं।

मुलताई में माँ ताप्ती कॉरिडोर बनाया जायेगा। इसकी पूरी रूपरेखा तैयार की जायेगी। संस्थाओं का नाम क्रांतिकारियों के नाम पर रखा जायेगा।

बहनों के सशक्तिकरण के लिए राज्य सरकार द्वारा कई फैसले लिए गए हैं। राजनैतिक सशक्तिकरण के लिए पंचायत और नगरीय निकायों के चुनावों में महिलाओं के आरक्षण के साथ शासकीय सेवाओं में अवसर उपलब्ध कराने के लिए शिक्षक भर्ती में 50 प्रतिशत तथा पुलिस भर्ती में 30 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था की गई। इसमें बेटियों ने भी अपनी प्रतिभा सिद्ध की। राज्य सरकार महिला के नाम से भूमि की रजिस्ट्री कराने पर रजिस्ट्री शुल्क में छूट देती हैं।

लाड़ली बहना योजना से अब हमारी गरीब, निम्न मध्यमवर्गीय बहनों के खाते में प्रतिमाह 1000 रूपए की राशि दी जाएगी। यह राशि आर्थिक तंगी से जूझ रही महिलाओं के लिए लाभकारी सिद्ध होगी। बच्चों के पोषण स्तर में सुधार होगा और सास-बहू के संबंधों में भी मधुरता आएगी।

योजना में ई-केवाईसी बहुत जरूरी है, जिससे राशि सीधे बहनों के खाते में जा सके। बहनों की ई-केवाइसी के लिए राज्य सरकार द्वारा राशि उपलब्ध कराई जा रही है। इसके लिए किसी भी व्यक्ति द्वारा पैसे मांगने की जानकारी मिलने पर तत्काल एफआईआर की जाऐगी।

जिन गाँवों और वार्डों में नेटवर्क के कारण ई-केवाइसी की समस्या है, वहाँ बहनों को अन्य गाँव या वार्ड में ले जाकर ई-केवाइसी कराने के लिए वाहन की व्यवस्था है।

कोई भी आवासहीन नहीं रहेगा

मुख्यमंत्री आवासीय भू-अधिकार योजना में सभी आवासहीनों को रहने के लिए निःशुल्क जमीन दी जाएगी। कोई भी आवासहीन नहीं रहेगा। संसाधनों का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाया जा रहा है। जनजातीय वर्ग को भी जल, जंगल और जमीन का हक दिया जा रहा है। पेसा नियम में पंचायतों में ग्राम सभा में शांति और विवाद निवारण समिति द्वारा गाँव के विवाद गाँव में ही निराकृत किए जा रहे हैं। गरीबों को शोषण से बचाया जाएगा।

अब बेटी को भी अनुकंपा नियुक्ति

शासकीय सेवाओं में पहले बेटे को ही अनुकंपा नियुक्ति दी जाती थी। अब निर्णय लिया गया है कि बेटी को भी अनुकंपा नियुक्ति मिलेगी।

अब अहाता बार नहीं खुलेंगे

प्रदेश में अब अहाते बार नहीं खुलेंगे। सभी अहाते बंद कर दिए गए हैं। कोई सड़क पर या पार्क में शराब नहीं पियेगा। इस व्यवस्था से महिलाओं पर होने वाले अत्याचार रूकेंगे और शराब पर नैतिक अंकुश लगेगा।

शिक्षा के क्षेत्र में सीएम राईज से बदलाव आएगा

मध्यप्रदेश को बदलने की कोशिश की जा रही है। शिक्षा को और बेहतर बनाने के लिए अब पूरे प्रदेश में सीएम राईज स्कूल की स्थापना हो रही है, जिससे बच्चों को बेहतर शिक्षा प्राप्त हो सके। प्रदेश में मेडिकल की पढ़ाई भी अब हिन्दी में कराई जा रही है।

हर घर में नल से जल मिलेगा

बहनों को पानी लाने के लिए अब दूर जाने और हेंडपंप चलाने की जरूरत नहीं है। जल जीवन मिशन से घर में ही नल से जल मिलेगा।

समाज जगाने के लिए सभी को आगे आना होगा

समाज को बदलना है और एक नया मध्यप्रदेश गढ़ना है। इसके लिए सभी को मिल कर कार्य करना होगा। ▪

उनकी याद करें

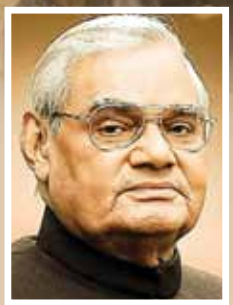

अटल बिहारी वाजपेयी

जो बरसों तक लड़े जेल में, उनकी याद करें।
जो फाँसी पर चढ़े खेल में, उनकी याद करें।

याद करें काला पानी को,
अंग्रेजों की मनमानी को,
कोल्हू में जुट तेल पेरते,
सावरकर से बलिदानी को।

याद करें बहरे शासन को,
बम से थर्राते आसन को,
भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरू
के आत्मोत्सर्ग पावन को।

अन्यायी से लड़ें,
दया की मत फरियाद करें।
उनकी याद करें।
याद करें हम पुर्तगाल को,
जुल्म सितम के तीस साल को,
फौजी बूटों तले क्रांति की,
सुलगी चिनगारी विशाल को।

याद करें सालाजारों को,
जारों के अत्याचारों को,
साइबेरिया के निर्वासित
शिविरों के हाहाकारों को,

स्वतंत्रता के नए समर का शंख निनाद करें।
उनकी याद करें।

बलिदानों की बेला आई,
लोकतंत्र दे रहा दुहाई,
स्वाभिमान से वही जियेगा
जिससे कीमत गई चुकाई।

मुक्ति माँगती शक्ति संगठित,
युक्ति सुसंगत, भक्ति अकम्पित,
कृति तेजस्वी, धृति हिमगिरि-सी
मुक्ति माँगती गति अप्रतिहत।

अंतिम विजय सुनिश्चित, पथ में
क्यों अवसाद करें?
उनकी याद करें।

22,400 से ज्यादा शिक्षकों को मिली नियुक्ति

मध्य प्रदेश में युवाओं को सरकारी नौकरी देने का अभियान तेज गति से चल रहा है। अलग-अलग जिलों में रोजगार मेलों का आयोजन कर, विभिन्न पदों पर हजारों युवाओं की भर्ती की गई हैं। इनमें से 22 हजार 400 से ज्यादा युवाओं की शिक्षक के पद पर भर्ती हुई है।

केंद्र सरकार ने आधुनिक और विकसित भारत की आवश्यकताओं को देखते हुए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की है। ये नीति बच्चों के सर्वांगीण विकास, सम्पूर्ण विकास, ज्ञान, कौशल, संस्कार और भारतीय मूल्यों के संवर्धन पर जोर देती है। इस नीति को प्रभावी रूप से लागू करने में शिक्षकों की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है। मध्य प्रदेश में व्यापक तौर पर शिक्षक नियुक्ति का अभियान इस दिशा में एक बड़ा कदम है। कुल नई भर्तियों में से लगभग आधे शिक्षक, आदिवासी इलाकों के विद्यालयों में नियुक्त होंगे। इतनी बड़ी संख्या में शिक्षकों की नियुक्ति से, सबसे अधिक लाभ ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों को होगा, हमारी भावी पीढ़ी को होगा। MP सरकार ने इस वर्ष 1 लाख से अधिक सरकारी पदों पर भर्ती का लक्ष्य रखा है। इस साल के अंत तक 60 हजार से ज्यादा शिक्षकों की नियुक्ति का भी लक्ष्य है। इन्हीं प्रयासों का परिणाम है कि National Achievement Survey में MP ने शिक्षा की गुणवत्ता में बड़ी छलांग लगाई है। इस रैंकिंग में MP का स्थान 17 वें नंबर से 5 वें नंबर पर पहुंच गया है, यानी 12 नंबर की छलांग और वो भी बिना हो-हल्ला किए, बिना शोर मचाए, बिना विज्ञापनों पर पैसे लुटाए, चुपचाप, इस तरह का कार्य करने के लिए समर्पण चाहिए, समर्पण के बिना ये संभव नहीं होता है। एक प्रकार से साधना भाव चाहिए, शिक्षा के प्रति भक्ति-भाव चाहिए।

आजादी के अमृतकाल में देश, बड़े लक्ष्यों और नए संकल्पों के साथ आगे बढ़ रहा है। इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए विकास के जो कार्य हो रहे हैं,

आजादी के अमृतकाल में देश, बड़े लक्ष्यों और नए संकल्पों के साथ आगे बढ़ रहा है। इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए विकास के जो कार्य हो रहे हैं, वो आज हर सेक्टर में रोजगार के नए अवसर बना रहे हैं। अलग-अलग क्षेत्रों में आज जिस तेज गति से इंफ्रास्ट्रक्चर निर्माण की रफ्तार बढ़ी है, उससे भी रोजगार की नई संभावनाएं बन रही हैं।

वो आज हर सेक्टर में रोजगार के नए अवसर बना रहे हैं। अलग-अलग क्षेत्रों में आज जिस तेज गति से इंफ्रास्ट्रक्चर निर्माण की रफ्तार बढ़ी है, उससे भी रोजगार की नई संभावनाएं बन रही हैं। जैसे, कुछ ही दिन पहले भोपाल से दिल्ली के बीच वंदे भारत ट्रेन की शुरुआत हुई है। इस ट्रेन से प्रोफेशनल्स, कारोबारियों को तो सुविधा मिलेगी ही, साथ ही पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा। One station One product और One district One product ऐसी अनेक योजनाओं से भी स्थानीय उत्पाद, दूर-दूर तक पहुंच रहे हैं। ये सभी योजनाएं, रोजगार बढ़ाने और आय बढ़ाने में मदद कर रही हैं। इसके साथ ही, मुद्रा योजना से उन लोगों को बड़ी मदद मिली है, जो आर्थिक रूप से बहुत कमजोर थे, लेकिन स्वरोजगार करना चाहते थे। सरकार ने पॉलिसी लेवल पर जो बदलाव किए हैं, उसने भारत के स्टार्टअप्स इकोसिस्टम में भी रोजगार के अनेकों नए अवसर बनाए हैं।

रोजगार और स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए सरकार का स्किल डवलपमेंट पर भी विशेष जोर है। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत युवाओं को ट्रेनिंग देने के लिए देश भर में कौशल विकास केंद्र खोले गए हैं। इस वर्ष के बजट में 30 स्किल इंडिया इंटरनेशनल सेंटर खोलने का ऐलान किया गया है। इनमें युवाओं को New Age Technology के द्वारा ट्रेनिंग दी जाएगी। इस साल के बजट में, पीएम विश्वकर्मा योजना के जरिए छोटे कारीगरों को ट्रेनिंग देने के साथ उन्हें MSME से भी जोड़ने की पहल की गई है। MP में जिन हजारों शिक्षकों की नियुक्ति हुई है, वे अपने पिछले 10-15 वर्ष के जीवन को देखें। पाएंगे कि जिन लोगों ने आपके जीवन में सबसे ज्यादा प्रभाव डाला, उनमें आपकी माता जी और आपके शिक्षक जरूर हैं। जिस तरह से ये आपके हृदय में हैं, आपके शिक्षक आपके हृदय में हैं, वैसे ही आपको अपने विद्यार्थियों के दिल में जगह बनानी है। आपको इस बात का हमेशा ध्यान रखना है कि आपकी शिक्षा, देश का सिर्फ वर्तमान ही नहीं बल्कि भविष्य भी संवारेगी। आपकी दी गई शिक्षा सिर्फ एक विद्यार्थी में ही नहीं बल्कि समाज में भी परिवर्तन लाएगी। आप जिन मूल्यों को आगे बढ़ाएंगे वो सिर्फ आज की पीढ़ी की ही नहीं बल्कि आने वाली कई पीढ़ियों पर सकारात्मक प्रभाव पैदा करेगी। बच्चों की शिक्षा और उनके संपूर्ण विकास के लिए आप हमेशा समर्पित रहिएगा। मैं मेरे भीतर के विद्यार्थी को कभी मरने नहीं देता। आप शिक्षक भले है लेकिन आपके भीतर के विद्यार्थी को हमेशा जागृत रखिए, हमेशा चेतनवंत रखिए। आपके भीतर का विद्यार्थी ही आपको जीवन की अनेक नई ऊँचाईयों पर पहुंचाएगा। ▪

भाजपा किसानों के साथ है और हमेशा रहेगी

लक्ष्य : 2024 तक किसानों की आय दोगुनी

कांग्रेस के शासनकाल में खरीफ की फसल में दो पानी नहीं दे पाते थे लेकिन भाजपा नीत सरकार की नीति का परिणाम है कि आज ग्रीष्मकालीन मूंग की फसल में 5-5 पानी तक हम दे पा रहे हैं।

किसान अपनी फसल के उपार्जन हेतु घंटों मंडियों में लाइन लगाकर अनाज बेच पाता था किंतु आज किसानों के खेत के आसपास उपार्जन केन्द्र देने का काम मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने किया है।

खेती को लाभ का धंधा बनाने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान निरंतर प्रयास कर रहे हैं। कांग्रेस के शासनकाल में खरीफ की फसल में दो पानी नहीं दे पाते थे लेकिन भाजपा नीत सरकार की नीति का परिणाम है कि आज ग्रीष्मकालीन मूंग की फसल में 5-5 पानी तक हम दे पा रहे हैं।

किसान अपनी फसल के उपार्जन हेतु घंटों मंडियों में लाइन लगाकर अनाज बेच पाता था किंतु आज किसानों के खेत के आसपास उपार्जन केन्द्र देने का काम मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने किया है। केन्द्र में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और प्रदेश में मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने किसानी को लाभ का धंधा बनाया है। अत्यधिक रसायनों के उपयोग से आज कृषि योग्य भूमि अत्यधिक कड़क हो गयी है और उस पर फसल उगाना कठिन हो गया है। ऐसे में प्राकृतिक कृषि ही स्थायी समाधान है। इससे जमीन की उपजाऊ क्षमता बढ़ेगी और कृषि की लागत घटेगी। जिसके फलस्वरूप 2024 तक प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कथनानुसार किसानों की आय को दोगुना करने के लक्ष्य को प्राप्त कर पायेंगे। प्रदेश की सबसे बड़ी आबादी किसानों की है। किसान के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान संकल्पित हैं।

वर्तमान में बेमौसम और ओला वृष्टि से किसानों की फसलों को नुकसान हुआ है। सरकार निरंतर सर्वे करवा रही है। किसानों को जल्दी ही राहत राशि एवं बीमा की राशि भी दी जायेगी। आरबीसी 64 में परिवर्तन करके किसानों को अधिक से अधिक मुआवजा देने का काम भाजपा सरकार करेगी। सीमांत किसानों के फसल बीमा की किश्त भाजपा सरकार देगी और बीमा का लाभ भी किसानों को मिलेगा। ▪

रीवा की धरती शूरवीरों की है, देश के लिए मर-मिटने वालों की है

जनसेवा से राष्ट्र सेवा

ये निश्चित रूप से भारत के लोकतंत्र की बहुत ही सशक्त तस्वीर है। हम सभी जनता के प्रतिनिधि हैं। हम सभी इस देश के लिए, इस लोकतंत्र के लिए समर्पित हैं। काम के दायरे भले ही अलग-अलग हों, लेकिन लक्ष्य एक ही है- जनसेवा से राष्ट्र सेवा। गांव-गरीब का जीवन आसान बनाने के लिए जो भी योजनाएं केंद्र सरकार ने बनाई हैं, उन्हें पंचायतें पूरी निष्ठा से जमीन पर उतार रही हैं।

ई-ग्राम स्वराज और GeM पोर्टल को मिलाकर जो नई व्यवस्था लॉन्च की गई है, उससे आपका काम और आसान होने वाला है। पीएम स्वामित्व योजना के तहत भी देश के 35 लाख ग्रामीण परिवारों को प्रॉपर्टी कार्ड दिए गए हैं। मध्य प्रदेश के विकास से जुड़ी 17 हजार करोड़ रुपए से अधिक की परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण भी हुआ है। इसमें रेलवे के प्रोजेक्ट्स हैं, गरीबों को पक्के घर के प्रोजेक्ट्स हैं, पानी से जुड़ी परियोजनाएं हैं। गांव-गरीब का जीवन आसान बनाने वाले, रोजगार का निर्माण करने वाले प्रोजेक्ट्स हैं।

आजादी के इस अमृतकाल में, सभी देशवासियों ने विकसित भारत का सपना देखा है और उसे पूरा करने के लिए दिन रात मेहनत कर रहे हैं। भारत को विकसित बनाने के लिए, भारत के गांवों की सामाजिक व्यवस्था को विकसित करना जरूरी है। भारत को विकसित बनाने के लिए, भारत के गांवों की आर्थिक व्यवस्था को विकसित करना जरूरी है। भारत को विकसित बनाने के लिए, भारत के गांवों की पंचायती व्यवस्था को भी विकसित करना जरूरी है। इसी सोच के साथ हमारी सरकार, देश की पंचायती राज व्यवस्था को मजबूत करने के लिए लगातार काम कर रही है। पहले की सरकारों ने कैसे पंचायतों से भेदभाव किया और उनसे उल्टा कैसे हम उन्हें सशक्त कर रहे हैं, पंचायतों में सुविधाएं बढ़ा रहे हैं, ये आज गांव वाले भी देख रहे हैं, देश भर के लोग भी देख रहे हैं। 2014 के पहले पंचायतों के लिए वित्त आयोग का अनुदान 70 हजार करोड़ रुपए से भी कम था।

आजादी के इस अमृतकाल में, सभी देशवासियों ने विकसित भारत का सपना देखा है और उसे पूरा करने के लिए दिन रात मेहनत कर रहे हैं। भारत को विकसित बनाने के लिए, भारत के गांवों की सामाजिक व्यवस्था को विकसित करना जरूरी है।

भारत को विकसित बनाने के लिए, भारत के गांवों की आर्थिक व्यवस्था को विकसित करना जरूरी है। भारत को विकसित बनाने के लिए, भारत के गांवों की पंचायती व्यवस्था को भी विकसित करना जरूरी है।

2014 से पहले 70 हजार करोड़ से कम क्या इतनी कम राशि से इतना बड़ा देश इतनी सारी पंचायतें कैसे अपना काम कर पातीं? 2014 में हमारी सरकार आने के बाद पंचायतों को मिलने वाला ये अनुदान 70 हजार से बढ़ाकर 2 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा हो गया है। अब आप अंदाजा लगा सकते हैं काम

कैसे करते हैं।

2014 से पहले के 10 वर्षों में, केंद्र सरकार की मदद से 6 हजार के आसपास ही पंचायत भवन बनवाए गए थे। पूरे देश में करीब-करीब 6 हजार पंचायत घर बने थे। हमारी सरकार 8 साल के अंदर-अंदर 30 हजार से ज्यादा नए पंचायत भवनों का निर्माण करवा चुकी है। अब ये आंकड़ा भी बताएगा कि हम गांवों के लिए कितने समर्पित हैं। पहले की सरकार ने ग्राम पंचायतों तक ऑप्टिकल फाइबर पहुंचाने की योजना भी शुरू की थी। लेकिन उस योजना के तहत देश की 70 से भी कम 100 भी नहीं, 70 से भी कम ग्राम पंचायतों को ऑप्टिकल फाइबर से जोड़ा गया था। वो भी शहर के बाहर जो नजदीक में पंचायत पड़ती थी वहां पर गए थे। ये हमारी सरकार है, जो देश की दो लाख से ज्यादा पंचायतों तक ऑप्टिकल फाइबर को ले गई है। फर्क साफ है।

आजादी के बाद की सरकारों ने कैसे भारत की पंचायती राज व्यवस्था को ध्वस्त किया। जो व्यवस्था आजादी के भी सैकड़ों वर्ष, हजारों वर्षों पहले से थी, उसी पंचायती राज व्यवस्था पर आजादी के बाद भरोसा ही नहीं किया गया। पूज्य बापूजी कहते थे, भारत की आत्मा गांवों में बसती है। लेकिन कांग्रेस ने गांधी के विचारों को भी अनसुना कर दिया। नब्बे के दशक में पंचायती राज के नाम पर खानापूर्ति जरूर की गई, लेकिन फिर भी पंचायतों की तरफ वो ध्यान नहीं दिया गया, जिसकी जरूरत थी।

2014 के बाद से, देश ने अपनी पंचायतों के सशक्तिकरण का बीड़ा उठाया है। और आज इसके परिणाम नजर आ रहे हैं। आज भारत की पंचायतें, गांवों के विकास की प्राणवायु बनकर उभर रही हैं। ग्राम पंचायतें, गांव की आवश्यकता के अनुसार गांव का विकास करें इसके लिए ग्राम पंचायत विकास योजना बनाकर काम किया जा रहा है।

हम पंचायतों की मदद से गांवों और शहरों के बीच की खाई को भी लगातार कम कर रहे हैं। डिजिटल क्रांति के इस दौर में अब पंचायतों को भी स्मार्ट बनाया जा रहा है। आज पंचायत स्तर पर योजनाएं बनाने से लेकर उन्हें लागू करने तक में टेक्नोलॉजी का भरपूर इस्तेमाल हो रहा है। जैसे आप लोग अमृत सरोवर पर इतना काम कर रहे हैं। इन अमृत सरोवरों के लिए जगह चुनने में, काम पूरा करने में हर स्तर पर टेक्नोलाजी का खूब इस्तेमाल हुआ है।

ई-ग्राम स्वराज - GeM इंटीग्रेटेड पोर्टल से पंचायतों के माध्यम से होने वाली खरीद की प्रक्रिया, सरल और पारदर्शी बनेगी। इससे अब पंचायतों को कम कीमत में सामान मिलेगा और स्थानीय छोटे उद्योगों को भी अपना सामान बेचने का एक सशक्त माध्यम मिल जाएगा। दिव्यांगों के लिए ट्राइसिकल हो या बच्चों की पढ़ाई से जुड़ी चीजें, पंचायतों को ये सब सामान, इस पोर्टल पर आसानी से मिलेगा।

आधुनिक टेक्नॉलॉजी का एक और लाभ, हम पीएम स्वामित्व योजना में भी देख रहे हैं। हमारे यहां गांव के घरों के प्रॉपर्टी के कागजों को लेकर बहुत उलझनें रही हैं। इसके चलते भांति-भांति के वाद - विवाद होते हैं, अवैध कब्जों की आशंका होती है। पीएम स्वामित्व योजना से अब ये सारी स्थितियां बदल रही हैं। आज गांव-गांव में ड्रोन टेक्नॉलॉजी से सर्वे हो रहा है, मैप बन रहे हैं। इसके आधार पर बिना किसी भेदभाव के कानूनी दस्तावेज लोगों के हाथ में सौंपे जा रहे हैं। अभी तक देशभर में 75 हजार गांवों में प्रॉपर्टी कार्ड देने का कार्य पूरा हो चुका है। मध्य प्रदेश की सरकार इसमें बेहतरीन काम कर रही है।

छिंदवाड़ा के जिन लोगों पर, आपने लंबे समय तक भरोसा किया, वो आपके विकास को लेकर, इस क्षेत्र के विकास को लेकर इतना उदासीन क्यों रहे? इसका जवाब, कुछ राजनीतिक दलों की सोच में है। आजादी के बाद जिस दल ने सबसे ज्यादा समय तक सरकार चलाई, उसने ही हमारे गांवों का भरोसा तोड़ दिया। गांव में रहने वाले लोग, गांव के स्कूल, गांव की सड़कें, गांव की बिजली, गांव में भंडारण के स्थान, गांव की अर्थव्यवस्था, कांग्रेस शासन के दौरान सबको सरकारी प्राथमिकताओं में सबसे निचले पायदान पर रखा गया।

देश की आधी से ज्यादा आबादी जिन गांवों में रहती है, उन गांवों के साथ इस तरह सौतेला व्यवहार करके देश आगे नहीं बढ़ सकता। इसलिए 2014 के बाद, जब आपने हमें सेवा का अवसर दिया, तो हम गांव की अर्थव्यवस्था को, गांव में सुविधाओं को, गांव के लोगों के हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता में ले आए हैं। उज्ज्वला योजना के तहत जो 10 करोड़ गैस कनेक्शन मिले, वो गांव के लोगों को ही तो मिले हैं। हमारी सरकार में गरीबों के जो देश भर में पौने चार करोड़ से भी अधिक घर बने हैं, उसमें से तीन करोड़ से अधिक घर

देश की आधी से ज्यादा आबादी जिन गांवों में रहती है, उन गांवों के साथ इस तरह सौतेला व्यवहार करके देश आगे नहीं बढ़ सकता। इसलिए 2014 के बाद, जब आपने हमें सेवा का अवसर दिया, तो हम गांव की अर्थव्यवस्था को, गांव में सुविधाओं को, गांव के लोगों के हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता में ले आए हैं।

गांव में ही तो बने हैं। और इसमें भी बड़ी बात ये है कि इन ज्यादातर घरों में मालिकाना हक, हमारी बहनों-बेटियों, माताओं का भी है। हमारे यहां एक ऐसी ट्रेडिशन चली, घर हो तो पुरुष के नाम पर, दुकान हो पुरुष के नाम पर, गाड़ी हो पुरुष के नाम पर, खेत हो पुरुष के नाम पर, महिलाओं के नाम पर कुछ होता ही नहीं था। हमने ये रिवाज बदला है और मालिकाना हक हमारी माताएं, बहनें, बेटियां को दिया है।

भाजपा की सरकार ने देश की करोड़ों महिलाओं को घर की मालकिन बनाया है। और आप जानते हैं आज के समय में पीएम आवास का हर घर लाख रुपए से भी ज्यादा कीमत का होता है। यानि भाजपा ने देश में करोड़ों दीदियों को लखपति दीदी बनाया है। इन सभी लखपति दीदियों को प्रणाम करता हूं आप आशीर्वाद दीजिए कि देश में और कोटि-कोटि दीदी भी लखपति बनें इसके लिए हम काम करते रहें।

चार लाख लोगों का उनके अपने पक्के घर में गृह प्रवेश हुआ है। इसमें भी बहुत बड़ी संख्या में लखपति दीदी बन गई है।

पीएम सौभाग्य योजना के तहत जिन ढाई करोड़ घरों में बिजली पहुंची, उनमें से ज्यादातर गांव के ही घर हैं। गांव के रहने वाले मेरे भाई-बहन हैं।

गांव के लोगों के लिए हमारी सरकार ने हर घर जल योजना भी शुरू की है। सिर्फ तीन-चार साल में इस योजना की वजह से देश के 9 करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को घर में नल से जल मिलने लगा है। एमपी में भी गांव में रहने वाले सिर्फ 13 लाख परिवारों तक नल से जल पहुंचता था। पहले की बात करता हूं। आज एमपी के गांवों में करीब-करीब 60 लाख घरों तक नल से जल पहुंचने लगा है। ▪

गांव के लोगों का पहले देश के बैंकों पर अधिकार ही नहीं माना जाता था, भूला दिया गया था। गांव के ज्यादातर लोगों के पास ना बैंक खाते होते थे और ना ही उन्हें बैंकों से सुविधा मिलती थीं।

बैंक खाता ना होने की वजह से, सरकार जो पैसा गरीबों के लिए भेजती थी, वो भी बीच में ही लुट जाता था। हमारी सरकार ने इसे भी पूरी तरह बदल दिया है। हमने जनधन योजना चलाकर गांव के 40 करोड़ से ज्यादा लोगों के बैंक खाते खुलवाए। हमने India Post Payments Bank के माध्यम से पोस्ट ऑफिस का उपयोग करके गांवों तक बैंकों की पहुंच बढ़ाई। हमने लाखों बैंक मित्र बनाए, बैंक सखियों को प्रशिक्षित किया। आज इसका प्रभाव देश के हर गांव में नजर आ रहा है। देश के गाँवों को जब बैंकों की ताकत मिली है, तो खेती-किसानी से लेकर व्यापार कारोबार तक, सब में गांव के लोगों की मदद हो रही है।

पहले की सरकारों ने भारत के गांवों के साथ एक और बड़ा अन्याय किया था। पहले की सरकारें गांव के लिए पैसे खर्च करने से बचती थीं। गांव अपने आप में कोई वोट बैंक तो था ही नहीं, इसलिए उन्हें नजर-अंदाज किया जाता था। गांव के लोगों को बांटकर कई राजनीतिक दल अपनी दुकान चला रहे थे। भारतीय जनता पार्टी ने गांवों के साथ हो रहे इस अन्याय को भी समाप्त कर दिया है। सरकार ने गांवों के विकास के लिए भी तिजोरी खोल दी। आप देखिए, हर घर जल योजना पर साढ़े तीन लाख करोड़ रुपए से ज्यादा खर्च किया जा रहा हैं।

पीएम आवास योजना पर भी लाखों करोड़ रुपए खर्च किए जा रहे हैं। दशकों से अधूरी पड़ी सिंचाई परियोजनाओं को पूरा करने के लिए एक लाख करोड़ रुपए खर्च किए जा रहे हैं। पीएम ग्रामीण सड़क योजना पर भी हजारों करोड़ रुपए खर्च किए जा रहे हैं। पीएम किसान सम्मान निधि के तहत भी सरकार ने करीब-करीब ढाई लाख करोड़ रुपए सीधे किसानों के बैंक खातों में भेजे हैं।

एमपी के लगभग 90 लाख किसानों को भी साढ़े 18 हजार करोड़ रुपए इस योजना के तहत मिले हैं। इस निधि से रीवा के किसानों को भी करीब-करीब 500 करोड़ रुपए मिले हैं। हमारी सरकार ने जो MSP बढ़ाई है, उससे भी गांवों में हजारों करोड़ रुपए अतिरिक्त पहुंचे हैं। कोरोना के इस काल में पिछले तीन साल से हमारी सरकार गांव में रहने वाले गरीबों को मुफ्त राशन दे रही है। गरीब कल्याण की इस योजना पर भी 3 लाख करोड़ रुपए से अधिक खर्च किए जा रहे हैं।

जब गांव में विकास के इतने काम होते हैं, जब इतना सारा पैसा खर्च होता है, तो गांव में रोजगार के अवसर भी बनते हैं। गांवों में रोजगार-स्वरोजगार को गति देने के लिए, गांव के लोगों को गांव में ही काम देने के लिए केंद्र सरकार मुद्रा योजना भी चला रही है। मुद्रा योजना के तहत लोगों को बीते वर्षों में 24 लाख करोड़ रुपए की मदद दी गई है। इससे गांवों में भी करोड़ों लोगों ने अपना रोजगार शुरु किया है। मुद्रा योजना की बहुत बड़ी लाभार्थी भी हमारी बहनें हैं, बेटियां हैं, माताएं हैं।

हमारी सरकार की योजनाएं किस तरह गांव में महिला सशक्तिकरण कर रही हैं, गांव में महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त कर रही हैं, उसकी चर्चा आज हर तरफ है। बीते 9 साल में 9 करोड़ महिलाएं सेल्फ हेल्प ग्रुप में शामिल हुई हैं।

मध्य प्रदेश में भी 50 लाख से ज्यादा महिलाएं स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी हैं। हमारी सरकार में हर स्वयं सहायता समूह को बिना बैंक गारंटी 20 लाख रुपए तक का ऋण दिया जा रहा है। कितने ही लघु उद्योगों की कमान अब महिलाएं ही संभाल रही हैं। यहां तो राज्य सरकार ने हर जिले में दीदी कैफे भी बनाया है। पिछले पंचायत चुनावों में सेल्फ हेल्प ग्रुप से जुड़ी करीब 17 हजार बहनें पंचायत प्रतिनिधी के तौर पर चुनी गयी हैं। ये अपने आप में बड़े गर्व की बात है।

आजादी के अमृत महोत्सव में समावेशी विकास का अभियान भी शुरू हुआ है। ये विकसित भारत के निर्माण के लिए सबका प्रयास के भाव को सशक्त करने वाला है। विकसित भारत के लिए देश की हर पंचायत, हर संस्था का प्रतिनिधि, हर नागरिक हम सबको को जुटना होगा। ये तभी संभव है जब हर मूल सुविधा तेजी से शत-प्रतिशत लाभार्थी तक पहुंचे, बिना किसी भेदभाव के पहुंचे। इसमें सभी पंचायत प्रतिनिधियों की भूमिका बहुत बड़ी है।

पंचायतों द्वारा खेती से जुड़ी नई व्यवस्थाओं को लेकर भी जागरूकता अभियान चलाने की जरूरत है। प्राकृतिक खेती को लेकर आज देश में बहुत व्यापक स्तर पर काम चल रहा है। केमिकल खेती के नुकसान के बारे में चर्चा हुई है। हमारी बेटियों ने धरती मां की तकलीफ के बारे में हम सभी को बताया। नाट्य प्रयोग करके धरती मां की वेदना हम तक पहुंचाई है। केमिकल वाली खेती से धरती मां का जो नुकसान हो रहा है, बहुत ही आसान तरीके से बेटियों ने सबको समझाया है। धरती की ये पुकार हम सभी को समझनी होगी। हमें हमारी मां को मारने का हक नहीं है। ये धरती हमारी मां है। उस मां को मारने का हमें अधिकार नहीं है। पंचायतें, प्राकृतिक खेती को लेकर जनजागरण अभियान चलाएं। छोटे किसान हों, पशुपालक हों, मछुआरे भाई-बहन हों, इनकी मदद के लिए जो अभियान केंद्र सरकार चला रही है, उसमें भी पंचायतों की बड़ी भागीदारी है। जब आप विकास से जुड़ी हर गतिविधि से जुड़ेंगे, तो राष्ट्र के सामूहिक प्रयासों को बल मिलेगा। यही अमृतकाल में विकसित भारत के निर्माण की ऊर्जा बनेगी।

पंचायती राज दिवस पर, मध्य प्रदेश के विकास को नई गति देने वाली कई और परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकार्पण हुआ है। छिन्दवाड़ा-नैनपुर-मंडला फोर्ट रेल लाइन के बिजलीकरण से इस क्षेत्र के लोगों की दिल्ली-चेन्नई और हावड़ा-मुंबई तक कनेक्टिविटी और आसान हो जाएगी। इसका बड़ा लाभ हमारे आदिवासी भाई-बहनों को भी होगा। छिन्दवाड़ा-नैनपुर के लिए नई ट्रेनें भी शुरू हुई हैं।

इन नई ट्रेनों के चलने से कई कस्बे और गांव, अपने जिला मुख्यालय छिंदवाड़ा, सिवनी से सीधे जुड़ जाएंगे। इन ट्रेनों की मदद से नागपुर और जबलपुर जाना भी आसान हो जाएगा। जो रीवा-इतवारी-छिंदवाड़ा नई ट्रेन चली है, उससे भी अब सिवनी और छिन्दवाड़ा, सीधे नागपुर से जुड़ जायेंगे। ये पूरा क्षेत्र तो अपने वन्य जीवों के लिए बहुत प्रसिद्ध है।

यहां की बढ़ती हुई कनेक्टिविटी, यहां पर्यटन भी बढ़ाएगी और रोजगार के नए अवसर भी बनाएगी। इसका बड़ा लाभ यहां के किसानों को होगा, विद्यार्थियों को होगा, रेलवे के डेली पैसेंजर्स को होगा, छोटे कारोबारियों और दुकानदारों को होगा। यानि डबल इंजन की सरकार ने आपकी खुशियां भी डबल कर दी हैं।

सभी के आशीर्वाद, सभी के स्नेह और सभी के योगदान की वजह से ही मन की बात, इस मुकाम तक पहुंचा है। मध्य प्रदेश के अनेकों लोगों की उपलब्धियों का जिक्र मन की बात में किया है। यहां के लोगों की लाखों चिट्ठियां और संदेश भी मिलते रहे हैं। ▪

महिलाओं को सशक्त बनाना प्राथमिकता

महिला सशक्तिकरण भारतीय जनता पार्टी की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है। इसके लिए केंद्र और राज्य सरकारें अनेक योजनाएं चला रही हैं, जिनके परिणाम भी अब सामाजिक परिवर्तनों के रूप में दिखाई देने लगे हैं। सरकार की इन योजनाओं का लाभ अधिक से अधिक बहनों तक पहुंचाना, महिला सशक्तिकरण की उपलब्धियों को घर-घर तक पहुंचाना और आधी आबादी को पार्टी से जोड़ना महिला मोर्चा कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी है। इस दृष्टि से आगामी चुनावों में महिला मोर्चा कार्यकर्ताओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रहने वाली है और वे इसके लिए तैयार रहें।

महिलाओं को राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक रूप से सशक्त बना रही हमारी सरकार: चौहान

हमारी सरकार ने देश में पहली बार निकाय चुनाव में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण देकर उन्हें राजनीतिक रूप से सशक्त बनाया है। इन निकायों के निर्वाचित जनप्रतिनिधियों में 58 प्रतिशत महिलाएं हैं। सामाजिक सशक्तिकरण के लिए हमने लाड़ली लक्ष्मी योजना शुरू की, जिसने प्रदेश में बेटों-बेटियों का लिंगानुपात ही बदल दिया है। अब 1000 बेटों पर 976 बेटियां जन्म ले रही हैं।

आर्थिक सशक्तिकरण के क्षेत्र में हमने महिलाओं के नाम पर संपत्ति की रजिस्ट्री 2 प्रतिशत शुल्क पर करने का प्रावधान करके उन्हें संपत्ति का मालिक बनाया है। अब 60 प्रतिशत रजिस्ट्रियां महिलाओं के नाम पर होती हैं। प्रधानमंत्री आवास और मुख्यमंत्री आवासीय भूमि योजना में संपत्ति के मालिक पति और पत्नी दोनों ही होते हैं।

हमने महिलाओं को आर्थिक रूप से सक्षम बनाने के लिए शिक्षकों की भर्ती में 50 प्रतिशत और पुलिस भर्ती में 30 प्रतिशत आरक्षण दिया। हमारी सरकार ने ये प्रावधान किया है कि अगर हमारी कोई बहन उद्योग लगाती है, तो उसे विशेष छूट दी जाएगी। महिलाओं के लिए अलग से इंडस्ट्रियल स्टेट बनाया जाएगा। महिलाओं में आत्मविश्वास और स्वाभिमान जगाने तथा उन्हें स्वाबलंबी बनाने के लिए हमारी सरकार ने हाल ही में लाड़ली बहना योजना शुरू की है। महिला सशक्तिकरण के लिए हमारी सरकारें क्या-क्या उपाय कर रही हैं, महिला मोर्चा यह बात हर बहन को समझाए।

हमारी सरकार ने देश में पहली बार निकाय चुनाव में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण देकर उन्हें राजनीतिक रूप से सशक्त बनाया है। इन निकायों के निर्वाचित जनप्रतिनिधियों में 58 प्रतिशत महिलाएं हैं।

सामाजिक सशक्तिकरण के लिए हमने लाड़ली लक्ष्मी योजना शुरू की, जिसने प्रदेश में बेटों-बेटियों का लिंगानुपात ही बदल दिया है। अब 1000 बेटों पर 976 बेटियां जन्म ले रही हैं।

नशे के खिलाफ भाजपा के अभियान का प्रचार-प्रसार करे मोर्चा

1 अप्रैल से प्रदेश में सारे अहाते बंद हो गए हैं। लोग अहातों में शराब पीते थे, गाड़ी चलाते थे और अपने साथ दूसरों की जिंदगी को खतरे में डालते थे। नशे में चूर लोग महिलाओं के सम्मान पर आघात करते थे। हमने ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए नशे की प्रवृत्ति पर नैतिक अंकुश लगाने का प्रयास किया है। हमने तय किया है कि मंदिर, स्कूल, धार्मिक एवं सार्वजनिक महत्व के स्थलों के 100 मीटर के दायरे में कोई शराब दुकान नहीं होगी। शराब पीकर अगर कोई गाड़ी चलाता पकड़ा जाएगा, तो उसका लायसेंस रद्द कर दिया जाएगा। यह नशे के खिलाफ भाजपा का अभियान है

और इस अभियान की महिलाओं की सुरक्षा में कितनी अहम भूमिका है, महिला मोर्चा कार्यकर्ता यह बात प्रत्येक बहन को समझाएं, इसका सोशल मीडिया पर प्रचार-प्रसार करें।

सरकारी योजनाओं से सबसे ज्यादा प्रभावित महिलाएं, उन्हें पार्टी से जोड़े महिला मोर्चा : विष्णुदत्त शर्मा

कई सर्वे एजेंसियों ने यह बात कही है कि प्रधानमंत्री मोदी जी की सरकार द्वारा लागू की योजनाओं और निर्णयों से सबसे ज्यादा प्रभावित महिलाएं हो रही हैं। मोदी जी की सरकार ने तीन तलाक विरोधी कानून बनाकर अल्पसंख्यक समाज की बहनों के जीवन को नरक बनने से बचाया है और इसीलिए आज तुष्टिकरण की राजनीति करने वाले लोग घबरा रहे हैं कि ये अल्पसंख्यक बहनें भी प्रधानमंत्री मोदी जी को वोट देंगी। मध्यप्रदेश में ही विभिन्न स्व सहायता समूहों से जुड़ी 40 लाख से अधिक बहनें लाभान्वित हो रही हैं और 44.50 लाख बेटियां लाड़ली लक्ष्मी बन चुकी हैं।

मध्यप्रदेश में शराब अहाते बंद करने का निर्णय महिला सुरक्षा की दृष्टि से एक बड़ा कदम है। महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वाबलंबी बनाने के लिए हमारी प्रदेश सरकार लाड़ली बहना योजना लेकर आई है। अधिक से अधिक बहनों को इस योजना का लाभ दिलाने के लिए महिला मोर्चा को पूरी प्लानिंग के साथ काम करना है। विभिन्न सरकारी योजनाओं से लाभान्वित होने वाली बहनों की समाज में बड़ी ताकत है और महिला मोर्चा को उन्हें पार्टी से जोड़ना है।

महिला मोर्चा की अगुवाई में चुनाव लड़ेगी पार्टी

आगामी चुनावों में उन बेटियों की भूमिका महत्वपूर्ण रहने वाली है, जो अभी हाल ही में मतदाता बनी हैं। लेकिन नव मतदाताओं ने 2003 के पहले का मध्यप्रदेश नहीं देखा है, इसलिए इन्हें यह पता नहीं है कि प्रदेश को इस स्तर तक लाने में भाजपा ने क्या किया है। यह महिला मोर्चा की जिम्मेदारी है कि प्रदेश के विकास में भारतीय जनता पार्टी की भूमिका इन्हें समझाए और इन्हें पार्टी से जोड़े। निकाय चुनाव में बड़ी संख्या में महिला जनप्रतिनिधि चुनी गई हैं, जो हमारी ताकत हैं। यह मोर्चा

मध्यप्रदेश में ही विभिन्न स्व सहायता समूहों से जुड़ी 40 लाख से अधिक बहनें लाभान्वित हो रही हैं और 44.50 लाख बेटियां लाड़ली लक्ष्मी बन चुकी हैं।

मध्यप्रदेश में शराब अहाते बंद करने का निर्णय महिला सुरक्षा की दृष्टि से एक बड़ा कदम है। महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वाबलंबी बनाने के लिए हमारी प्रदेश सरकार लाड़ली बहना योजना लेकर आई है।

की जिम्मेदारी है कि सभी महिला जनप्रतिनिधि अपने-अपने क्षेत्रों में सक्रिय होकर काम करें। पार्टी के कार्यक्रमों में महिला मोर्चा की महत्वपूर्ण भागीदारी है। मोर्चा को यह ध्यान रखना होगा कि सभी 64100 बूथों पर 33 प्रतिशत आरक्षण के साथ महिला कार्यकर्ताओं की नियुक्ति हो जाए। इसके अलावा हितग्राहियों से संपर्क , संगठन द्वारा दिये गए पत्रक पर अमल करना भी मोर्चा की जिम्मेदारी है। प्रधानमंत्री श्री मोदी, गृह मंत्री श्री अमित शाह एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा के नेतृत्व में भाजपा में नई कार्य संस्कृति फल-फूल रही है।

यहां काम और मेहनत के आधार पर कोई भी कार्यकर्ता किसी भी स्तर तक पहुंच सकता है। आगामी चुनाव में भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा की अगुवाई में ही आगे बढ़ेगी, इसलिए महिला मोर्चा कार्यकर्ता पूरी प्लानिंग के साथ मैदान में उतरकर काम करें।

नव मतदाताओं को पार्टी से जोड़ने का प्रयास करे महिला मोर्चा: हितानंद जी

प्रदेश में जो नव मतदाता बेटियां हैं, उनमें बड़ी संख्या लाड़ली लक्ष्मियों की हैं। ये नव मतदाता चुनाव में भाजपा की भाग्य विधाता साबित हो सकती हैं। इन्हें पार्टी से किस तरह जोड़ा जाए, इसके लिए महिला मोर्चा को विचार और प्रयास करना चाहिए। सोशल मीडिया बड़ी ताकत है और इसके उपयोग के लिए प्रत्येक मंडल में 5 बहनों की नियुक्ति मोर्चा को करना चाहिए।

अहाता बंदी प्रदेश सरकार का बड़ा कदम है, जिसके लिए मोर्चा की बहनों को सोशल मीडिया पर प्रदेश सरकार को धन्यवाद देना चाहिए। हाल ही में प्रदेश सरकार ने लाड़ली बहना योजना शुरू की है, जिसे लागू करने में महिला मोर्चा की भूमिका सबसे अहम रहने वाली है। महिला मोर्चा की बहनें प्रत्यक्ष रूप से तो बहनों को इस योजना का लाभ दिलाने में सहायता कर ही रही हैं, उन्हें निकाय क्षेत्रों में एक हेल्पलाइन नंबर भी जारी करना चाहिए, जिस पर आवेदक बहनों की हर कठिनाई का समाधान हो सके।

पार्टी के कार्यक्रमों में मोर्चा की सक्रिय सहभागिता

कार्यक्रमों में महिला मोर्चा की सक्रिय सहभागिता होना जरूरी है। महिला मोर्चा की सभी कार्यकर्ता बहनें किसी न किसी बूथ पर विस्तारक के रूप में जायें और वहां रहकर काम करें। भाजपा महिला सशक्तिकरण पर विश्वास करती है। इसलिए महिला मोर्चा से यह अपेक्षा है कि मोर्चा कार्यकर्ता महिला नेतृत्व के साथ, महिलाओं को पार्टी से जोड़ते हुए आगामी जीत में सहभागी बने।

पार्टी की अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा महिला मोर्चा : श्रीमती माया नारोलिया

महिला मोर्चा कार्यकर्ताओं की सबसे बड़ी जिम्मेदारी महिलाओं को पार्टी के साथ जोड़ना है, जिसके लिए मोर्चा काम कर रहा है। मोर्चा कार्यकर्ता लाड़ली बहना योजना के फार्म भरवा रही हैं और लाड़ली लक्ष्मी तथा लाड़ली बहना योजनाओं को घर-घर तक पहुंचाने के लिए संकल्पित हैं।

51 प्रतिशत वोट शेयर के लक्ष्य के हासिल करने के लिए महिला मोर्चा को जो जिम्मेदारी दी गई है, हम उसे भी पूरा करेंगे। सभी बूथों पर प्रभारी बहनों की नियुक्ति कर दी जाएगी। महिला मोर्चा से जो भी अपेक्षाएं की गई हैं, महिला मोर्चा उन पर खरा उतरेगा। ▪

सांसद, विधायकों की भूमिका महत्वपूर्ण

अबकी बार 200 पार का नारा हमारे संगठन तंत्र की मजबूती से पूरा होगा। जिस तरह गुजरात में 80 लाख पन्ना समितियों की मेहनत के कारण भाजपा ने प्रचंड जीत हासिल की। जिसका उल्लेख प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने किया। उसी तरह मध्यप्रदेश में हम अर्ध पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति भी बना चुके है।

इसी आधार पर हम विजय की ओर अग्रसर होंगे। हमारे जनप्रतिनिधियों की सक्रियता के कारण हम पार्टी के कार्यक्रमों को नीचे तक पहुंचाने में सफल हुए है। कार्यकर्ता ऊर्जा से भरे हुए है। बूथ स्तर तक हमारा तंत्र तैयार है।

चुने हुए प्रतिनिधियों की संगठन कार्यो में महत्वपूर्ण भूमिका है। बूथ सशक्तिकरण अभियान में जिस तरह पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ हमारे जनप्रतिनिधियों ने परिश्रम कर अभियान को सफल बनाया। उसी तरह बूथ सशक्तिकरण के तीसरे चरण में बूथ विजय संकल्प अभियान चलेगा। जिसमें सांसद और विधायकों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। केन्द्रीय नेतृत्व ने जो कार्यक्रम निर्धारित किए है, वे हर बूथ पर सफल क्रियान्वित हो इसकी जिम्मेदारी सभी की है।

दावे और दम के साथ रखे अपनी बात : शिवराज सिंह

कांग्रेस के लोग जनता में झूठ फैला रहे है। उन्होंने कभी विकास के काम नहीं किए। कांग्रेस के समय अनाज का 1 करोड़ मीट्रिक टन उत्पादन होता था जो आज बढ़कर 7 करोड़ मीट्रिक टन हो गया है। जो मध्यप्रदेश का बजट 21 हजार करोड़ का होता था, आज 3 लाख 14 हजार करोड़ से अधिक का है। हमने किसानों का जीवन स्तर सुधारने का काम किया है। कांग्रेस की जब सरकार थी तब वह फुकलेट कंपनी थी, उसने हितग्राहियों को पैसा नहीं बांटा। हमारे पास पैसों की कोई कमी नहीं है। हर योजना के हितग्राहियों को हम राशि दे रहे है। हमारे पास इतने विकास के काम है कि पूरे दावे और दम के साथ कांग्रेस के झूठ का जवाब दें। मैदान में उतरो और विरोधियों पर टूट पड़ों। हमारे पास उपलब्धियां और विकास कार्यो के हथियार है। उनका उपयोग करो।

बूथ विजय संकल्प अभियान महत्वपूर्ण : मुरलीधर राव

यह अभियान पार्टी का महत्वपूर्ण अभियान है। इस अभियान के अंतर्गत 10 बूथों पर एक क्लस्टर का गठन किया जायेगा ओर क्लस्टर के सभी कार्यकर्ता अभियान के दौरान आयोजित होने वाले खेल, वैचारिक और पार्टी के निर्धारित कार्यक्रमों में भाग लेंगे। कर्नाटक चुनाव के बाद पूरे देश की नजर मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान और तेलंगाना पर रहेगी। चुनाव की दृष्टि से हम तैयारियों में जुटे है। हमारी तैयारियां और प्रभावी हो इसके लिए पार्टी के अभियानों को सफल बनाने में जुट जाएं। बूथ विजय संकल्प अभियान के अंतर्गत होने वाले कार्यक्रमों से टीम भावना का निर्माण होगा। वहीं 51 प्रतिशत वोट शेयर की दिशा में हम आगे बढ़ेंगे। इस कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर प्रदेश स्तर पर टीम बनी है। जिला, विधानसभा, मंडल और नीचे स्तर तक संचालन समितियां भी बनेगी। हर बूथ से 10 लोग इसमें शामिल होंगे।

नए मतदाताओं को जोड़ें, बूथ को मजबूत करें : विष्णुदत्त शर्मा

अबकी बार 200 पार का नारा हमारे संगठन

बूथ विजय संकल्प अभियान महत्वपूर्ण है। इसकी तैयारियों में जुट जाएं।

तंत्र की मजबूती से पूरा होगा। जिस तरह गुजरात में 80 लाख पन्ना समितियों की मेहनत के कारण भाजपा ने प्रचंड जीत हासिल की। जिसका उल्लेख प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने किया। उसी तरह मध्यप्रदेश में हम अर्ध पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति भी बना चुके है। इसी आधार पर हम विजय की ओर अग्रसर होंगे। हमारे जनप्रतिनिधियों की सक्रियता के कारण हम पार्टी के कार्यक्रमों को नीचे तक पहुंचाने में सफल हुए है। कार्यकर्ता ऊर्जा से भरे हुए है। बूथ स्तर तक हमारा तंत्र तैयार है। इस तंत्र को एक्टिव कर लिया तो बढ़ती हुई भाजपा को कोई भी ताकत नहीं रोक सकती। विधानसभा स्तर पर समाज के अलग अलग वर्गों और योजनाओं के हितग्राहियों के समूह मन की बात कार्यक्रम में शामिल हो। समाज के प्रबुद्धजन भी इससे जुड़े, इस दिशा में तैयारियां हो। 51 प्रतिशत वोट शेयर बढ़ाने में इस अभियान की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस दृष्टि से अभियान को सफल बनाने में सभी जनप्रतिनिधि जुट जाएं। केन्द्र सरकार के 9 वर्ष पूर्ण होने पर 15 मई से 15 जून तक एक महीने के विशेष कार्यक्रम के माध्यम से घर घर संपर्क होगा। सरकार की योजनाओं के हितग्राही बड़ी संख्या में है। वहीं 17 से 19 वर्ष के युवाओं को पार्टी से जोड़ने के लिए अभियान चलाएं। जिसका लाभ पार्टी संगठन को होगा।

बूथ विजय संकल्प अभियान महत्वपूर्ण है : हितानंद शर्मा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के रेडियो कार्यक्रम मन की बात का प्रत्येक विधानसभा में 100 स्थानों पर प्रभावी कार्यक्रम हो, इसकी तैयारियों में जुट जाएं। मन की बात कार्यक्रम में पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ समाज के विभिन्न क्षेत्रों में प्रभावी काम करने वाले प्रबुद्धजन की उपस्थिति भी सुनिश्चित की जाएं।प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कार्यकाल के 9 वर्ष पूरे होने पर 15 मई से 15 जून तक एक महीने का विशेष कार्यक्रम आयोजित होंगे। मंडल संवाद के कार्यक्रम भी आयोजित होंगे। जून माह में होने वाले संत रविदास जी के मंदिर के भूमिपूजन के कार्यक्रम को लेकर हर पंचायत से शिलापूजन, हर गांव से जल, मिट्टी और एक मुठ्ठी चावल एकत्रित करने का अभियान होगा। ▪

भाजपा ने हमेशा पिछड़ा वर्ग की चिंता की: विष्णुदत्त शर्मा

पिछड़ा वर्ग मोर्चा के हर कार्यकर्ता की जिम्मेदारी है कि समाज भ्रमित न हो, इसके लिए दृढ़ता के साथ समाज के बीच जाएं और उन्हें कांग्रेस की हकीकत बताएं। कांग्रेस ने हमेशा पिछड़ा वर्ग को धोखा देने का काम किया है। पिछड़ा वर्ग मोर्चा का कार्य क्षेत्र बढ़ा है, इसलिए आगामी कार्य योजना भी बड़ी होना चाहिए। भारतीय जनता पार्टी सरकारों ने पिछड़ा वर्ग की हमेशा चिंता की है।

सरकार की योजनाएं बूथ पर पहुचांने का कार्य करें मोर्चा कार्यकर्ता

पिछड़ा वर्ग के हित में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं प्रदेश सरकार की योजनाएं और लिए गए निर्णय हर बूथ तक पहुंचे, इस बात की चिंता पिछड़ा वर्ग मोर्चा के कार्यकर्ताओं को करना है। जिस गांव में ओबीसी समाज की अधिक संख्या है, वहाँ घर-घर सम्पर्क कर उन्हें पार्टी की रीति-नीति से अवगत कराकर पार्टी के आंचल में लाना है। समाज प्रमुखों की चौपाल बैठकें करना है। पिछड़ा वर्ग मोर्चा के कार्यकर्ता नए युवाओं को पार्टी की विचारधारा से जोड़े। मोर्चा के कार्यकर्ताओं को पिछड़े वर्ग की छोटी-छोटी जातियों के लोगों को आगे बढ़ाने का कार्य करना चाहिए।

मोर्चा कार्यकर्ता हितग्राहियों से सतत् सम्पर्क कर पार्टी से जोड़ें: हितानंद जी

पिछड़ा वर्ग मोर्चा पार्टी का महत्वपूर्ण मोर्चा है। इस मोर्चे का कार्यक्षेत्र और पहुंच प्रदेश के सभी बूथों तक है। केन्द्र और राज्य सरकार ने पिछड़ा वर्ग कल्याण के लिए नीतिगत निर्णय लिए हैं और जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ भी सुनिश्चित किया है। पिछड़ा वर्ग समाज के जो लोग केन्द्र और प्रदेश सरकार की योजनाओं के लाभ से वंचित हैं, उनको लाभ दिलाने में जुट जाए। हितग्राहियों से सतत् सम्पर्क कर उन्हें पार्टी की रीति-नीति और सरकार की जनोन्मुखी योजनाओं से अवगत कराकर पार्टी में जोड़ने का काम मोर्चा कार्यकर्ताओं का है। प्रदेश में लगभग 50 प्रतिशत पिछड़ा वर्ग है, जिन क्षेत्रों में पिछड़ा वर्ग समाज बहुसंख्यक है, वहां पर जिला एवं विधानसभा सम्मेलन आयोजित किये जाएं। ▪

विकास, सुशासन के नये आयाम

शिवराज सिंह चौहान

देश की जीडीपी में मध्यप्रदेश का 4.6 प्रतिशत योगदान है। प्रदेश में 68 हजार करोड़ रूपए के सिंचाई परियोजनाओं के कार्य चल रहे हैं। सीएम राइज स्कूलों को प्राइवेट स्कूलों से भी बेहतर बनाया जा रहा है। वेस्ट-टू-वेल्थ की अवधारणा को साकार करते हुए कचरे से बिजली बनाने का कार्य किया जा रहा है।

स्वच्छता के क्षेत्र में मध्यप्रदेश देश में अग्रणी है। जैविक खेती में मध्य प्रदेश नम्बर वन है। युवाओं के सर्वांगीण विकास के लिये प्रदेश में युवा नीति बनाई गई है। उज्जैन में श्रीमहाकाल महालोक बनाया गया है और अब ओरछा में राम राजा लोक, सलकनपुर में देवी लोक एवं ओंकारेश्वर में आदिगुरु शंकराचार्य जी का एकात्म धाम बन रहा है।

प्रदेश में जन-कल्याण और विकास के विभिन्न कार्य और गतिविधियाँ तेजी से हो रही हैं। सुशासन की दृष्टि से हमने अनेक प्रयास किए हैं और लगातार नये आयाम स्थापित किए जा रहे हैं। समाधान ऑनलाइन, जनसुनवाई, वन-डे गवर्नेंस और सीएम हेल्पलाइन बहुत लोकप्रिय हुई हैं। राज्य सरकार की मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना महिला सशक्तिकरण का अभिनव प्रयास है। प्रदेश में शिकायतों के निवारण के लिए समाधान ऑनलाइन, सीएम हेल्प लाइन और जन-सुनवाई की व्यवस्था की गई है।

मध्यप्रदेश कभी बीमारू राज्य कहलाता था। हमको कहीं कोई गिनता नहीं था, लेकिन मध्यप्रदेश ने हर क्षेत्र में लंबी छलांग लगाई है। हर माह ढाई लाख युवाओं को स्व-रोजगार के लिए ऋण दिया जा रहा है। फैक्टरी आदि में काम सीखने के लिए मुख्यमंत्री युवा कौशल कमाई योजना के तहत युवाओं को 8100 रूपए हर महीने दिए जाएंगे। प्रदेश में सड़क, बिजली, पानी, कृषि, शिक्षा, स्वच्छता और सुशासन के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन हुआ है। आज मध्यप्रदेश का बजट 3 लाख 14 हजार करोड़ रूपए हो गया है। प्रदेश में प्रति व्यक्ति आय 11 हजार रूपए से बढ़ कर अब एक लाख 40 हजार रूपए हो गई है। टेक्नॉलाजी का उपयोग करते हुए विभिन्न योजनाओं का लाभ लोगों तक पहुँचाया जा रहा है।

देश की जीडीपी में मध्यप्रदेश का 4.6 प्रतिशत योगदान है। प्रदेश में 68 हजार करोड़ रूपए के सिंचाई परियोजनाओं के कार्य चल रहे हैं। सीएम राइज स्कूलों को प्राइवेट स्कूलों से भी बेहतर बनाया जा रहा है। वेस्ट-टू-वेल्थ की अवधारणा को साकार करते हुए कचरे से बिजली बनाने का कार्य किया जा रहा है। स्वच्छता के क्षेत्र में मध्यप्रदेश देश में अग्रणी

है। जैविक खेती में मध्य प्रदेश नम्बर वन है। युवाओं के सर्वांगीण विकास के लिये प्रदेश में युवा नीति बनाई गई है। उज्जैन में श्री महाकाल महालोक बनाया गया है और अब ओरछा में राम राजा लोक, सलकनपुर में देवी लोक एवं ओंकारेश्वर में आदिगुरु शंकराचार्य जी का एकात्म धाम बन रहा है।

'अबकी बार-200 पार' : विष्णुदत्त शर्मा

भारतीय जनता पार्टी एक कार्यकर्ता आधारित और सिद्धांतों पर चलने वाली पार्टी है। श्रद्धेय कुशाभाऊ ठाकरे, स्व. सुन्दरलाल पटवा, स्व. कैलाश जोशी, स्व. राजमाता विजयाराजे सिन्धिया, स्व. प्यारेलाल खण्डेलवाल जैसे अनेक लोगों ने कार्यकर्ताओं का निर्माण किया जिसके कारण आज प्रदेश का संगठन देश का उत्कृष्ट संगठन है। बूथ हमारी सबसे महत्वपूर्ण इकाई है। हम सत्ता-संगठन के समन्वय और बूथ की मजबूती के बल पर 'अबकी बार-200 पार' के लक्ष्य को हासिल करेंगे और पार्टी को मिलने वाले वोटों में 10 प्रतिशत की वृद्धि करेंगे। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में प्रदेश बीमारू राज्य से विकसित राज्य की श्रेणी में अग्रणी बना है, वहीं सुशासन की दृष्टि से मध्यप्रदेश उदाहरण बना है। प्रदेश में हमारी सरकार ने अनेक जनहितैषी योजनाओं को जमीन पर उतारकर सामाजिक परिवर्तन लाने का काम किया है।

मध्यप्रदेश में बूथ विस्तारक योजना के अंतर्गत 64100 बूथों में से लगभग 63257 बूथों पर कार्यकर्ताओं द्वारा डिजिटलाइजेशन किया गया है। 64100 बूथों में से 25 हजार से ऊपर बूथों पर 'मन की बात कार्यक्रम' रियल टाइम रिपोर्टिंग करने वाला मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य है। प्रदेश के प्रत्येक बूथ पर पन्ना प्रमुख एवं पन्ना समिति के साथ ही नई रचना अर्ध पन्ना प्रमुख है, जिसके अंतर्गत लगभग 13 लाख पन्ना प्रमुख बनकर तैयार हैं। सुघोष अभियान के अंतर्गत प्रत्येक बूथ पर दो युवाओं को एक सोशल मीडिया और एक आईटी इंचार्ज बनाएंगे। 1070 मंडलों में से 800 मंडलों पर सोशल मीडिया और एक आईटी इंचार्ज को एक दिवसीय प्रशिक्षण देने का काम किया गया है। इसी प्रकार पार्टी के संगठन तंत्र में 10800 से ऊपर शक्ति केंद्रों की रचना की गई है, इन शक्ति केंद्रों पर पांच लोगों की टोली में एक महिला इंचार्ज हैं। बूथ समिति में लगभग 9 लाख 53 हजार कार्यकर्ता रजिस्टर्ड हैं। साथ ही मध्यप्रदेश ने अपना संगठन एप तैयार किया है, जिसमें प्रवास, रियल टाइम रिपोर्टिंग तक की जाती है।

युवा चौपाल के अंतर्गत 23 हजार पंचायत और नगर निगम के 1 हजार 800 वार्डों में से प्रदेश भर में 10342 स्थानों पर युवा चौपाल की जा चुकी हैं। मध्यप्रदेश एक विकसित राज्य होने के साथ गेहूं उत्पादन में देश का नंबर वन राज्य है।

मध्यप्रदेश निरंतर विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ा है, क्योंकि मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में चलाई जा रही जनहितैषी योजनाओं को जमीन पर उतारने के लिए पार्टी का कार्यकर्ता मैदान में डंडा और झंडा लेकर खड़ा है। मध्यप्रदेश में कोरोना के समय प्रधानमंत्री अन्न वितरण योजना के अंतर्गत 25 हजार स्थानों पर झंडा लेकर कार्यकर्ता गये थे, जहां उत्सव जैसा माहौल था। मध्यप्रदेश में 44 लाख लाड़ली लक्ष्मी बेटियां हैं, लाड़ली लक्ष्मी योजना से एक सामाजिक परिवर्तन आया है, जिसके कारण 912 बेटियों पर 1000 बेटे पैदा होते थे, वहीं आज 978 बेटियों पर 1000 बेटे पैदा होते हैं। ▪

भाजपा को घर-घर पहुंचाएं: हितानंद शर्मा

जनसंघ के जमाने में कार्यकर्ताओं ने साईकिलों पर प्रचार-प्रसार कर व सेव, परमल खाकर संगठन का विस्तार किया था। उन्हीं के दम पर हम चुनाव में जीत हासिल करते थे। आज उन्हीं पुराने ओर बुजुर्ग कार्यकर्ताओं के अनुभवों का लाभ लेकर जिन बूथों पर हमें पिछले चुनाव में हार का सामना करना पड़ा उन बूथों को मजबूत बनाने में जुटना है। हमारा काम 'हर घर भाजपा-घर घर भाजपा' का है। सोशल मीडिया बड़ी ताकत है इस पर सक्रिय रहकर प्रदेश में चल रही गरीब कल्याण की अनेकों योजनाओं को घर-घर पहुंचाकर उन्हें लाभ दिलाना और पार्टी के जनाधार को बढ़ाना है।

अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे सरकार की योजनाएं

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान के नेतृत्व में देश और प्रदेश में चल रही गरीब कल्याण की अनेकों योजनाओं के माध्यम से सरकार ने सभी समाजों को भरपूर सुविधाएं दी है। अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति तक योजनांए पहुंचे इसके लिए बूथ स्तर पर पहुंचकर उसका लाभ दिलाना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। केन्द्र एवं प्रदेश की सरकारों ने महिला सशक्तिकरण और युवा सहित सभी वर्गों के लिए उल्लेखनीय कार्य किये हैं। मातृ शक्ति के लिये लाड़ली बहना जैसी कई जनहितैषी योजनाएं क्रियान्वित की है। जिनका लाभ प्रदेश की हमारी माता-बहनों को मिल रहा है। हमें सभी वर्गों के साथ व्यापक और सतत् संपर्क कर भारतीय जनता पार्टी की रीति-नीति से अवगत कराकर उन्हें पार्टी में जोड़ने का कार्य करना है। ▪

मेवाड़ के अपराजित योद्धा महाराणा प्रताप

रा जपूताने की वह पावन बलिदान, भूमि विश्व में इतना पवित्र बलिदान स्थल कोई नहीं। इतिहास के पृष्ठ रंगे हैं उस शौर्य एवं तेज की भव्य गाथा से।

भीलों का अपने देश और नरेश के लिये वह अमर बलिदान, राजपूत वीरों,की वह तेजस्विता और महाराणा का वह लोकोत्तर पराक्रम इतिहास का वीरकाव्य का वह परम उपजीव्य है। मेवाड़ के उष्ण रक्त ने श्रावण संवत 1633 वि. में हल्दीघाटी का कणकण लाल कर दिया। अपार शत्रु सेना के सम्मुख थोड़े से राजपूत और भील सैनिक कब तक टिकते महाराणा को पीछे हटना पड़ा और उनका प्रिय अश्व चेतक उसने उन्हें निरापद पहुँचाने में इतना श्रम किया कि अन्त में वह सदा के लिये अपने स्वामी के चरणों में गिर पड़ा।

महाराणा चित्तौड़ छोड़कर वनवासी हुए। महाराणी, सुकुमार राजकुमारी और कुमार घास की रोटियों और निर्झर के जल पर किसी प्रकार जीवन व्यतीत करने को बाध्य हुए। अरावली की गुफाएँ ही आवास थीं और शिला ही शैया थी। दिल्ली का सम्राट सादर सेनापतित्व देने को प्रस्तुत था। उससे भी अधिक वह केवल चाहता था प्रताप अधीनता स्वीकार कर लें, उसका दंभ सफल हो जाय। हिंदुत्व पर दीनइलाही स्वयं विजयी हो जाता। प्रताप राजपूत की आन का वह सम्राट हिंदुत्व का वह गौरव सूर्य इस संकट, त्याग, तप में अडिंग रहा। धर्म के लिये, आन के लिये यह तपस्या अकल्पित है। कहते हैं महाराणा ने अकबर को एक बार सन्धिपत्र भेजा था पर इतिहासकार इसे सत्य नहीं मानते। यह अबुल फजल की गढ़ी हुई कहानी भर है। अकल्पित सहायता मिली, मेवाड़ के गौरव भामाशाह ने महाराणा के चरणों में अपनी समस्त संपत्ति रख दी। महाराणा इस प्रचुर संपत्ति से पुनः सैन्य संगठन में लग गये। चित्तौड़ को छोड़कर महाराणा ने अपने समस्त दुर्गों का शत्रु से उद्धार कर लिया। उदयपुर उनकी राजधानी बना। अपने 24 वर्षों के शासन काल में उन्होंने मेवाड़ की केशरिया पताका सदा ऊँची रखी।

महाराणा की प्रतिज्ञा

प्रताप को अभूतपूर्व समर्थन मिला। यद्यपि धन और उज्जवल भविष्य ने उसके सरदारों को काफी प्रलोभन दिया, परन्तु किसी ने साथ नहीं

इतिहासकारों का कहना है कि न केवल महाराणा के काल में, बल्कि उसके बाद भी चावंड में ललितकलाएँ और साहित्य फूले-फले। उसका ऐसा दीर्घकालीन प्रभाव पड़ा कि राजधानी बनी रहने के दो शताब्दियों बाद तक चावंड साहित्य एवं कलाओं का केन्द्र बना रहा।

छोड़ा। जयमल के पुत्रों ने उसके कार्य के लिये अपना रक्त बहाया, प्रताप के वंश धरों ने भी ऐसा ही किया और सलूबर के कुलवालों ने भी चूण्डा की स्वामी-भक्ति को जीवित रखा। इनकी वीरता और स्वार्थ त्याग का वृतान्त मेवाड़ के इतिहास में अत्यन्त गौरवमय समझा जाता है। उसने प्रतीज्ञा की थी कि वह माता के पवित्र दूध को कभी कलंकित नहीं करेगा।

इस प्रतिज्ञा का पालन उसने पूरी तरह से किया। कभी मैदानी प्रदेशों पर धावा मारकर जनस्थानों को उजाड़ना तो कभी एक पर्वत से दूसरे पर्वत पर भागना और इस विपत्ति-काल में अपने परिवार का पर्वतीय कन्दमूल फल द्वारा भरण-पोषण करना और अपने पुत्र अमर का जंगली जानवरों और जंगली लोगों के मध्य पालन करना, अत्यन्त कष्टप्रद कार्य था। इन सबके पीछे मूल मंत्र यही था कि बप्पा रावल का वंशज किसी शत्रु अथवा देशद्रोही के सम्मुख शीश झुकाये। यह असंभव बात थी। कायरों के योग्य इस पापमय विचार से ही प्रताप का हृदय टुकड़े-टुकड़े हो जाता था। तातार वालों को अपनी बहन-बेटी समर्पण कर अनुग्रह प्राप्त करना, प्रताप को किसी भी दशा में स्वीकार्य न था।

चित्तौड़ के उद्धार से पूर्व पात्र में भोजन,शैय्या पर शयन दोनों मेरे लिये वर्जित रहेंगे। महाराणा की प्रतिज्ञा अक्षुण्ण रही और जब वे (वि. सं.1653 माघ शुक्ल 11)29 जनवरी सन 1597 में परमधाम की यात्रा करने लगे उनके परिजनों और सामन्तों ने वही प्रतिज्ञा करके उन्हें आश्वस्त किया । अरावली के कण-कण में महाराणा का जीवन चरित्र अंकित है । शताब्दियों तक पतितों, पराधीनों और उत्पीड़ितों के लिये वह प्रकाश का काम देगा। चित्तौड़ की उस पवित्र भूमि में युगों तक मानव स्वराज्य एवं स्वधर्म का अमर सन्देश झंकृत होता रहेगा।

माई एहड़ा पूत जण, जेहड़ा राणा प्रताप।
अकबर सूतो ओधके, जाण सिराणे साप।

कठोर जीवन निर्वाह

चित्तौड़ के विध्वंस और उसकी दीन दशा को देखकर भट्ट कवियों ने उसको आभूषण रहित विधवा स्त्री की उपमा दी है। प्रताप ने अपनी जन्मभूमि की इस दशा को देखकर सब प्रकार के भोग-विलास को त्याग दिया, भोजन-पान के समय काम में लिये जाने वाले सोने-चाँदी के बर्तनों को त्यागकर वृक्षों के पत्तों को काम में लिया जाने लगा, कोमल शैय्या को छोड़ तृण शैय्या का उपयोग किया जाने लगा। उसने अकेले ही इस कठिन मार्ग को नहीं अपनाया अपितु अपने वंश वालों के लिये भी इस कठोर नियम का पालन करने के लिये आज्ञा दी थी कि जब तक चित्तौड़ का उद्धार न हो तब तक सिसोदिया राजपूतों को सभी सुख त्याग देने चाहिए। चित्तौड़ की मौजूदा दुर्दशा सभी लोगों के हृदय में अंकित हो जाये, इस दृष्टि से उसने यह आदेश भी दिया कि युद्ध के लिये प्रस्थान करते समय जो नगाड़े सेना के आगे-आगे बजाये जाते थे, वे अब सेना के पीछे बजाये जायें। इस आदेश का पालन आज तक किया जा रहा है और युद्ध के नगाड़े सेना के पिछले भाग के साथ ही चलते हैं। ▪

सच्चे राष्ट्रवाद की ज्योति प्रज्जवलित की महान वीर सावरकर ने

कुछ व्यक्ति जन्म से ही महान होते हैं। कुछ महान बनाये जाते हैं। किन्तु कुछ ऐसे होते हैं जिनकी महानता उनके जीवनकाल में स्वीकारी नहीं जाती। विनायक दामोदर सावरकर इस तीसरी श्रेणी में आते हैं। उनकी महानता इसी बात में हैं कि अपने ही लोगों से अनदेखी व अपमान झेलते हुए भी उन्होंने सच्चे राष्ट्रवाद की ज्योति प्रज्जवलित रखी। दुर्भाग्य से वे हिन्दू जनसाधारण को स्वीकार्य नहीं थे क्योंकि वे जन्म से ब्राह्मण पुराणमतवाद के घोर शत्रु रहे। इसीलिये एक विचित्र विरोधाभास यह रहा कि दकियानूसी ब्राह्मण उनके अस्पृश्यता के विरोध में उनके तीव्र व स्पष्ट दृष्टिकोण के कारण उन्हें 'अछूत तात्या' (तात्या उनको प्यार से पुकारते थे) कहकर उनका तिरस्कार करते थे। परन्तु इस कारण वे अछूतों के लिये, हिन्दू समाज के लिये, निचले तबके के लिये अपने आप स्वीकार्य नहीं बन गये। बड़े विचित्र व स्वार्थी कारणों से ब्राह्मणेतर नेता और दलित वर्ग के नेता भी, निजी तौर पर यह स्वीकारते हुए भी कि सावरकरजी ने हिन्दू समाज से अस्पृश्यता व दूसरी सामाजिक बुराईयाँ दूर करने में क्रान्तिकारी योगदान दिया था, उस कार्य को लोगों की नजरों में लाने में बड़ी आनाकानी की। यह भी सच है कि 13 वर्ष की लंबी अवधि के लिये 1911 से 1923 तक वे अन्दमान की सैल्युलर जेल में भारत भूमि से दूर कष्ट झेलते रहे और जब उन्हें वापस लाया गया तो उन्हें रत्नागिरी में १४ वर्षों तक स्थानबद्ध रखा गया इसीलिये उनके क्रियाकलाप (जो केवल सामाजिक हो सकते थे)उसी स्थान तक सीमित रहे।

फ्रान्स के समुद्र तट के पास पानी में छलांग लगाकर उन्होंने अपनी जो अखिल भारतीय प्रतिमा बनाई थी वह धीर-धीरे जनता की स्मृति से ओझल हो गई, और जब 1937 में उन्हें राजनीति में सक्रिय होने की छूट मिली तो, जैसा कि हम पहले ही देख चुके है, उन्हें हिन्दू राष्ट्रवाद का झंडा उठाने के सिवाय दूसरा पर्याय नहीं था व हिन्दू जनता की नजरों में उसका अर्थ ब्राह्मणवाद का समर्थन होता था। जब 1947 में देश स्वाधीन हुआ तब हिन्दू समाज के आराध्य महात्मा गांधी की हत्या हिन्दू राष्ट्रवाद को बचाने की बात कहकर की गई जिससे की मतलबी लोगों को

सावरकर हिन्दू महासभा के नेता थे तथा संघ एक सामाजिक व सांस्कृतिक संघठन होने के नाते हिन्दू महासभा से अलग ही रहता था। परन्तु दोनों ही हिन्दुत्व के दर्शन को स्वीकारते थे और भारतीय जनता पक्ष जो निःसंदिग्ध रूप से हिन्दू राष्ट्रवाद का पक्षधर हैं, एक अर्थ से वीर सावरकर का कार्य ही आगे बढ़ा रहा है...

सावरकर तथा उनके हिन्दुत्व दर्शन पर आघात करने का मौका मिला। डॉ. के.बी.हेडगेवार द्वारा 1925 में हिन्दू समाज की जैविक एकता वापस लाने हेतु स्थापित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को भी उस मामले में घसीटा गया व उस पर पाबन्दी लगाई गई। कठिन सत्व परीक्षा के बाद पाबन्दी हटाई गई। गांधी हत्या मुकदमे से सावरकर भी निर्दोष मुक्त हुए। किन्तु जिस कारण सावरकर व संघ दोनों को ही इस मामले में घसीटा गया था, वह उद्देश्य सफल रहा। हिन्दू राष्ट्रवाद जो विभाजन के बाद के वातावरण में फलता फूलता उसे गहरा आघात पहुँचा। सावरकर ब्राह्मण थे। संघ के अधिकतर कार्यकर्ता भी ब्राह्मण दकियानूसी से करके दोनों को हिन्दू जनता की नजरों में बदनाम किया जा सका।

डॉ. के.बी.हेडगेवार हिन्दू संगठन की उनकी कार्य प्रणाली तथा उनके द्वारा एकत्रित किया गया निष्ठावान स्वयंसेवकों का समूह इनकी जितनी प्रशंसा की जाये उतनी थोड़ी है क्योंकि 1948 के भयंकर आघात के पश्चात् भी संघ न केवल अस्तित्व में रहा बल्कि फलता फूलता गया और न केवल भारत में बल्कि सारे विश्व में फैल गया। हिन्दू राष्ट्रवाद को सांप्रदायिक कहकर उसका अस्तित्व मिटाने के प्रयासों का उल्टा असर पड़ा। यह तथ्य कि हिन्दू राष्ट्रवाद धीरे-धीरे व निश्चित रूप से हिन्दू समाज में मान्यता प्राप्त कर रहा हैं, इस बात का द्योतक है कि जो पैंतरा सावरकर जी ने 1937 में लिया था वह सही था तथा हिन्दू समाज उन्हें हिन्दू राष्ट्रवाद के महापुरूष के रूप में स्वीकार करता है। यह सही है कि संघ सावरकर की बुद्धि की उपज नहीं थी। सावरकर हिन्दू महासभा के नेता थे तथा संघ एक सामाजिक व सांस्कृतिक संघठन होने के नाते हिन्दू महासभा से अलग ही रहता था। परन्तु दोनों ही हिन्दुत्व के दर्शन को स्वीकारते थे और भारतीय जनता पक्ष जो निःसंदिग्ध रूप से हिन्दू राष्ट्रवाद का पक्षधर हैं, एक अर्थ से वीर सावरकर का कार्य ही आगे बढ़ा रहा है। इस प्रकार सामाजिक व राजनीतिक क्रान्तिकारी के रूप में सावरकर जी की महानता धीरे-धीरे हिन्दू समाज में स्वीकारी जा रही है। अब तो उस पक्ष के नेता ब्राह्मणों समेत सभी के लिये न्याय व समान बर्ताव की मीठीमीठी बातें करते हैं। यह सद्भाव व सहकार की भावना स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि वीर सावरकर की चेतना हिन्दू समाज में जीवित है व बढ़ रही हैं। इसका प्रकटीकरण अयोध्या आंदोलन के समय हुआ तथा कांग्रेसी नेता भी जो अपने आपको हिन्दू कहलवाना टालते थे अब उस बात पर गर्व करने लगे हैं। एक प्रमुख कांग्रेसी नेता व एक समय के पक्ष के महासचिव ने सुझाव दिया था कि कांग्रेस की कार्यक्रम सूची में हिन्दुत्व का होना उपयोगी रहेगा, वे नेता थे स्वर्गीय श्री व्हि.एन.गडगिल। ▪

लोकमाता महारानी अहिल्याबाई

भारत वर्ष में वीरांगनों के बलिदान और उत्कर्ष का समृद्ध इतिहास है। इतिहास की एक ऐसी ही अद्वितीय वीरांगना थी अहिल्या बाई होल्कर। मर्यादित व्यवहार और आदर्श आचरण की पर्याय अहिल्या बाई ने तीस वर्षों तक होल्कर राज्य का कुशल संचालन किया। न्यायप्रिय रानी ने सुशासन की मिसाल कायम की। उनके समय में होल्कर राज्य समृद्धि के चरम पर था। उन्होंने एक ऐसे लोक मंगलकारी राज्य की स्थापना की जहां पर सबके लिए न्याय, समदृष्टि और बराबरी का स्थान था। न्यायोचित व्यवस्था और आदर्श भाव के कारण ही अहिल्या बाई को लोकमाता से संबोधित किया गया।

अहिल्या बाई अपने जीवन काल में ही किंवदती बन चुकीं थीं। राज्य को जनता की धरोहर मानते हुए उन्होंने जन कल्याण की भावना से शासन का संचालन किया। राज्य की रक्षा के लिए अहिल्या बाई युद्ध के मैदान में उतरीं और लड़ाईयाँ लड़ीं। मंदसौर में उनका संघर्ष बहुत चर्चित रहा। वहाँ उन्होंने दुश्मनों से लोहा लेकर जीत हासिल की थी।

अहिल्याबाई होल्कर का जन्म महाराष्ट्र में औरंगाबाद जिले के पाथर डीना गाँव में हुआ था। गाँव के पटेल मनकोजी शिन्दे के यहाँ 17 मई 1725 में जन्मी अहिल्याबाई का कण्ठ अत्यन्त मधुर था। बाल्यकाल में ही मनकोजी ने अपनी पुत्री को अनेक धर्मग्रन्थों के ज्ञान से समृद्ध किया और अनेक स्त्रोत और भजन याद करवा दिए। पाथर डीना गाँव की बच्ची अहिल्या बाई के जीवन में बड़ा बदलाव तब आया जब 1737 में इन्दौर नरेश मल्हार राव होल्कर ने पूना से इन्दौर लौटते समय रास्ते में पाथर डीना के पास पड़ाव डाला। शाम को भगवान त्रयंबकेश्वर के दर्शन करने पहुँचे। वहाँ उन्हें शिव आराधना के स्त्रोत की शास्त्रोक्त उच्चारण सहित मधुर ध्वनि सुनाई दी। मधुर गायन से मुग्ध मल्हार राव ने आरती के बाद कन्या से नाम पूछा वह अहिल्या बाई थी।

मल्हार राव ने मंदिर के पुजारी से अहिल्या बाई के घर परिवार की जानकारी ली और उसके घर पहुँचे। अहिल्या बाई के पिता मनकोजी से अपने पुत्र खाण्डेराव के लिए अहिल्या बाई का हाथ मांगा। मनकोजी स्तब्ध थे। होना ही था कहाँ एक साधारण पटेल की बेटी अहिल्या और कहाँ इन्दौर नरेश का बेटा राजकुमार खाण्डेराव। भगवान त्र्यंबकेश्वर की कृपा पाकर वे धन्य हो गये। जल्द ही विवाह संपन्न हुआ, अहिल्या बाई मल्हारराव की पुत्रवधू बन इन्दौर के राजमहल आ गई। अहिल्या बाई की विनयशीलता, सेवा भाव, शान्त मृदु स्वभाव ने उन्हें सबका विशेष बना दिया।

मल्हार राव अहिल्या बाई की विलक्षण प्रतिभा को समझते थे इसीलिए उन्होंने अपनी पुत्रवधू को हाथी, घोड़े की सवारी तथा शस्त्र संचालन का प्रशिक्षण दिया और राजकाज के कार्यों में सलाह मशवरा भी करने लगे। पति खाण्डेराव भी सर्वगुण संपन्न पत्नी पाकर संतुष्ट थे। विवाह के दसवें वर्ष में खाण्डेराव के यहाँ पुत्र मालेराव और तेरवें वर्ष में पुत्री मुक्ताबाई का जन्म हुआ।

होल्कर कुमार खाण्डेराव वीर और साहसी थे, उन्होंने युद्ध कार्य का संचालन आरंभ कर दिया था जब युद्ध अभियानों को विजित कर खाण्डेराव वापस आते तो, अहिल्या बाई अति अभिमान के साथ पति की आरती उतारती। नियती चक्र में दोनों के सुखी दांपत्य जीवन को कुछ और ही स्वीकार्य था। सन् 1754 में जब राजपूत रजवाड़ों ने विद्रोह किया तो खाण्डेराव दमन अभियान पर चल दिये। युद्ध में खाण्डेराव वीरगति को प्राप्त हुए।

अहिल्या बाई पति के साथ सती होना चाहती थीं परन्तु मल्हार राव होल्कर को अपनी पुत्रवधु अहिल्या बाई की बुद्धिमता और धर्मनिष्ठा पर पूर्ण विश्वास था इसलिए उन्हें सती होने से रोक दिया गया। 20 मई 1766 को मल्हार राव होल्कर चल बसे। 23 जुलाई 1766 को अहिल्या बाई के पुत्र मालेराव गद्दी पर बैठे लेकिन वे भी लंबे समय तक जीवित नहीं रहे। 13 मार्च 1767 को मालेराव की मृत्यु होने के बाद अहिल्या बाई होल्कर राज्य की बागडोर संभालने आगे आयीं। हालांकि एक महिला का राज्य संचालन करना अपने आप में एक बड़ी चुनौती थी लेकिन इसमें अहिल्या बाई पूर्ण रूपेण सफल रहीं। अहिल्या बाई के पुत्र मालेराव की मृत्यु हो जाने के बाद मल्हार राव के दीवान गंगाधर ने राधौबा दादा को अपनी ओर मिलाकर एक षडयंत्र रचा जिसमें उसने राधौबा को लालच दिया कि आपके प्रयत्न से अहिल्या बाई मेरे किसी पुत्र को गोद ले लेंगी तो मैं आपको एक बड़ी रकम नजर करूँगा। रुपयों के लालच में राधौबा ने अहिल्या बाई पर गोद लेने के लिए दबाव डाला परन्तु अहिल्या बाई ने गोद लेना कबूल नहीं किया। फलस्वरूप राधौबा ने इन्दौर पर चढ़ाई करने की योजना बनायी।

अहिल्या बाई ने राधौबा को कहलवाया कि तुमको एक स्त्री के साथ युद्ध नहीं करना चाहिए, यदि इस युद्ध में तुहारी पराजय हुई तो सच मानो तुम संसार में मुँह ऊँचा करने के लायक भी नहीं रहोगे। राधौबा की सेना भी इस कार्य से प्रसन्न न थी। युद्ध के लिये सिंधिया और भौंसले की सहमति भी नहीं थी। युद्ध प्रारंभ होने से पूर्व ही माधवराव पेशवा का पुत्र राधौबा के पास पहुँचा और कहा कि वे अहिल्या बाई से युद्ध न करें। इस तरह यह युद्ध टल गया। इसके बाद अहिल्या बाई होल्कर राज्य की उत्तराधिकारी बनीं और महेश्वर को नई राजधानी बनाया। तुकोजी राव होल्कर सेनापति बनाए गए।

सन् 1767 से 1795 तक के अपने शासनकाल में अहिल्या बाई ने सारे भारत में दानधर्म की गंगा प्रवाहित कर दी। होल्कर राज्य तथा देश के अन्य भागों में अहिल्या बाई ने अनेक मंदिर, घाट, कुएँ, बावड़ियाँ, धर्मशालाएँ, तालाब आदि का निर्माण करवाया। महारनी अहिल्या बाई प्रजा की खुशहाली के लिए समर्पित रहीं। उनके तीस वर्षों का शासनकाल होल्कर राज्य के उत्कर्ष का प्रमाण है। ▪

वीर योद्धा छत्रसाल

बुंदेलखंड का स्वातंत्र्य भी छीना गया था। वहाँ का प्रमुख राजा चंपतराय औरंगजेब के साथ लड़ते-लड़ते मारा गया था। चंपतराय की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी खड्ग से अपना सिर कटवा कर मर गयी। चंपतराय का पुत्र छत्रसाल एक तेजस्वी राजकुमार था, बुंदेलखंड की स्वाधीनता का सपना उसकी पलकों में फुदक रहा था। तथापि उसे किस प्रकार पूरा करना है, यह उस कच्ची उम्र वाले छत्रसाल को पता नहीं था। आसपास का माहौल भी उसके विरोध में ही था। शेष सब हिंदू राजा परकीयों की गुलामी करने की होड़ में ही व्यस्त थे। यह सब देखकर छत्रसाल की आत्मा विद्रोह पर उतारू हो जाती थी। परंतु मार्ग पता न होने से वह छटपटा रहा था। उसी मनःस्थिति में वह राजा जयसिंह के आश्रय में आकर उसकी सेना में भर्ती हुआ था। उसने वहाँ अतुल पराक्रम दिखाया, लेकिन उसकी ओर किसी ने आँख उठाकर भी नहीं देखा। तभी उसे परकियों की चाकरी क्या चीज होती है, इसका मजा चखने को मिला। छुटपन से ही छत्रसाल के कानों में शिवाजी का नाम तथा कारनामों की बातें आती थी। उनका साहस, स्वातंत्र्य समरों की स्फूर्ति गाथा सुन कर वह रोमांचित हो उठा था। इसी कारण, चाकरी करनी ही हो तो स्वधर्म स्वराज्य के संरक्षक उस शिवाजी के चरणों का दास बनना पसंद करूंगा, विधर्मी, अत्याचारी औरंगजेब का गुलाम कतई नहीं बनूँगा ऐसा उस नवयुवक ने अपने मन में ठान लिया था।

औरंगजेब ने दिलेर खान तथा बहादुर खान को फिर एक बार शिवाजी पर हमला करने भेज दिया। तब छत्रसाल भी उनके साथ था। दक्खन में आने के बाद, एक दिन उसने दिलेर खान के पास जाकर शिकार खेलने जाने की इजाजत माँगी। अनुमति मिलते ही, फौज की छावनी से अपनी पत्नी तथा साथियों के साथ निकल पड़ा। गिरि कंदराओं के अपरिचित राहों पर दिनरात दौड़ते-हाँफते उसने भीमा, कृष्णा आदि नदियों को पार किया। अंत में, स्वराज्य की सीमा में महाराज के सेना शिविरों में पहुँच गया। बुदेलखंड का राजकुँवर छत्रसाल अपने परिवार के साथ अपनी ओर आ रहा है, यह समाचार गुप्तचरों द्वारा शिवाजी महाराज तक पहले ही पहुँच चुका था। महाराज ने उनके स्वागत की उत्कृष्ट व्यवस्था की थी। फिर भी उन्हें अचंभा, यह नवतरूण इस तरह क्यों दौड़कर आ रहा हैं।

अपने डेरे में छत्रसाल प्रवेश कर ही रहा था कि महाराज ने खड़े होकर प्रेम भरे स्वर में, आइए, वीर योद्धा छत्रसालजी ऐसा कहकर स्वागत किया। स्वतंत्र महाराष्ट्र ही मानो खड़ा होकर स्वाधीनता के उत्सुक बुंदेल का स्वागत कर रहा था। इतना मनोभावन, अपूर्व दृश्य था वह। राजपुरूष शिवाजी को देखने वह कितनी लालसा, कितनी परेशानियों परिश्रम, कितनी पहाड़ों, नदियों को पार कर दौड़-धूप करके आया था। आखिर अपनी प्राणों की आस सफल हुई, यह देखकर छत्रसाल का हृदय पुलकित हो उठा। महाराज ने उस वीर किशोर को परम वात्सल्य से अपने पास बुलाकर बैठा लिया। 'बताइए, अब सब कुछ, ऐसा बड़ी आत्मीयता से पूछा। छत्रसाल ने अपने जीवन की पूरी रामकहानी बतायी। अंत में, महाराज से आश्रय की याचना की। स्वराज्य के एक सेवक के नाते अपना स्वीकार हो, इस व्यथा के साथ उसने प्रार्थना की।

छत्रसाल के एक-एक शब्दों में स्फुटित हो रही उसके अंतःकरण की वेदना, तिलमिलाहट, आकांक्षाएँ देखकर महाराज का हृदय भी उमड़ आया। उन्होंने अपनी भावपूर्ण ओजस्वी वाणी में कहा, छत्रसाल, आप क्षात्रकुल के मुकुटमणि हैं। आप बुंदेलखंड वापस चले जाइए। उसे मुक्त करिए। तुर्क हाथी के समान होंगे, लेकिन आप सिंह हो। आप भी अपनी सेना खड़ी करिए, लड़िए, शत्रु को भगाइए। बुंदेल को स्वतंत्र बनाइए। चिन्ता मत करो, आप विजयी होंगे। हम दोनों के एक साथ रहकर लड़ने से बेहतर होगा कि अलग-अलग जगहों पर संघर्ष करें। रणनीति की दृष्टि से दो-दो मोर्चों पर औरंगजेब का दमछाक करना उचित तथा आसान होगा। मेरे पास सेवक बनकर रहने से आपके सब पराक्रम का श्रेय भी मुझे ही मिलेगा। वैसा न हो। आप एक स्वतंत्र राजा के नाते झलकते रहें, यही मेरी इच्छा हैं। तुम्हारी विजय-दुंदुभी शीघ्र ही हमारे कानों में आ जाये।

महाराज का एक-एक शब्द अग्निपुंज की भाँति छत्रसाल के रोमरोम में स्फूर्ति संचार करती गयी। उसने बुंदेल को स्वतंत्र करने का वीर संकल्प लिया। तत्पश्चात् महाराज से विदाई लेकर वह सीधा बुंदलेखंड को वापस गया। आखिर छत्रसाल ने महाराज के आदेशानुसार अतुल पराक्रम से बुंदेलखंड को स्वतंत्र किया। यमुना से नर्मदा तक, चंबल से टास तक फैला है उसके तेग का तेज,

महाराज का एक-एक शब्द अग्निपुंज की भाँति छत्रसाल के रोम-रोम में स्फूर्त-संचार करती गयी। उसने बुंदेल को स्वतंत्र करने का वीर-संकल्प लिया। तत्पश्चात् महाराज से विदाई लेकर वह सीधा बुंदलेखंड को वापस गया।

ऐसा भूषण कवि ने उसके बारे में अपने काव्य में वर्णन किया है। आगे छत्रसाल के वृद्ध होने पर, मोहमद बंगशाह ने बुंदेलखंड पर आक्रमण किया। तब छत्रसाल ने पहले बाजीराव पेशवा से सहायता की याचना की।

बाजीराव ने शिवाजी की परंपरा को ही आगे बढ़ाते हुए दौड़ते जाकर उसकी मदद की। खुद के व्यक्तिगत बड़प्पन की किंचित मात्र भी कल्पना रखने वाला कोई भी हो, छत्रसाल जैसा महापराक्रमी हिंदू राजा को अपने पास सरदार की हैसियत से रखे बिना नहीं रह पाता। तथापि, विशाल राष्ट्रीय दृष्टि होने के कारण ही शिवाजी महाराज ने छत्रसाल को वैसी स्वतंत्र प्रेरणा देकर भेज दिया। तब शिवाजी के पास था केवल हथेली भर राज्य। परंतु, उनकी दृष्टि हिंदुस्थान की पूरी लंबाई-चौड़ाई पर दौड़ती थी। ▪

संस्कृति राष्ट्र की आत्मा है

पं. दीनदयाल उपाध्याय

आम लोगों ने यहां संघ कार्य के अनेक रूपों का विचार किया होगा। एक प्रश्न हमारे सामने यह भी आता है कि समय-समय पर हम कहते हैं कि हमारा कार्य सांस्कृतिक अधिष्ठान पर खड़ा है। इस दृष्टि से यह जिज्ञासा होना स्वाभाविक ही है कि वह संस्कृति क्या है? संघ की प्रतिज्ञा में भी हम ऐसा कहते हैं, 'हिंदू धर्म, हिंदू संस्कृति की रक्षा कर हिंदू समाज की सर्वांगीण उन्नति करने के लिए हम संघ के घटक बने हैं।' बिना संस्कृति संरक्षण के राष्ट्र की उन्नति नहीं हो सकती, यह भी हम स्वीकारते हैं।

आखिर संस्कृति है क्या? हम यह भी देखते हैं कि संस्कृति के नाम पर आज देश में बहुत से कार्य प्रारंभ हो गए हैं। हर कहीं हम Cultural progress का नाम सुनते हैं। हमारे कलाकार सांस्कृतिक शिष्टमंडलों के रूप में विदेश जाते हैं, अन्य देशों से हम संस्कृति का संबंध जोड़ते हैं आदि। कहने का तात्पर्य यह कि हम नाच-गान को ही संस्कृति मान बैठते हैं।

भारत के विचारकों के समक्ष यह प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या गाना, नाचना, नाटक खेलना मात्र ही संस्कृति है। यदि यही संस्कृति की परिभाषा है तो इसका प्रचार हमारे पूर्वज ऋषियों, विद्वानों, स्वामी विवेकानंद जैसे लोगों द्वारा न होकर फिल्म अभिनेता तथा अभिनेत्रियों द्वारा ही होगा।

संस्कृति शब्द को आज गलत अर्थ ही दिया गया है। यह अज्ञानवश हो सकता है और जानबूझकर भी। जानबूझकर इसलिए कि अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए वे संस्कृति शब्द का उपयोग उन लोगों में गलत धारणा पैदा करके अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं। जैसे डालडा को घी की संज्ञा देने से यह बात स्पष्ट है। घी शब्द के बारे में लोगों की धारणा अच्छी है। इसलिए डालडा के साथ साफ किया हुआ तेल-ऐसा न जोड़कर घी शब्द जोड़ दिया गया है। कुछ समय उपरांत लोग इस डालडा को ही वास्तविक घी समझकर इसका उपयोग करने में लज्जा महसूस नहीं करेंगे। ठीक यही बात संस्कृति के संबंध में है। संस्कृति के प्रति

आज सांस्कृतिक कार्यक्रमों के बारे में इसी कारण लोगों की कल्पना नाचने-गाने की ही हो गई है। एक व्यक्ति ने पूछा कि आप कहते हैं कि हमारा कार्य सांस्कृतिक है, परंतु हमें तो ऐसा दिखाई नहीं देता, क्योंकि वहां तो नाच-गाना होता नहीं।

फिर मैंने व्यंग्य कसते हुए कहा कि जिस प्रकार नाचने-गाने में वे स्वर-ताल का ध्यान रखते हैं, इसी प्रकार संघ के कार्यक्रमों में एक कहने पर बायां पैर और दो कहने पर दायां पैर निकलता है और एक ताल के अनुसार कार्य होता है, इसलिए यह भी सांस्कृतिक हुआ।

जीवन में सभी चीजों की ओर देखने की हमारी दृष्टि कुछ भिन्न है।

कुछ राष्ट्रों में ईमानदारी को व्यापार के लिए सर्वोत्तम नीति माना जाता है, परंतु हम इसे व्यापार की नीति के रूप में नहीं अपितु जीवन की नीति के रूप में अपनाना चाहते हैं।

जिनकी श्रद्धा है, उन्हें गलत रास्ते पर डालने के लिए इस नवीन संस्कृति का प्रचार किया जा रहा है। राष्ट्रीयता के संबंध में भी यही बात हुई । हमें Indian Nationalism की भ्रांत धारणा दी गई और कहा गया कि मुसलमान, ईसाई सभी यहां के राष्ट्रीय हैं। सिक्खों को यह गलत धारणा दी गई कि वे हिंदू नहीं हैं आदि।

आज सांस्कृतिक कार्यक्रमों के बारे में इसी कारण लोगों की कल्पना नाचने-गाने की ही हो गई है। एक व्यक्ति ने पूछा कि आप कहते हैं कि हमारा कार्य सांस्कृतिक है, परंतु हमें तो ऐसा दिखाई नहीं देता, क्योंकि वहां तो नाच-गाना होता नहीं। फिर मैंने व्यंग्य कसते हुए कहा कि जिस प्रकार नाचने-गाने में वे स्वर-ताल का ध्यान रखते हैं, इसी प्रकार संघ के कार्यक्रमों में एक कहने पर बायां पैर और दो कहने पर दायां पैर निकलता है और एक ताल के अनुसार कार्य होता है, इसलिए यह भी सांस्कृतिक हुआ।

संस्कृति के पीछे क्या भाव है, यह समझना कुछ कठिन है। संस्कृति शब्द का प्रयोग वेदों को छोड़कर अन्य प्राचीन वाङ्मय में नहीं हुआ। संस्कृति को धर्म के अंतर्गत ही मान लिया गया था, परंतु आज संस्कृति शब्द का व्यापक प्रचार होने के कारण लोग इस शब्द को सुनकर चौंकते नहीं। कुछ लोगों ने इसे Culture के अनुवाद के रूप में स्वीकार किया है। यह भी संभावना हो सकती है कि यह शब्द स्वतंत्र रूप से विकसित हुआ हो। संस्कृति से मिलता-जुलता संस्कार शब्द हमारा पूर्व परिचित शब्द है। हमारे यहां सोलह संस्कार होते हैं, संस्कारों से मनुष्य बनता है, बिना संस्कार के वह पशु समान है-ऐसा बराबर सुनने में आता है। साधारणतया हम कह सकते हैं कि जो बाह्य वातावरण है, उसका मनुष्य पर जो परिणाम होता है, उसे हम संस्कार (Impression) कह सकते हैं।

परंतु संस्कार अच्छे और बुरे दोनों हो सकते हैं। किसी को चोरी की आदत लग जाए तो हम कहेंगे, उस पर बुरे संस्कार पड़े हैं। परंतु जब हम संस्कार कहते हैं तो उससे हमारा अभिप्राय अच्छे संस्कार से ही होता है। बुरे संस्कारों के लिए हम कुसंस्कार शब्द का प्रयोग करेंगे। जैसे चरित्रवान कहने से हमारा आशय अच्छे चरित्र वाले व्यक्ति से होता है, जबकि बुरे चरित्र वाले व्यक्ति के लिए हम चरित्रहीन शब्द का प्रयोग करते हैं।

अतः संस्कृति का अर्थ हुआ, अच्छे संस्कारों का परिणाम (प्रभाव)। मलयालम भाषा में हिंदू संस्कृति के लिए हिंदू संस्कार शब्द का प्रयोग होता है। स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि किन संस्कारों को हम अच्छा कहेंगे और किनको बुरा। इसकी व्याख्या करना सरल नहीं। पर एक छोटी सी कसौटी तो है। वह यह कि समाज के ध्येय के लिए जो पोषक है, वह अच्छा और जो बाधक है, वह बुरा। जैसे यदि हमारा लक्ष्य दिल्ली जाना है, तो जो रेलगाड़ी या मोटरगाड़ी उधर ले जाने में सहायक हो, वह अच्छी और जो विपरीत दिशा में ले जानेवाली है, वह बुरी।

परंतु दूसरा प्रश्न उत्पन्न होता है कि ध्येय क्या है? इस संबंध में हम इतना जानते हैं कि हमारी जो एकात्मकता है, एकीकरण है, इसकी अनुभूति ही हमारा ध्येय है। जब सब लोग एकता का अनुभव करें, तभी समाज अथवा राष्ट्र बनता है। यदि हम राष्ट्र के नाते जीवित रहना चाहते हैं तो एकात्मकता की अनुभूति जिससे होगी, वही हमारा ध्येय होगा।

यदि पांव में कांटा चुभ जाए और पता न लगे कि कहां चुभा है तो चिंता होने लगती है। शरीर के कण-कण की जब तक ठीक अनुभूति रहती है, तब तक ठीक है, परंतु जब बेहोशी आदि में शरीर का ज्ञान नहीं रहता, क्रियाओं, चेष्टाओं का ज्ञान नहीं रहता तो वह स्थिति चिंताजनक होती है और सारा शरीर गया, ऐसा लगने लगता है। जैसे लकवे में, हाथ होते हुए भी हाथ की क्रिया रुक जाती है, हाथ की अनुभूति नहीं होती। जब तक शरीर में चेतना है, अंगों का संबंध बराबर बना रहता है। तभी तक हममें सामर्थ्य है, जीवन है। इसी प्रकार राष्ट्र रूपी शरीर में चेतना बनाए रखना आवश्यक है। अतः जिन कारणों से राष्ट्र में चेतना का निर्माण होता है, वे अच्छे और दूसरे बुरे।

प्रत्येक राष्ट्र में राष्ट्रीयता की भावना जिससे बनी रहे, वही संस्कृति का आधार माना जाता है। संस्कृति राष्ट्र की आत्मा है। आत्मा निकल जाने के पश्चात जैसे सब अंग-प्रत्यंग निश्चेष्ट हो जाते हैं। उसी प्रकार की अवस्था संस्कृति का लोप हो जाने से राष्ट्र की होती है। जैसे यूनान और मिस्र का प्राचीन राज्य समाप्त हो गया। इसका यह अर्थ तो नहीं कि वहां की भूमि, नदियां, पर्वत, व्यक्ति आदि नष्ट हो गए। ये वस्तुएं तो ज्यों-की-त्यों बनी रहती हैं, परंतु व्यक्ति को एकसूत्र में बांधने की जो शक्ति संस्कृति में है, वह शक्ति समाप्त हो जाती है। लकड़ियों को सूत के धागे से बांधा जा सकता है परंतु व्यक्ति-व्यक्ति को बांधने वाला सूत्र संस्कृति ही है। यह सूत्र वर्तमान प्राणियों के अतिरिक्त हमारा संबंध हमारे पूर्वजों अर्थात् राम, कृष्ण, शिवा, प्रताप, गोविंद सिंह आदि से तथा आगे जन्म लेने वालों से भी जोड़ देता है। इसी के बूते पर राष्ट्र टिक सकता है। अतः राष्ट्र रूप में जीवित रहने के लिए यही संस्कृति प्राप्तव्य है। अतः सिद्ध हुआ कि सारे समाज को आपस में जोड़ने वाला नाता संस्कृति है। जिन कार्यक्रमों से यह नाता जुड़ता है, वह संस्कार तथा जिन कार्यों से यह नाता टूटने लगता है, वे कुसंस्कार।

डाकुओं में जो स्वार्थ के कारण एकता है, क्या उसे भी संस्कृति मानें? उत्तर मिलेगा-'नहीं।' कुछ देशों की संस्कृति का आधार यद्यपि यह भी है। जैसे अरब में मुसलमानों का संगठन लूट-खसोट के आधार पर ही किया इसी प्रकार इंग्लैंड भी सामूहिक स्वार्थ के नाम पर ही खड़ा हुआ।

परंतु हमने स्वार्थ के आधार पर एकता खड़ी नहीं की। यही हमारी और दूसरों की संस्कृति में अंतर है। जैसे मां से प्रेम करने के भिन्न-भिन्न आधार हो सकते हैं। इसी प्रकार विवाह के भी भिन्न आधार हो सकते हैं। एक यह कि विवाह दो प्राणियों का एकात्मकता के नाते आगे बढ़ना इसलिए है कि घर की देखभाल के लिए पत्नी मिल जाएगी। इसी प्रकार परिवार में हमारे माता-पिता भी शामिल होंगे। परंतु यूरोप में परिवार में मां-बाप नहीं होते।\ जीवन में सभी चीजों की ओर देखने की हमारी दृष्टि कुछ भिन्न है। कुछ राष्ट्रों में ईमानदारी को व्यापार के लिए सर्वोत्तम नीति माना जाता है, परंतु हम इसे व्यापार की नीति के रूप में नहीं अपितु जीवन की नीति के रूप में अपनाना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की अलग-अलग रुचि होती है। यह रुचि भिन्नता मूलतः सब प्राणियों में विद्यमान है। इसी प्रकार राष्ट्रों में भी रुचि भिन्नता है, अपनी-अपनी विशेषता है। सबके आधार भिन्न-भिन्न रहते हैं। इसके कारण हमारे देश में भी कुछ चीजें हमें रंजित करती हैं और कुछ नहीं। हमारी विशेष प्रवृत्ति है, जिसके आधार पर हम संगठन करते हैं। वह प्रवृत्ति स्वार्थ की नहीं, निःस्वार्थ भाव की है। ▪

(राष्ट्र जीवन की दिशा से साभार)

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी, भाजपा अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम में तेलुगु संगमम का दीप जला कर शुभारंभ किया।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी, केन्द्रीय मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर जी ने अंबेडकर महाकुंभ में बाबा साहेब जी की प्रतिमा पर पुष्पमाला अर्पित कर नमन किया।

प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी व संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने ज्योतिबा फुले की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।

प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर जी की जयंती पर पुष्पांजलि अर्पित की।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी ने लाड़ली बहना योजना के संबंध में बहनों से संवाद किया।

प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने छत्रपति शिवाजी जी की पुण्यतिथि पर पुष्पांजलि अर्पित की।

संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने अनुसूचित जनजाति मोर्चा द्वारा आयोजित सोशल मीडिया वॉरियर्स की बैठक को सम्बोधित किया।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE